ISBN: 978-93-341-3008-9

प्रमोद दीक्षित ‘मलय’ जी के शैक्षिक एवं साहित्यिक विचारों का अध्ययन



- डॉ.राजीव अग्रवाल
- वीरेन्द्र कुमार
- अन्नपूर्णा सिंह

प्रमोद दीक्षित ‘मलय’ जी के शैक्षिक एवं साहित्यिक विचारों का अध्ययन

डॉ. राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा

(बाँदा)

वीरेन्द्र कुमार

M.Ed.

अन्नपूर्णा सिंह

M.Sc.(Botany), B.Ed.

प्रमोद दीक्षित 'मलय' जी के शैक्षिक एवं साहित्यिक विचारों का अध्ययन

डॉ.राजीव अग्रवाल

वीरेन्द्र कुमार

अन्नपूर्णा सिंह

E-book संस्करण : 2024

मूल्य : ₹ 49

ISBN: 978-93-341-3008-9

प्रकाशक

अन्नपूर्णा सिंह

ग्राम-अरवारा,पोस्ट-अगरहुणा

जिला-चित्रकूट(उत्तर प्रदेश)

पिन कोड – 210205

मो.- 9918006235

ई-मेल:2506golusingh1998@gmail.com

प्राक्कथन

साहित्य वही समृद्ध होता है जो समाज की समस्याओं और विसंगतियों को आवाज दे सके और एक साहित्यकार तभी सफल माना जायेगा जब उसकी रचनाओं में आमजन का स्वर समाहित हो। प्रमोद दीक्षित 'मलय' एक ऐसे ही साहित्यकार हैं जिन्होंने समाज के विभिन्न रंगों को साहित्य की अलग-अलग विधाओं में न केवल स्वयं बिखेरा है बल्कि शिक्षा जगत से जुड़े समाज की समझ रखने वाले तमाम शिक्षकों को लेखन की विभिन्न विधाओं में लिखने के लिए प्रेरित कर साहित्य को समृद्ध करने वाले सैकड़ों सृजन शिल्पी खड़े किये हैं।

आपकी कविताओं ने प्रकृति के विभिन्न घटकों फूल,रंग,धूप,गिरि,कानन,वसुधा,बंजर, होला,फागुन,राजनीति और अपराध आदि के गूढ़ रहस्यों को विभिन्न कालों में बांधकर पाठकों के समक्ष परोसा है। पेशे से शिक्षक होने के कारण आपके सम-सामयिक आलेखों में शिक्षा जगत की तमाम चुनौतियों को बड़ी बारीकी से उकेरा गया है और उनके लिए एक बेहतर समाधान भी प्रस्तुत किया गया है।

आधुनिक युग में रचना करने के उद्‌दश्यों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है, इस परिवर्तन का आधार विश्व में विकसित नवीन मूल्य हैं, जैसे- लोकतन्त्र, समता, भातृत्व और चराचर के प्रति मानवीय प्रेम जिसे एक शब्द में मानवता कह सकते हैं। उक्त मानवीय मूल्यों को लोक जीवन में स्थापित करने हेतु कवि ने कविता को एक साधन के रूप में चुना है और अपने काव्य में शैक्षिक मूल्यों के विविध रूपों का चित्रण किया है। जिससे लोक संवेदनाओं का महत्व और शैक्षिक मूल्यों की स्थापना होती है। प्रमोद दीक्षित 'मलय' जी के काव्य में सभी गुण मौजूद हैं, जो एक श्रेष्ठ शैक्षिक मूल्य में होने चाहिए। अत: कवि की काव्य रचनाओं में शैक्षिक मूल्यों को साहित्य से जोड़कर देखने का प्रयास ही इस पुस्तक का अभीष्ट है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है, " प्रमोद दीक्षित 'मलय' के शैक्षिक एवं साहित्यिक विचारों का अध्ययन"। इस पुस्तक को छ: अध्यायों में विभाजित किया गया है—

प्रथम अध्याय का शीर्षक अध्ययन परिचय है। इसके अन्तर्गत वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ, अध्ययन के उद्देश्य, शोध विधि, अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है जिसके अन्तर्गत शैक्षिक विचार धारा से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन की समीक्षा एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय मलय जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बन्धित है। जिसके अन्तर्गत उनके बाल्य जीवन, वंश परम्परा, अध्ययन यात्रा, ग्रहस्थ यात्रा, अध्यापन यात्रा, शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान एवं विभिन्न पहलुओं पर सविस्तार वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में मलय जी के साहित्य सर्जना का उल्लेख किया गया है। जिसमें उनके द्वारा लिखी गयी प्रकाशित पुस्तकें, प्रकाशित अभिलेख, प्रकाशित समीक्षाओं का वर्णन किया गया है।

पञ्चम अध्याय में मलय जी की प्रकाशित कविताओं का वर्णन किया गया है।

षष्ठ अध्याय में निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ, अध्ययन के सुझाव, शैक्षिक उपादेयता एवं भावी शोध हेतु सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध-प्रबन्ध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य उद्देश्यपरक होता है और यह उद्देश्य तभी सार्थक हो सकता है जब शोध कार्य के परिणामों का उचित क्रियान्वयन किया जाये। इस कार्य के लिये शोध कार्य को जनमानस के लिये सुलभ बनाने की नितान्त आवश्यकता होती है। एक पुस्तक के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो जाता है। शोध कार्य के पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा अन्य बुद्धिजीवियों को अनेको क्षेत्रों में नवीन अनुसन्धान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही प्रमोद दीक्षित 'मलय' जी का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान पर प्रकाश डालने में सहायक सिद्ध होगी ।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अत: अनुभवी विद्वतगण त्रुटियों को अवगत कराने का कष्ट करें जिससे संस्करण में त्रुटियों को दूर किया जा सके, हम अत्यन्त आभारी रहेंगें।

डॉ. राजीव अग्रवाल

वीरेन्द्र कुमार

अन्नपूर्णा सिंह

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

1.2 वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया की समस्याएँ

1.3 समस्या का प्रादुर्भाव

1.4 समस्या कथन

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

1.6 शोध विधि

1.7 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा वह प्रकाश है, जिसके द्वारा मनुष्य की समस्त जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सम्ब एवं सुसंस्कृत बनाया जाता है। भारत एक ऐसा देश है जो धर्म एवं अध्यात्म के क्षेत्र में विश्व का मार्गदर्शन करता रहा है। हमारी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति तथा आदर्शो एवं परम्पराओं का ही प्रभाव था कि सम्पूर्ण विश्व में हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रसार हुआ। यहाँ यह स्वभाविक है कि ऐसी उत्कृष्ट संस्कृति व्यवस्था स्थापित करना और आदशों एवं परंपराओं को निर्धारित करना कैसे संभव हो सका तो इस प्रश्न का उत्तर है, अद्वितीय शिक्षा स्थान है। उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था के द्वारा भावी पीढ़ी का उच्च आदर्शों आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं और सांस्कृतिक सम्पत्ति को इस प्रकार हस्तान्तरित करता है कि व्यक्ति के हृदय में सच्चा तथा त्याग की भावना प्रज्ज्वलित हो जाती है।

शिक्षा, समाज की एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तान्तरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरन्तरता को बनाए रखती है। चालक शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों व्यवस्थाओं समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। वह समाज से तभी जुड़ पाता है, जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व का विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है जब हम शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखते हैं, तो मोटे तौर पर यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है. व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोदेश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण प्रतिक्षण नए-नए अनुभव प्राप्त करता है व करवाता है। जिससे उसका दिन प्रतिदिन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सव, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि अनौपचारिक रूप से होता है। वहीं सीखना सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आते हैं। संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालय) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली एक सौदेश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा विद्यार्थी निश्चित पाठ्यक्रम को पड़कर सम्बन्धित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है। समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों व नीतिकारों ने शिक्षा के सम्बन्ध में अपने विचार दिए हैं। शिक्षा के अर्थ को समझने में ये विचार भी हमारी सहायता करते हैं। कुछ शिक्षा सम्बन्धी मुख्य विचार वहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

1.2 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ

1.2.1 शिक्षा का व्यवसायीकरण

माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण को लेकर भारत सरकार ने कई आयोगों का गठन ही नहीं किया। अपितु उनकी सलाह पर कार्य किया। परन्तु फिर भी स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हुआ। इसके सम्बन्ध में कोठारी आयोग 1964 ने कहा है बार-बार सलाह देने के पश्चात भी दुर्भाग्य की बात यह है। कि विद्यालय स्तर पर व्यवसायिक शिक्षा को एक घटिया किस्म की शिक्षा समझा जाता है। और अभिभावक तथा विद्यार्थियों का सबसे आखरी चुनाव होता है। शिक्षा का व्यवसायीकरण का सामान्य शब्दों में अर्थ होता है। किसी व्यवसायिक में प्रशिक्षण अर्थात विद्यार्थी को एक व्यवसाय सिखाना। ताकि वह अपना जीवन यापन सुगमता से कर सके। शिक्षा के साथ-साथ उन कोर्सों की भी व्यवस्था की जाए जो छात्रों को शिक्षा के साथ- साथ किसी व्यवसाय में भी कुशल व्यक्ति बनाए।

1.2.2 शिक्षा का राजनीतिकरण

अधिकांश लोगों को आश्चर्य होता है। कि स्कूलों में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाना क्यों आवश्यक है? क्या आप अपने आप को ऐसे परिदृश्य में पाते हैं? जहाँ राजनीति और शिक्षा के बीच सम्बन्धों के सम्बन्ध में एक पराजय होती है। बराक ओबामा को आदर्श उदाहरण के रूप में उपयोग करने में संकोच न करें। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति को आधुनिक युग के महानतम नेताओं में से एक माना जाता है, और उनकी अनुकरणीय नेतृत्व शैली सबसे शानदार घटनाओं में से एक है जिसे कई लोग सीखना चाहते हैं। इसलिए, उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे ईर्ष्या पूर्ण नेतृत्व की स्थिति कैसे मिली, इसलिए राजनीति और शिक्षा को एक साथ लाने वाले अधिक सत्रों को एकीकृत करने की आवश्यकता को खारिज करने के लिए सबसे अच्छा उदाहरण के रूप में पर्याप्त होना चाहिए। शिक्षा की प्राथमिक भूमिका एक छात्र के पढ़ने, समझ और समझ में सुधार के माध्यम से शिक्षित करना ही है। अशिक्षित नेताओं द्वारा शासित दुनिया की कल्पना निराधार है। यह प्रशंसनीय नहीं लगता, है ना? इसीलिए यह ध्यान रखना आवश्यक है। कि बुक स्मार्ट होना प्रभावी नेतृत्व के बारे में बहुत कुछ नहीं दर्शाता है। लेकिन फिर भी यह कई घटनाओं में से एक के रूप में मद नेता बनाने के लिए आवश्यक है। शिक्षा किसी की सोच को कही अधिक विस्तृत करती है। हालांकि, हमें स्कूलों में अधिक राजनीति शुरू करने में सावधानी बरतनी चाहिए, शिक्षा प्रणाली को वामपन्थी झुकाव के लिए जाना जाता है, विश्वविद्यालयों को और अधिक लेकिन नवीनतम आम चुनाव में वामपन्थी दलों के पक्ष में पूर्वाग्रह अधिक था। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए। कि हमारे भविष्य के नेताओं और राजनेताओं को राजनीति सिखाते समय कि हम कुछ हद तक तटस्थ रुख रखते हैं, जाहिर है कि हम पूर्वाग्रह और रुख को समाप्त नहीं कर सकते हैं। लेकिन हम लेबर पार्टी या लिब डेम्स के विचारों के बजाय एक सन्तुलित राजनीतिक शिक्षा को प्रोत्साहित कर सकते हैं। दूसरा जनमत संग्रह दल या मार्क्सवादी समाज हमारे बच्चों को मार्क्सवाद से लेकर फ़ासीवाद तक और साथ ही बीच में सब कुछ के राजनीतिक स्पेक्ट्रम की चरम सीमाओं से अवगत कराया जाना चाहिए। और यह सर्वोपरि होना चाहिए, कि बच्चों को सूचना अन्तराल और अपना मन बनाने में सक्षम होना चाहिए।

राजनीति विज्ञान और कानून उन सर्वोत्तम पाठ्यक्रमों के रूप में पर्याप्त हैं। जो चतुराई से राजनीति और शिक्षा के बीच के बन्धन को जोड़ते हैं। शिक्षण संस्थानों में या तो प्रभावी नेतृत्व प्रणाली के माध्यम से या पाठ्यक्रमों के माध्यम से राजनीति को शामिल करना, भविष्य के नेताओं को आकार देने में सहायता करता है। साथ ही जनता को यह भी शिक्षित करता है, कि प्रशासनिक प्रक्रियाएँ कैसे होती हैं? हर यात्रा एक कदम से शुरू होती है। ऐसे मामलों में, स्कूलों में राजनीतिक घटनाएँ होने से छात्रों को अपने भविष्य के कैरियर की तैयारी करने में मदद मिलती है। यह तय किया जाना चाहिए कि राजनीति न केवल राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर होती है। बल्कि कॉर्पोरेट जगत में भी होती है। ऐसे वातावरण के सम्पर्क में आने वाले छात्र नीति सलाहकार

बनने के साथ-साथ सरकार और कॉर्पोरेट एजेंसियों दोनों के लिए उत्साही शोधकर्ता बनने का एक बेहतर मौका देते हैं। इसलिए राजनीति और शिक्षा उनके सहजीवी सम्बन्धों के मूल्य को दर्शाती है क्योंकि वे दोनों एक-दूसरे को फिर से परिभाषित करते हैं।

राजनीति और शिक्षा दो ऐसे क्षेत्र हैं। जो सीखने पर केन्द्रित समान विषयों पर निर्भर करते हैं। इसका तथ्य यह है, कि हर शिक्षक कभी छात्र था। हर नेता कभी प्रशिक्षु नेता था।

1.2.3 शिक्षा व्यवस्था में क्षरण को पश्चिमी पद्धति जिम्मेदार

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभावक शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। जिसमें शिक्षकों ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर अपने-अपने विचार दिए। पुरातन गुरू-शिष्य परम्परा हमारी देशी शिक्षा पद्धति थी जिसमें छात्र अनुशासन में बन्धकर गुरू का सम्मान करते हुए शिक्षा पाते थे। परन्तु अब ऐसी स्थिति नहीं है। शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है। जिसका कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली क्षरण की ओर है। अभिभावक भी इस पर ध्यान नहीं देते। अभिभावक भी हम शिक्षकों के पास भेज तो देते हैं। लेकिन वे यह जानने का प्रयास नहीं करते कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभावक शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। प्राचीन गुरू-शिष्य परम्परा के टूटने से वर्तमान मैं शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने हमारी संस्कृति पर घात किया है। इस पर हम सभी को गहन चिन्तन के साथ राजनयिक को भी गम्भीरता से शिक्षा व्यवस्था में बदलाव करना होगा। वर्तमान में शिक्षक छात्र सम्बन्धों में कमी आई है। यह एक औपचारिकता के स्तर पर आ गया है। छात्रों में सम्मान देने की भावना में कमी आई है। इसमें छात्र ही दोषी नहीं बहुत हद तक शिक्षक भी जिम्मेदार है, देखने में आ रहा है, कि बहुत जगह शिक्षक इस सम्मान का गलत फायदा उठाते हैं। पूर्व में गुरु शिष्य सम्बन्ध निःस्वार्थ था वर्तमान में यह स्वार्थपरक हो गया है। पैसा कमाने की सारी हदें शिक्षक पार कर चुके हैं। जिस कारण यह क्षरण देखने को मिल रहा है। समय आ गया है, कि अभिभावक, गुरू, छात्र चिन्तन करें। दूसरे पाश्चात्य शिक्षा पद्धति भी इस क्षरण के लिए जिम्मेदार है। इसे पुर्न प्रतिष्ठापित करने के लिए एक प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करना पड़ेगा। प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में क्षरण के ढेर सारे कारण हैं। सरकारी शिक्षा व्यवस्था का क्षरण होने के साथ ही निजी कोचिंग क्लासेज व निजी स्कूल का उदय का कारण बना। सरकारी विद्यालयों में न तो मजबूत आधारभूत संरचना है। न ही योग्य शिक्षक जिस कारण शिक्षा का बाजारीकरण होते चला गया जो अब चरम पर है। इस समानान्तर शिक्षा प्रणाली में पैसा कमाना मुख्य ध्येय रह गया है।

1.2.4 सरकारी विद्यालयों की दयनीय स्थिति

शिक्षा किसी भी प्रदेश के विकास की रीढ़ होती है। प्राथमिक शिक्षा तो भवन की नीव की तरह है। कमजोर हो गई है तो मजबूत की बेमानी हो जाती है। दुर्भाग्य से तमाम सरकारी स्कूलों में ऐसा ही हो रहा है। स्कूलों में आधारभूत से लेकर अध्यापकों तक का अभाव है। एक अध्यापक पांच-पांच कक्षाएं संभाल रहे हैं। ऐसी स्थिति के कारण ही अभिभावक सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का दाखिला करवाने से परहेज करते हैं, और प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देते हैं। सरकारी स्कूलों की दयनीय स्थिति के कारण ही गली-गली में प्राइवेट स्कूल खुल गए हैं। तमाम प्राइवेट स्कूलों ने शिक्षा को व्यवसाय बना लिया है, और अभिभावकों का भरपूर शोषण कर रहे हैं। सरकारी स्कूल की बात करें तो यहाँ चार वर्षो से कोई अध्यापक है ही नहीं। ऐसी खबरें हैरान करती है, साथ ही सरकार व शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान भी लगाती है।

1.2.5 योग्य शिक्षकों का अभाव

भारतीय शिक्षा प्रणाली बुरी नहीं है। बल्कि समस्या योग्य शिक्षकों की कमी है। शिक्षण के जुनून या वित्तीय कारणों के बिना अच्छे शिक्षक शिक्षण के क्षेत्र में नहीं आते है। दुर्भाग्य हमारे देश में शिक्षक विशेषकर सरकारी स्कूल प्रणाली में काम करने वाले शिक्षकों को प्रशासन की समस्या के रूप में देखा जाता है। इसमें अध्यापकों के कौशल और प्रेरणा को विकसित करने के बजाय उन्हें कक्षा में लाने पर केन्द्रित रहता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा कराए गए एक अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण डिजाइनिंग में शिक्षकों के पीड़ा को कोई महत्व नहीं दिया जाता है। तथा साथ ही स्थानीय मुद्दों में कोई खास बदलाव नहीं किया जाता और न ही इन पर विचार करने को अहमियत दी जाती है।

1.3 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा मनुष्य के जीवन में जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। किसी भी देश के विकास एवं उसके सामाजिक उत्थान में उस देश के नागरिकों का सहयोग अति आवश्यक होता है। अतः शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। प्राचीन काल में शिक्षा धार्मिक, संस्कृति एवं नैतिकता से परिपूर्ण थी। जैसे-जैसे हम आधुनिकता और विज्ञान युग की ओर बढ़ते गये धर्म, संस्कृति और नैतिकता का लोप होता गया। विज्ञान युग आते-आते शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव आए शिक्षा का व्यवसायीकरण, राजनीतिकरण हुआ। परन्तु अब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कहीं जा सकती। आधुनिक समय में योग्य शिक्षको का अभाव है। जहाँ अयोग्य शिक्षकों का बाहुल्य है। जिसमें शिक्षकों के द्वारा किये गए कार्यों का प्रचार-प्रसार होना चाहिए। उनके द्वारा लिखी हुई कृतियों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए जिसमे शोधार्थी ने बाँदा जनपद के एक सुयोग्य अध्यापक प्रमोद दीक्षित 'मलय' जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान पर लघु शोध करने का निर्णय किया।

1.4 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध के लिए जिस समस्या का चुनाव किया गया है, उसका शीर्षक इस प्रकार है—

प्रमोद दीक्षित 'मलय' जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध अध्ययन में उद्देश्यों का निर्धारण उस अध्ययन को निश्चित दिशा प्रदान करता है, जिससे अध्ययन सरल व सुव्यवस्थित तथा सुगम हो जाता है। अतः इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

- प्रमोद दीक्षित 'मलय' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
- प्रमोद दीक्षित 'मलय' की साहित्य सर्जना का अध्ययन करना।
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिह्नित करना।
- प्रमोद दीक्षित मलय के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना

1.6 शोध विधि

किसी भी शोध कार्य में विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण के लिए अनुसन्धान अध्ययन विधि शोध क्रिया को सुचारु रूप से परिचालित करने का ढंग होती है। मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का अविष्कार किया है। जिसका प्रयोग समस्या प्रकृति के आधार पर किया जाता है।

प्रस्तुत लघु शोध का अध्ययन के उद्देश्य एवं प्रकृति के आधार पर तथा अध्ययन की समस्या को देखते हुए, अनुसन्धान विधि के रूप में वर्णनात्मक अध्ययन विधि एवं केस अध्ययन विधि का चयन किया गया है।

1.6.1 वर्णनात्मक अध्ययन

शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसन्धान का महत्व बहुत अधिक है। इस विधि का प्रयोग शिक्षा व मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापक रूप से होता है। जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार वर्णनात्मक अनुसन्धान 'क्या है' का वर्णन एवं विश्लेषण करता है। परिस्थितियाँ अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है। अभ्यास जो चालू है। विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जो पायी जा रही हैं। प्रक्रियायें जो चल रही हैं, अनुभव जो प्राप्त किये जा रहे हैं। अथवा नयी दिशायें जो विकसित हो रही हैं। उन्हीं से इसका सम्बन्ध है" वर्णनात्मक अनुसन्धान का प्रयोग निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने में होता है— वर्तमान स्थिति क्या है? इस विषय की वर्तमान स्थिति क्या है? वर्णनात्मक अनुसन्धान का मुख्य उद्देश्य वर्तमान दशाओं, क्रियाओं, अभिवृत्तियों तथा स्थिति के विषय का ज्ञान प्राप्त करना है। वर्णनात्मक अनुसन्धानकर्ता समस्या से सम्बन्धित केवल तथ्यों को एकत्र ही नहीं करता है, बल्कि वह समस्या से सम्बन्धित विभिन्न चरों में आपसी सम्बन्ध ढूँढने का प्रयास करता है साथ ही भविष्यवाणी भी करता है।

1.6.2 केस अध्ययन विधि

इसके अंतर्गत शोधकर्ता किसी सामाजिक इकाई एक व्यक्ति, परिवार, समूह, सामाजिक संस्था अथवा समुदाय का गहन अध्ययन करता है। वह उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली भूतकालीन घटनाओं अथवा अनुभूतियाँ, वर्तमान स्थिति एवं वातावरण के सम्बन्ध में आंकड़े एकत्र करता है। इन तत्वों के सम्बन्धों का विश्लेषण करने के पश्चात् वह उस इकाई की स्थिति का चित्रण करता है। केस स्टडी विधि में एक व्यक्ति, समूह, संस्था एवं समुदाय का गहन अध्ययन किया जाता है। पी० बी० यंग ने केस अध्ययन विधि इस प्रकार परिभाषित किया है। "केस अध्ययन विधि एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा सामाजिक इकाई के जीवनी का अन्वेषण तथा विश्लेषण किया जा सकता है। यह अध्ययन सामाजिक वास्तविकता को जानने के लिए प्रदत्तों के संकलन, संगठन, विश्लेषण तथा प्रस्तुतीकरण का एक ढंग है। केस स्टडी अध्ययन विधि को एकल अध्ययन विधि या एकल अध्ययन विधि अथवा व्यक्ति अध्ययन विधि के रूप में भी संबोधित किया जाता है।

1.7 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

मनुष्य के कर्म अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ कर्म तो वह अनिच्छापूर्वक बाध्यता के साथ करता है परंतु मनोयोग से किया गया कृत्य ही उसे सच्चा आनंद प्राप्त कराता है। इन समस्त क्रियाओं में अध्ययन सर्वश्रेष्ठ है। अध्ययन प्रिय व्यक्ति स्वयं को सदैव प्रसन्नचित्त करता है। अध्ययन में मनुष्य की अभिरुचि सदैव उसे उत्थान की ओर ले जाती है। अध्ययन की महिमा अनंत है। बुन्देलखण्ड के लोकप्रिय कवि ईशुरी की कृतित्व का अध्ययन समाज को नई दिशा देने वाला है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध ईसुरी की फागें की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक प्रासंगिकता पर आधारित है; निश्चय ही इसका अध्ययन शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं जन सामान्य के लिए अनुकरणीय एवं ऊर्जा के स्रोत के रूप में सहायक सिद्ध होगा।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

2.2 शैक्षिक कार्य से सम्बन्धित शोध कार्य

2.3 समीक्षात्मक अध्ययन

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

किसी भी विषय पर शोध करने से पूर्व उस विषय से सम्बन्धित साहित्यिक पुनरावलोकन अति आवश्यक है। साहित्यिक पुनरावलोकन कर लेने से शोध कार्य में काफी सरलता आ जाती है और शोधकर्ता को छोटे-छोटे बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। शोधार्थी साहित्य का पुनरावलोकन करते समय यह ध्यान रखें जिसमें कि उसका शोध विषय परिपूर्ण हो जाये। जिस विषय पर वर्तमान में शोध हुए है उनका अध्ययन कर लेना चाहिए क्योंकि वे वर्तमान अध्ययन पर काफी प्रकाश डालते है और कार्य को अग्रसर करने के लिए दिशा निर्देश दे सकते हैं।

साहित्य सर्वेक्षण से तात्पर्य इस समस्या से सम्बन्धित पुस्तकों, शोधपत्रों, पत्र-पत्रिकाओं, ज्ञान कोषों, प्रकाशित शोध-प्रबन्धों, अभिलेखों, प्रतिवेदनों आदि का अध्ययन कर लेने से है।

जॉन डब्लू वेस्ट के अनुसार, "व्यवहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारम्भ करते हैं, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संगृहीत एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर भोग सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।"प्रस्तुत शोध अध्ययन की पृष्ठभूमि तथा परिप्रेक्ष्य से सम्बन्धित साहित्य की खोज करना आवश्यक है।

वर्तमान शोध के परिप्रेक्ष्य में यह बात कर लेना आवश्यक है कि इस क्षेत्र में कितने शोध हो चुके हैं तथा समान प्रकार के शोध अध्ययनों में से किस प्रकार के उद्देश्य निश्चित किये गये हैं।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कौन सी शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इसके साथ ही मालूम करना आवश्यक है कि इस प्रकार के पूर्व में किये गये अध्ययनों के क्या परिणाम रहे? तथा उनके मुख्य निष्कर्ष क्या प्राप्त हुए? इस प्रकार से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के उपरांत वर्तमान शोध अध्ययन हेतु उद्देश्य शोध विधि का चयन करना सुविधाजनक हो जाता है क्योंकि जब शोधार्थी दूसरे शोधकर्ताओं के अनुसंधान कार्य का अध्ययन करता है तो उसे बहुत से अनुसंधान विधियों, बहुत से तथ्यों, सिद्धान्तों संरचनाओं एवं संदर्भ ग्रंथों का ज्ञान होता है, जो इसके अपने अनुसंधान में उपयोगी सिद्ध होते है। सर्वेक्षण द्वारा बहुत से अनुसंधान प्रतिवेदनों की अच्छाईयों एवं कमियों को जान लेने के बाद इस बात की संभावना बहुत कम हो जाती है कि वह स्वयं एक निम्न स्तरीय अनुसंधान करेगा अथवा अनुसंधान प्रक्रिया संबंधी उन गलतीयों को पुनरावृत्ति करेगा, जो उसके पूर्ववर्ती शोधकर्ता कर चुके हैं।

2.2 शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित कतिपय शोध

शोधार्थी द्वारा शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित पूर्ववती शोध कार्यो का अध्ययन किया गया जिसका विवरण निम्नलिखित है —

1. सरिता सिंह ने (2013) माध्यमिक स्तर पर अन्तर्मुखी बहिर्मुखी छात्र-छात्राओं की दुश्चिन्ता स्तर व नैतिक मूल्यों का अध्ययन बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की शिक्षा विषय में अध्ययन किया। इनके अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार हैं राज्य सरकार को ऐसे पाठ्यक्रमों को निर्माण करना चाहिए, जिनसे किशोरों के नैतिक मूल्यों को उच्च बनाया जा सके


माध्यमिक स्तर पर अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी छात्र–छात्राओं की दुश्चिन्ता स्तर व नैतिक मूल्यों का अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

की

शिक्षा विषय में

पी–एच०डी० उपाधि हेतु

शोध–प्रबन्ध

2013

शोध निर्देशिका | सह शोध निर्देशक | शोधार्थिनी

शोध केन्द्र

शिक्षक शिक्षा विभाग

अतर्रा, परास्नातक कॉलेज, अतर्रा (बाँदा) उ०प्र०

तथा साथ ही पाठयक्रम ऐसा भी होना चाहिए जो कि किशोरों को अत्यधिक दुश्चितित होने से रोके तथा उन्हें दूरदर्शी बनाये| अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षो से ज्ञात हुआ है कि अन्तर्मुखी एवं विज्ञान वर्ग के किशोर उच्च दुश्चिता-स्तर के होते है। अतः ऐसे किशोरों के लिए विद्यालयों में योग्य परामर्शदाताओं की नियुक्ति की जाए जिनसे वे उचित परामर्श प्राप्त कर सकें।

किशोरों के नैतिक मूल्यों व दुश्चिता स्तर के आधार पर विद्यालयों में शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन की व्यवस्था की जाए। किशोरों में नैतिक स्तर बढ़ाने के लिए उस पर विशिष्ट शोधकार्य कराना युक्तिसंग रहेगा। दुश्चिता एवं नैतिक मूल्यों पर शोध करना एवं उनका सतत मूल्यांकन आवश्यक है। किशोरों हेतु शिक्षा कार्यक्रम तैयार करते समय किशोरों की सहभागिता ली जानी चाहिए।

अभिभावकों को चाहिए कि वह किशोरों में निहित दुश्चिता स्तर एवं नैतिक मूल्यों का पता लगाकर किशोरो को अध्ययन सम्बन्धी दिशा निर्देश प्रदान करें। किशोरों के नैतिक विकास के लिए किशोर के स्वभाव में तथा दैनिक गतिविधियाँ में सुधारलाया जाना चाहिए।

किशोरों के दुश्चिंता - स्तर के अनुरूप अभिभावकों को व्यवसाय चयन हेतु किशोरों को मार्गदर्शन प्रदान किया जाना चाहिए। किशोरों के नैतिक स्तर का पता लगाकर उसे बढ़ावा दिया जाना चाहिए।परिवार में ऐसा वातावरण उत्पन्न किया जाना चाहिए, जिससे किशोरों की दुश्चिंता का ह्रास हो तथा नैतिक मूल्यों में बढ़ोत्तरी हो।



''वर्तमान प्राथमिक शिक्षा–प्रणाली में सहज मार्ग द्वारा प्रतिपादित मूल्य–आधारित आध्यात्मिक शिक्षा का योगदान–एक अध्ययन''

2011

2. राजीव कुमार पाण्डेय ने (2011) वर्तमान प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में सहज मार्ग द्वारा प्रतिपादित मूल्य-आधारित आध्यात्मिक शिक्षा का योगदान- एक समीक्षात्मक अध्ययन पर शोध कार्य किया ' इन्होने अपने शोध अध्ययन में पाया कि परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है परिवर्तन सम्पूर्ण जगत में सदैव होते ही रहते हैं। शिक्षा न्सी एक गतिशील एवं परिवर्तनशील प्रक्रिया है। जैसे-2 समाज के आदर्श रीति-रिवाज, परम्पराएं प्रथाए आदि बदलती रहती हैं, उसी के अनुसार शिक्षा भी अपने को परिवर्तित करती रहती है।

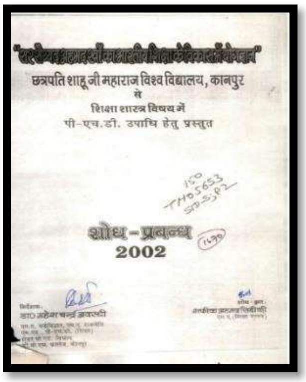
वर्तमान समय में शिक्षा पूर्णतः व्यावसायिक हो चुकी है और उसका एकमात्र उद्देश्य अर्थोपार्जन ही रह गया है। शिक्षा अर्थोपार्जन का माध्यम हो, यह तो ठीक है किन्तु शिक्षा का एकमात्र लक्ष्य अर्थोपार्जन कदापि उचित नहीं है, क्योंकि अन्यत्र कहा गया है-

'NOT GOLD BUT ONLY MEN CAN MAKE A NATION GREAT AND STRONG'

अर्थात धन नही अपितु व्यक्ति ही राष्ट्र को मजबूत और महान बना सकते हैं।

किसी भी राष्ट्र की समृद्धि एवं गुणवत्ता वहाँ के नागरिकों पर निर्भर करती है और नागरिक का निर्माण करना एकमात्र शिक्षा का ही कार्य है। शिक्षा ही राष्ट्र के लिए योग्य एवं उत्तम नागरिकों का निर्माण करती है। शिक्षा ही मनुष्यों में मानवीय गुणों एवं संवेदनाओं का विकास करके उन्हें मानव बनाती है। क्योंकि वास्तविक शिक्षा वही है जो मानव निर्माण का कार्य करती है ऐसे मानव जो स्वयं के परिवार के समाज के एवं राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकें।

3 . सफीक अहमद (2002) ने सर सैय्यद अहमद खाँ का भारतीय क्षिक्षा के विकाश में योगदान। इनके अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार है



छत्रपति शाहू जी महाराज विश्व विद्यालय, कानपुर
से
शिक्षा शास्त्र विषय में
पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध
2002

यह तो निर्विवाद सत्य है कि सर सैय्यद अहमद खाँ ही क्या, प्रत्येक चिन्तन शील लेखक, विचारक, समाज शास्त्री, धर्म प्रचारक, राजनीतिज्ञ एवं शिक्षाशास्त्री की अपनी मान्यताएँ हुआ करती है। ऐसी भूमि के अभाव में विचारक स्थिर नहीं खड़ा रह पाता ये मान्यताएँ विकास प्रवण अवश्य होती है, पर तैरती हुई नहीं। जो मान्यता अन्ततः प्रश्नोन्मुखी नहीं है, वह जीवन के अभाव में केवल मृत धारणा (Dogma) हो जाती है। इतनी पूर्व सावधानी के बाद सर सैय्यद जी की समायात्मक मान्याताओं को तीन भागो से देखें सामाजिक, अध्यात्मिक एवं शैक्षिक जैसा कि सर सैय्यद जी के जीवन दर्शन एवं व्यक्तित्व से यह ज्ञात होता है कि सैय्यद अहमद खाँ जी सामाजिक नियमों के अनुसार ही कर्म पथ पर बढ़ने को कहते हैं। अनियमित ढंग से बढ़ते जाना खतरे से पूर्ण है। अध्यात्मिक विचारधाराओं के अन्तर्गत उनके जीवन के पवित्रतम कार्य कलापों का निर्वाह होता है। जो भारतीय संस्कृति का मेरुदण्ड है। भारतीय संस्कृति नदी की शांत स्निग्ध धारा की भांति जन जीवन को प्रभावित करते हुए सदा गतिशीलता को प्राप्त करती हैं उसका स्वरूप सत्य और सुन्दर है। यह सवा अभ्युदय की ओर संकेत करती है। अध्यात्मिक सत्ता सम्बन्धी मान्यताएं है।

4. **मनोज कुमार सिंह (2010) प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में गिज्जुभाई एवं आचार्य राममूर्ति के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया इनके निष्कर्ष इस प्रकार हैं** गिज्जुभाई एवं आचार्य राममूर्ति के शिक्षा के क्षेत्र में अनेक कृत्यों को गांधीजी के कार्यों के समकक्ष माना जाता है। इसलिए इन्हें बच्चों के बापू की उपाधि से सम्बोधित किया जाता था क्योंकि देश के नागरिकों के राजनीतिक आजादी के लिए जो स्तुत्य प्रयास राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया उसी तरह का कार्य तथा प्रयास गिज्जुभाई एवं आचार्य राममूर्ति ने भारतीय नौनिहालों के लिए किया है। जबकि स्थितियां एवं परिस्थितियां दोनों अनुकूल न थी लेकिन दोनों ने अपने सपनों को साकार किया। एक ने सत्य और अहिंसा को अपने हथियार के रूप में प्रयोग किया तो दूसरे ने खुशी अथवा आनन्द एवं प्रेम को दोनों ने अपने देश के लिए अपने देश के नागरिकों के लिए अपना सारा जीवन दान दे दिया। शिक्षकों, नीति निर्माताओं तथा शिक्षण व्यवसाय से जुड़े लोगों को बच्चों के बापू गिज्जुभाई एवं समाजवादी चिन्तक आचार्य राममूर्ति से सीख लेनी चाहिए।



प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में गिज्जुभाई एवं आचार्य राममूर्ति के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर
के 'शिक्षा शास्त्र' विषय में पी-एच.डी.
उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध
2010

शोध निर्देशक:
डॉ. भारत सिंह

शोधकर्ता :
मनोज कुमार सिंह

शोध-केन्द्र
शिक्षा संकाय

गिज्जुभाई ने भारत में बाल शिक्षा के क्षेत्र में एक नये आंदोलन की शुरूआत की थी। सरकारी शलाओं पर तो इसका प्रभाव न के बराबर पड़ा क्योंकि वहाँ एक निर्धारित पाठ्यक्रम था, वहीं सरकारी वेतन भोगी शिक्षक थे एवं वहीं पुरानी घिसी- पिटी व्याख्यान विधियां थी। इसके पीछे कारण यह था कि गिज्जुभाई को समझने वाले कुछ अफसरान इसे चाहकर भी सरकार की अनुमति के बिना परिवर्तित नहीं कर सकते थे। दूसरी तरफ निजी शिक्षण संस्थान में जो गुणवत्ता के स्तर को बनायें रखने के लिए विशेष रूप से प्रयत्नशील थे।

5. अखिलेश सिंह (2002) ने "उ.प्र. के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कतिपय व्यक्तित्व चरों (बुद्धि तथा चिन्ता) का उनके कक्षा शिक्षण व्यवहार से सम्बन्ध" नामक शीर्षक पर अध्ययन किया| इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि आज के युग में विषय के सम्प्रत्यय को समझना और उसका विश्लेषण करना काफी कठिन माना जाता है वास्तव में शिक्षण के स्वरूप को जानना तब तक सम्भव प्रतीत नहीं होता है जब तक कि कक्षा-कक्ष की परिस्थिति में शिक्षण व्यवहार का मूल्यांकन न कर लिया जाय इस सन्दर्भ में शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार का अध्ययन करने के लिए प्रयुक्त उपकरण एवं

तकनीक की खोज की गयी है 1 समय में सभी शिक्षा-वैज्ञानिक, शिक्षण में सुधान की आवश्यकता की बात करते हैं इसलिए इस परिप्रेक्ष्य में आवश्यक हो गया है कि यह देखा जाय कि भारत वर्ष में कक्षा की परिस्थिति में शिक्षण कार्य कैसे सम्पादित किया जाता है। इससे कक्षा के अध्ययनों के अर्न्तगत होने वाली घटनाओं, किया प्रतिक्रिया आदि की जानकारी हो जाएगी, जिसके आधार पर शिक्षक के कक्षा शिक्षण के लिए सही दिशा-निर्देश प्रदान किया जा सके। सम्पूर्ण विश्व में आज से ही नहीं अपितु पुराणों से ही इस पृथ्वी पर मानव समाज का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि वही समाज का निर्माता एवं संरक्षक हैं।


"उ.प्र. के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कतिपय व्यक्तित्व चरों (बुद्धि तथा चिन्ता) का उनके कक्षा-शिक्षण-व्यवहार से सम्बन्ध"

वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर

की

शिक्षा शास्त्र

में

पी-एच.डी.

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

निर्देशक

डॉ. समर बहादुर सिंह

अनुसन्धानकर्ता

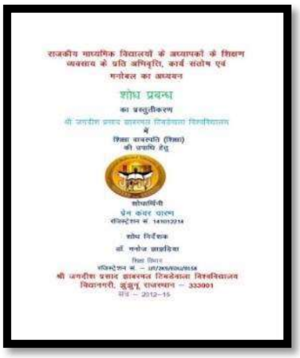
अखिलेश सिंह

तिलकधारी कालेज, जौनपुर (उ.प्र.)

2002

चाहे जो भी रहा हो लेकिन बालक की जन्मजात शक्तियों के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है आज के युग में शिक्षा क्षेत्र में बालक एक निष्क्रिय श्रोता मात्र नहीं समझा जाता क्योंकि बालक की शिक्षा अविधिक रूप से माँ की गोद से ही आरम्भ होती है तथा घर उसकी प्रारम्भिक पाठशाला कही जाती है। किन्तु वर्तमान सामाजिक ढांचे में परिवर्तन के साथ साथ शिक्षण कार्य समाज का अनिवार्य अंग हो गया हैं, साविधिक शिक्षा प्रदान करने के लिए जिस विशेष स्थान का चुनाव किया गया हैं उसे विद्यालय कहा गया हैं, शिक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व विशिष्ट व्यक्तियों को सौंप दिया गया है, जिन्हें शिक्षक तथा शिक्षण प्रक्रिया को शिक्षक के शिक्षण कौशल की संज्ञा दी गयी हैं। अतः शिक्षण की प्रक्रिया में शिक्षक का कर्तव्य होता है कि वह बालक को सक्रिय बनाकर उसकी शारीरिक, मानसिक शक्तियों योग्यताओं, रूचियाँ एवं रुझानों का अध्ययन करें और उनकी क्षमताओं के अनुरूप उसकी जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक विकास का सम्भव प्रयास करता हुआ, शिक्षा प्रदान करें।

6. प्रेम कंवर चारण (2012–15) ने राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति, कार्य सन्तोष एवं मनोबल का अध्ययन का अध्ययन किया इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षा का मानव जीवन में बहुत अधिक महत्व है। शिक्षा ही बालक का सर्वागीण विकास करती है। ऐसा व्यक्ति जिसने शिक्षा प्राप्त नहीं की, पशु तुल्य समझा जाता है। किसी भी देश या राष्ट्र के सर्वागीण विकास के लिए आवश्यक है कि वहां के नागरिक शिक्षित हो शिक्षित नागरिक ही राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं पश्चिमी देशों के तीव्र गति से विकास का कारण वहां के नागरिका का शिक्षित होना ही है। वर्तमान युग में ज्ञान एवं विज्ञान के क्षेत्र में दुत परिवर्तन हो रहे हैं शिक्षक का कार्य बालक को भविष्य के लिये तैयार करना है। बालक को भावी जीवन के लिए तैयार करने हेतु न केवल सैद्धान्तिक ज्ञान की ही शिक्षा दी जानी चाहिए वरन इस प्रकार की क्षमताओं व योग्यताओं को उत्पन्न करना चाहिए ताकि यह स्वयं ज्ञान का अन्वेषण करने योग्य बन सके इस तरह का कार्य एक योग्य शिक्षक ही कर सकता है और योग्य शिक्षक वही बन सकता है जो शिक्षण कार्य अपनी रूची से करता है। इसके लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि उन्हीं शिक्षकों को नियुक्त किया जाए जिनकी शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति हो।


राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति, कार्य संतोष एवं मनोबल का अध्ययन

शोध प्रबन्ध

का प्रस्तुतीकरण

में

शिक्षा वाचस्पति (शिक्षा)

की उपाधि हेतु

शोधार्थिनी

प्रेम कंवर चारण

शोध निर्देशक

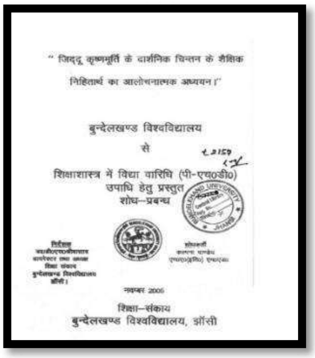
शिक्षा विभाग

विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान – 333001



7. अरुणा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन तथा प्रशिक्षण के दौरान अभिप्रेरणा का प्रभाव नामक शीर्षक पर अध्ययन किया इनके निष्कर्ष इस प्रकार हैं राष्ट्र के भावी पीढ़ियों के वांछित विकास हेतु अध्यापको को समुचित प्रशिक्षण अपरिहार्य हैं। विद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के अध्ययन स्तर का सोचा व शिक्षकों की तैयारी से है। शिक्षको को तैयार करने का काम शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों में होता है यदि प्रशिक्षण के समय शिक्षको की पूरी तैयार हो जाए तो निश्चित ही शिक्षा स्तरो चयन हो सकता है। शिक्षण एक कला है और यदि किसी भी कला में नवीनता या परिवर्तन को स्थान नहीं होता तो यह आकर्षणहीन हो जाती है लेकिन शिक्षण वह कला है जो दूसरों को प्रभावित कर सके। वर्तमान युग में ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में दुत परिवर्तन हो रहे है। इसने शिक्षक का कार्य और अधिक बढ़ गया है। क्योंकि शिक्षक ही आज के बालक को भविष्य के लिए तैयार करता है भावी जीवन की तैयारी के लिए शिक्षक बालक में न केवल सैद्धान्तिक ज्ञान की शिक्षा देनी चाहिए अपितु उसमें योग्यता व क्षमताओं को उत्पन्न करना चाहिए जिससे वह स्वतः ज्ञान का अन्वेषण करने योग्य बन सके। अत वर्तमान में चल रही गला काट प्रतिस्पर्धा में शिक्षक की भूमिका और अधिक बढ़ जाती है उसे नए विचारों का अभिनव परिवर्तनों को स्वीकारना पड़ेगा अतः शिक्षक को इन अन्वेषण के परिणामों से अवगत होते रहना चाहिए तथा उसी के (अनुसार अध्ययन अभिक्षमता में वृद्धि करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।

शिक्षा की गुणवता में सुधार में शिक्षाको का महत्त्वपूर्ण स्थान है राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि है। शिक्षक की योग्यता सूझबूझ कार्यक्षमता से ही भवन पाठ्यचर्या और उपकरणों का समुचित उपयोग कक्षाओं के अंदर हो सकता है। शिक्षक ही विद्यालय को प्राणवान बन सकता है। अध्यापक के प्रशिक्षण पर किए गए व्यय का प्रतिफल सचमुच काफी मूल्यवान है क्योंकि उसके परिणामस्वरूप लाखी छात्रों को शिक्षा में जितना सुधारात्मक व गुणात्मक परिवर्तन होगा शिक्षक की अभिक्षमता में भी उतनी ही वृद्धि होगी।



8. **कल्पना पाण्डेय (2005) ने जिद्दू कृष्णमूर्ति के दार्शनिक चिन्तन के शैक्षिक निहितार्थ का आलोचनात्मक अध्ययन** इन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि वर्तमान समय में शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य माने जा रहे जो बच्चों को व्यवसायिक शिक्षा और भौतिकता की दौड़ में उच्चता हासिल करने की शिक्षा देते है। कृष्णमूर्ति जी सम्पूर्ण मानवता के लिए सांस्कृतिक एक रूपता के लिए तथा समान नागरिक संहिता एवं जीवन विकास के लिये शिक्षा का मुख्य उद्देश्य "शास्वत जीवन" को समझने के लिए शिक्षा का उद्देश्य निश्चित किया है। शाश्वत। जीवन को समझना बड़ा ही कठिन कार्य है इसका विस्तार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यापकता लिये हुए है। आपने लिखा है :"अज्ञानी वह व्यक्ति नहीं है, जो विद्वान या ज्ञानवान नहीं है अज्ञानी वे व्यक्ति नहीं है, जो शाश्वत जीवन को नहीं जानते और इस अववोध के लिए जब विद्वान व्यक्ति पोषियों पर ज्ञान पर शक्ति पर निर्भर करता है तो वह मूर्ख है अववोध केवल आत्मज्ञान से आता है, जोकि अपनी मनोवैज्ञानिक प्रकिया का अवधान है। इस प्रकार से शिक्षा का उद्देश्य शाश्वत जीवन को समझना है क्योंकि अस्तित्व अपनी सम्पूर्णता में हम में से प्रत्येक में अंतनिहित है।


बौद्ध दर्शन में शिक्षा की स्थिति, विस्तार एवं वर्तमान में प्रासंगिकता

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय में पी-एच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

2008

शोध निर्देशक
डॉ0 डी0आर0 सिंह पाल

शोधकर्ता
राजेश सिंह

शोध-केन्द्र

पं0 जवाहर लाल नेहरू पी0जी0 कालेज, बाँदा (उ0प्र0)

9. राजेश सिंह ने (2008) बौद्ध दर्शन में शिक्षा की स्थिति, विस्तार एवं वर्तमान में प्रासंगिकता नामक शीर्षक का अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पायाकि बौद्ध दर्शन का प्रभाव तत्कालीन समाज पर विशेषकर परिलक्षित होता है तथा शिक्षा के क्षेत्र में बौद्ध दर्शन ने पर्याप्त प्रभाव डाला था तथा तत्कालीन शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। इस कारण इस दृष्टि से बौद्ध शिक्षा आदर्श मानी जा सकती है। आज वर्तमान शिक्षा में जिन सुधारों एवं परिवर्तन की चर्चाएं हो रही हैं, वह परिवर्तन तथा सुधार लाने में बौद्ध शिक्षा मार्ग दर्शन कर सकती है। बौद्ध शिक्षा में वे समस्त विशेषताएं विद्यमान थी, जिनकी आज आवश्यकता अनुभव की जा रही है। इन्हीं विशेषताओं को उद्घाटित करने के उद्देश्य से ही अनुसंधानकर्ता यह शोधग्रन्थ प्रस्तुत कर रहा है।

2.3 समीक्षात्मक अध्ययन

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता के द्वारा पूर्व में किए गए कतिपय शोधों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया जिसमें माध्यमिक स्तर पर अन्तर्मुखी बहिर्मुखी छात्र-छात्राओं की दुश्चिंता स्तर पर नैतिक मूल्यों का, वर्तमान प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में सहज मार्ग द्वारा प्रतिपादित मूल्य आधारित शिक्षा का योगदान, सर सैयद अहमद खान का भारतीय शिक्षा के विकास में योगदान, प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में गिज्जुभाई एवं आचार्य राममूर्ति के तुलनात्मक, उत्तर-प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कतिपय व्यक्तित्व चरों का, राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृद्धि का अध्ययन एवं शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता का, जिद्दू कृष्णमूर्ति के दार्शनिक चिन्तन के शैक्षिक निहितार्थ का आलोचनात्मक, बौद्ध दर्शन में शिक्षा की स्थिति की प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात शोधकर्ता को प्रस्तुत समस्या "प्रमोद दीक्षित 'मलय' के शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान का अध्ययन" से सम्बन्धित अध्ययन कहीं देखने को नहीं मिला । आचार्य प्रशान्त का शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान है। अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर लघु शोध कार्य करने का निश्चय किया गया।

तृतीय अध्याय

प्रमोद दीक्षित 'मलय' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 जीवन परिचय

3.1.1 बाल्य जीवन

3.1.2 वंश परम्परा

3.1.3 अध्ययन यात्रा

3.1.4 गृहस्थ जीवन

3.1.5 सेवायोजन यात्रा

3.1.6 पर्यटन यात्रा

3.1.7 पुरस्कार

3.1.8 शैक्षिक विचार

तृतीय अध्याय

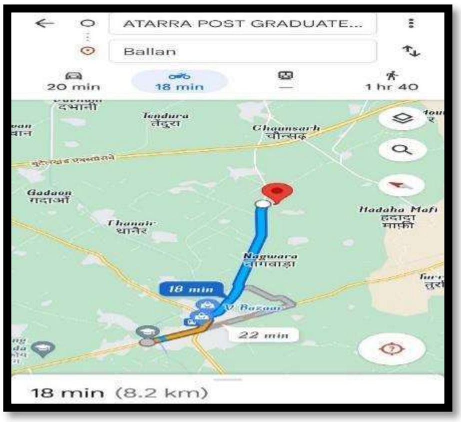
प्रमोद दीक्षित ‘मलय’: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 जीवन परिचय

3.1.1 बाल्य जीवन



प्रमोद दीक्षित 'मलय' जी का जन्म 2 मार्च 1973 को बाँदा जनपद के अतर्रा तहसील के बल्लान गाँव में हुआ। जो अतर्रा तहसील से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इनके पिता जी का नाम श्री बाबूलाल दीक्षित एवं माता जी का नाम श्रीमती रामबाई दीक्षित था। ‘मलय' जी बचपन से ही शान्त एवं गम्भीर स्वभाव के थे। इनका प्रारम्भिक जीवन चार पाँच वर्ष बल्लान गाँव में ही गुजरा। इसके बाद 1977- 78 में पिताजी के साथ अतर्रा आए। जहाँ ब्रम्ह विज्ञान शिशु सदन में अपनी प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की। मलय जी के निर्माण का श्रेय प्राथमिक विद्यालय में बाल सभाओं का आयोजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना तथा पिताजी के द्वारा लाए हुए पत्र-पत्रिकाएँ, उपन्यास, नाटकों को पढ़कर तथा माँ की आंखों का करुण जल ही मिलकर कविता के रूप में अनजाने द्रवीभूत हुआ।



इनका उपनाम ‘मलय’ रखने की प्रेरणा दक्षिण भारत के पर्वत से मिली। जो पश्चिमी घाट का वह भाग है, जो मैसूर राज्य के दक्षिण और ट्रावनकोर के पूर्व में है। मलय पर्वत की ओर से आने वाली हवाएं जिसमें चन्दन की सुगंध मिली होती है।



ग्राम बल्लान अर्वाचीन की झलक से कोसों दूर है। ऐसे ही ग्राम के वातावरण में अपने पिता श्री बाबूलाल दीक्षित (पूर्व प्राचार्य मन्नूलाल संस्कृत महाविद्यालय अतर्रा) जिन्हें उपन्यास,नाटक, कविताएँ, अखबार आदि पढ़ने का शौक था। उन्ही नाटक, उपन्यास, कविताएँ, अख़बारों को पढ़कर जहन में रखने के आदी हो गये थे। विद्यालय अथवा गैर विद्यालय कार्यक्रमों में सहभाग कर अपने सम्भाषण या वक्तव्य के बीच तमाम कवियों की कविताओं को प्रस्तुत करने का कमाल मलय जी ने अपने छात्र जीवन में ही हासिल कर लिया था इसी अभ्यास ने इनको स्वरचना की ओर प्रेरित किया।

3.1.2 वंश परम्परा:

पितामह —श्री राम औतार दीक्षित

पिता जी— श्री बाबूलाल दीक्षित

भाई-बहन— विनोद दीक्षित, प्रदीप दीक्षित, प्रतिभा दीक्षित

पत्नी— श्रीमती वन्दना दीक्षित

बच्चे— प्रसून, देवेश, संस्कृति

3.1.3 अध्ययन यात्रा

प्रमोद दीक्षित जी ने कक्षा पाँचवी तक की शिक्षा ब्रह्म विज्ञान शिशु सदन अतर्रा से प्राप्त की एवं इसके बाद कक्षा आठवीं तक की शिक्षा ब्रह्मा विज्ञान इण्टर कॉलेज से प्राप्त की।





कक्षा दसवीं एवं बारहवीं की शिक्षा हिन्दू इण्टर कॉलेज अतर्रा (बाँदा) से विज्ञान वर्ग में प्राप्त की। मलय जी इण्टरमीडिएट की परीक्षा (1989) पास करने के बाद जीवन में अनेक विसंगतियों का सामना करना पड़ा, जिसके कारण नियमित रूप से अग्रिम उच्च शिक्षा का कार्य बाधित हो गया मोहभंग सा रह गया तथा अध्यात्म की ओर झुकाव रहा और पढ़ाई बाधित हुई।



मलय जी तीन साल अन्तराल के बाद 1994 में बीटीसी की प्रवेश परीक्षा के आधार पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान शिवरामपुर चित्रकूट (उ० प्र०) पर चयन हुआ। 1997 में बीटीसी पूर्ण किया।

3.1.4 गृहस्थ जीवन

मलय जी का वैवाहिक सम्बन्ध शिक्षा काल में ही हो गया था। जब इन्होंने इण्टरमीडिएट पास किया उसी समय से विवाह संस्कार के लिए लोगों का आना जाना प्रारम्भ हो गया था। लेकिन मलय जी का आध्यात्मिकता की ओर झुकाव बढ़ने लगा और सन्यास लेने के लिए माँ से अनुमति लेने गए लेकिन माँ से अनुमति नहीं मिली तथा बहुत सारे दबाव के कारण 25 अप्रैल 1993 को श्री रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी की पुत्री वन्दना दीक्षित के साथ विवाह करना पड़ा। ससुराल ग्राम बल्लान से 35 किलोमीटर दूर उत्तर दिशा की ओर पियार नामक गाँव में स्थित है, जो बाँदा जनपद के नरैनी तहसील के अंतर्गत आता है। मेरी पत्नी जी का परिवारिक जीवन उत्तरदायित्व से भरा हुआ था। इनकी धर्मपत्नी मानसिक सहयोग प्रदान करती थी तथा गृह कार्य दक्ष और उनके साहित्यिक जीवन को गति देने वाली। इनके अध्ययन कार्य में वह कभी बाधक नहीं बनी।



3.1.5 सेवायोजन यात्रा



मलय जी ने बीटीसी प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त उन्होंने अपना ध्यान अध्यापन कार्य की ओर आकर्षित किया और 1998 में उनका प्राथमिक शिक्षक पद पर चयन हुआ। उनकी प्रथम नियुक्ति 27 मार्च 1998 को प्राथमिक विद्यालय बिल्हरका (करतल) क्षेत्र नरैनी (बाँदा) में हुई। विद्यालय में जब पहली बार गए तो वह विद्यालय बन्द मिला तो मलय जी दो घण्टे वहीं विद्यालय में बैठे रहे। फिर जब कोई कोई नहीं आया तब मलय जी अपना नियुक्ति पत्र कार्यालय गेट के



नीचे से अन्दर डाल दिया और वापस लौट आये। जब तीन दिन के बाद विद्यालय गया तो विद्यालय के स्टाफ द्वारा बजाय प्रेरणा और उत्साह बढ़ाने के उन्होंने मलय जी को निराश एवं हतोत्साहित किया।

इस विद्यालय में पाँच महीने कार्य करने के बाद 1998 में ही सरकारी आदेश के मुताबिक उनका स्थानान्तरण प्राथमिक विद्यालय राजाराम चौरिहा पुरवाँ अतर्रा क्षेत्र नरैनी (बाँदा) में हुआ। इस विद्यालय में तीन लोगों का स्टॉफ था जिसमें एक प्रधानाध्यापक और दो सहायक अध्यापक थे। यहां पर बच्चों के साथ अच्छे सम्बन्ध बने और पढ़ने पढ़ाने को गति दिया। इस विद्यालय में 1998 से लेकर 14 मार्च 2005 तक कार्य किया।

इसके बाद पुनः स्थानान्तरण पूर्व माध्यमिक विद्यालय पंचमपुर करतल क्षेत्र नरैनी (बाँदा) इस विद्यालय में 2005 से अगस्त 2019 तक कार्य किया। जनवरी 2009 से मई 2011 तक संकुल प्रभारी पौहार क्षेत्र नरैनी (बाँदा) के रूप में कार्य किया तथा मई 2011 से अगस्त 2019 तक ब्लॉक संसाधन केंद्र नरैनी बाँदा (बीआरसी) में सह समन्वयक हिंदी भाषा के पद पर काम

करने का अवसर मिला। इन दोनों पदों पर चयन जिला स्तरीय परीक्षा तथा साक्षात्कार के आधार पर हुआ था। इसी बीच तमाम विद्यालयों में जाने का अवसर मिला तथा शिक्षक शिक्षिकाओं, छात्र-छात्राओं एवं अभिभावकों से मिलने का मौका मिला। इसी दौरान 18 नवंबर 2012 को मैंने स्वप्रेरित रचना धर्मी शिक्षकों का मैत्री समूह शैक्षिक संवाद मंच की स्थापना की। जिसका उद्देश्य है विद्यालयों को आनन्द घर के रूप में बदलाव करना। बच्चों, अभिभावकों एवं शिक्षकों में पढ़ने के संस्कृति का विकास करना।



मलय जी का साहित्यिक जीवन निरन्तर चलने वाला नहीं रहा है। मलय जी अपनी मनमर्जी के लेखक रहा हैं। जब मन किया तब लिखना शुरू कर दिया और और जब मन नहीं हुआ तो सालों तक नहीं लिखा। कोई बाहरी रुकावट परेशानी नहीं रही। लेकिन सन 2012 के बाद से नियमित लेखन कार्य जारी है। और अब शैक्षिक संवाद मंच के माध्यम से उत्तर प्रदेश सहित अन्य राज्यों के शिक्षकों को लेखन प्रशिक्षण देकर के साहित्य रचना की ओर बढ़ने का काम हो रहा है और उसी का परिणाम है कि अभी तक शिक्षक शिक्षिकाओं के सात-आठ साधा संग्रह आ चुके हैं जिनका मैंने संपादन किया है। जिनके नाम इस प्रकार हैं–

पहला दिन, महकते गीत, हाशिए पर धूप, कोरोना काल में कविता, प्रकृति के आंगन में, राष्ट्र साधना के पथिक, स्मृतियों के धूप छांव प्रकाशित हो चुके हैं तथा ज्ञान के पथ के राही, विद्यालय में एक प्रकाशन प्रक्रिया में हैं। आगे दो संकलन यात्रा वृतांत और डायरी लेखन नवंबर में प्रकाशित होंगे। इसी बीच मेरे प्रकाशित शैक्षिक लेखों का संग्रह 'शिक्षा के पथ पर' के नाम से छप रहा है।

3.1.5.1 कार्यवाहक संकुल प्रभारी के रूप में

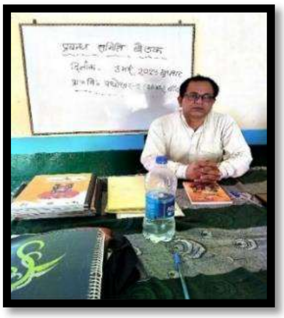
जनवरी 2009 से मई 2011 तक संकुल प्रभारी पौहार क्षेत्र नरैनी (बाँदा) के रूप में कार्य किया।

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

3.1.5.2 समन्वयक हिन्दी भाषा के पद पर

मई 2011 से अगस्त 2019 तक ब्लॉक संसाधन केंद्र नरैनी बाँदा (बीआरसी) में सह समन्वयक हिन्दी भाषा के पद पर काम करने का अवसर मिला। इन दोनों पदों पर चयन जिला स्तरीय परीक्षा तथा साक्षात्कार के आधार पर हुआ था। इसी बीच तमाम विद्यालयों में जाने का अवसर मिला तथा शिक्षक शिक्षिकाओं, छात्र-छात्राओं एवं अभिभावकों से मिलने का मौका मिला। इसी दौरान 18 नवम्बर 2012 को मैंने स्वप्रेरित रचना धर्मी शिक्षकों का मैत्री समूह शैक्षिक संवाद मंच की स्थापना की। जिसका उद्देश्य है विद्यालयों को आनन्द घर के रूप में बदलाव करना। बच्चों, अभिभावकों एवं शिक्षकों में पढ़ने के संस्कृति का विकास करना।

3.1.5.3 प्रधानाचार्य पद के रूप में

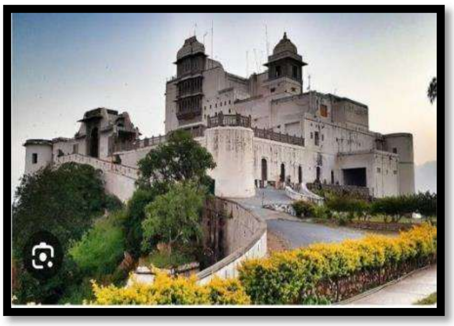


वर्तमान में प्राथमिक विद्यालय पचोखर–2 क्षेत्र–महुआ,जनपद–बाँदा में प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत हैं। इससे सिद्ध होता है, कि अगर व्यक्ति विभिन्न संघर्षों में संयम, अनवरत रूप से संलग्न रहते हुए कार्य करें एवं एवं उससे कभी पीछे ना हटे बल्कि उसकी वृत्ति लक्ष्य संधान पर केंद्रित रहे तो अंततोगत्वा व्यक्ति अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर लेता है।

3.1.6 पर्यटन यात्रा

मुझे बचपन से ही घूमने का शौक रहा है, जो मैं कई स्थानों पर भ्रमण करने गया जिनमें प्रमुख स्थान निम्नलिखित हैं

3.1.6.1 सज्जनगढ़ किला



उदयपुर शहर के बाहरी इलाके में प्रसिद्ध बांसडारा पर्वत पर स्थित सज्जनगढ़ किला इसे मूल रूप से सज्जनगढ़ महल के नाम से जाना जाता था। इसे सिसोदिया महाराणा सज्जन सिंह जी ने 19 वीं शताब्दी में बनवाया था। पहले यह वेधशाला के लिए जाना जाता था। उदयपुर शहर से 8 किलोमीटर दूर पश्चिम दिशा स्थित है। यह किला सुबह 10:00 बजे से लेकर शाम 6:00 बजे तक और सातों दिन खुला रहता है।

इसे बनवाने का प्रमुख कारण यह था कि महाराणा सज्जन सिंह का पैतृक घर चित्तौड़ का किला यहां से दिखाई दे तथा दूसरा कारण यहां से उदयपुर के मौसम का अंदाजा लगाया जा सके। इस दुर्ग को उदयपुर का मुकुटमणि भी कहते है।

यहां एक अच्छी तरह से संरक्षित अभयारण्य है, जिसके चारों ओर किशन पोल कंक्रीट की दीवार है। पहाड़ी पर घने जंगल हैं और पूर्व शासकों ने इस क्षेत्र को शाही शूटिंग संरक्षण के रूप में बनाए रखा। 1764 में जब उदयपुर पर सिंधियाओं ने हमला किया था, तो पहाड़ी का इस्तेमाल आयुध डंप के रूप में किया गया था; कुछ तोपें अभी भी बनी हुई हैं। यह महल अभयारण्य को देखता है, जो सरीसृप, बाघ, नीलगाय, सांभर हिरण, जंगली सूअर, हाइना, और सियार के लिए एक आरक्षित है। यहां पक्षी देखने के लिए भी लोकप्रिय है। अरावली पहाड़ियों की प्राकृतिक सुंदरता और आरक्षित वन के वन्य जीवन का आनंद लेने के लिए गोरिल्ला प्वाइंट से जियान सागर या बारी झील तक एक ट्रेक (एक साहसिक कार्य के रूप में) द्वारा भी रिजर्व तक पहुंचा जा सकता है।

3.1.6.2 लेक पैलेस

लेक पैलेस जिसे कि पहले जग निवास के नाम से जाना जाता था, 83 कमरों तथा सुइट्स का एक होटल है जिसका निर्माण सफ़ेद पत्थर से हुआ है। यह चार एकड़ के एक नैसर्गिक आधार पर पिछोला झील में उदयपुर राजस्थान में जग निवास द्वीप पर बना हुआ है। होटल अपने अतिथियों के लिए एक स्पीड बोट की सुविधा प्रदान करता है जो कि अतिथियों को शहर से होटल तक पहुंचाती है। अपनी विशिष्ट स्तिथि के कारण इस होटल को भारत तथा दुनिया के सबसे अधिक रोमांटिक होटल के रूप में चिन्हित किया गया है |



लेक पैलेस का निर्माण 1743 और 1746 के बीच उदयपुर, राजस्थान के महाराणा जगत सिंह II (मेवाड़ के शाही वंश के 62वें उत्तराधिकारी) के निर्देशन में ग्रीष्मकालीन महल के रूप में किया गया था। इसके संस्थापक के नाम पर शुरू में इसे जगनिवास या जन निवास कहा जाता था। महल का निर्माण पूर्व की ओर किया गया था, जिससे इसके निवासी भोर होते ही हिंदू सूर्य देवता सूर्य से प्रार्थना कर सकते थे। बाद के शासकों ने इस महल का उपयोग अपने गर्मियों के रिसॉर्ट के रूप में किया, इसके आंगनों में स्तंभों, स्तंभों वाली छतों, फव्वारों और बगीचों के साथ अपने शाही दरबार आयोजित किए।

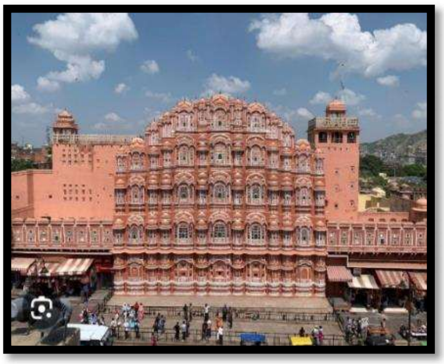
3.1.6.3 नाहरगढ़ किला



जयपुर का नाहरगढ़ किला जिसे 'टाइगर फोर्ट' भी कहा जाता है, जयसिंह द्वितीय द्वारा शहर को एक मजबूत रक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से बनाया गया था। सुंदरता को देखने के लिए सबसे अच्छी जगह है। अरावली पहाड़ियों के किनारे पर शानदार ढंग से खड़ा, नाहरगढ़ किला गुलाबी शहर की शानदार सुंदरता को देखने के लिए सबसे अच्छी जगह है।

3.1.6.4 हवा महल

हवा महल भारतीय राज्य राजस्थान की राजधानी जयपुर में एक राजसी महल है। इसे सन 1799 में राजस्थान जयपुर बड़ी चौपड़ पर महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने बनवाया था और इसे किसी 'राजमुकुट' की तरह वास्तुकार लाल चंद उस्ता द्वारा डिजाइन किया गया था। इसकी अद्वितीय पाँच- मंजिला इमारत जो ऊपर से तो केवल डेढ़ फुट चौड़ी है, बाहर से देखने पर मधुमक्खी के छत्ते के समान दिखाई देती है, जिसमें 953 बेहद खूबसूरत और आकर्षक छोटी-छोटी जालीदार खिड़कियाँ हैं, जिन्हें झरोखा कहते हैं। इन खिडकियों को जालीदार बनाने के पीछे मूल भावना यह थी कि बिना किसी की निगाह पड़े "पर्दा प्रथा" का सख्ती से पालन करतीं राजघराने की महिलायें इन खिडकियों से महल के नीचे सडकों के समारोह व गलियारों में होने वाली रोजमर्रा की जिंदगी की गतिविधियों का अवलोकन कर सकें। इसके अतिरिक्त, "वेंचुरी प्रभाव" के कारण इन जटिल संरचना वाले जालीदार झरोखों से सदा ठण्डी हवा, महल के भीतर आती रहती है, जिसके कारण तेज गर्मी में भी महल सदा वातानुकूलित सा ही रहता है।



3.1.6.5 ताजमहल

ताजमहल भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के आगरा शहर में स्थित एक विश्व धरोहर मक़बरा , और विश्व के सात अजूबों में से एक है। इसका निर्माण सत्रहवीं सदी में मुग़ल सम्राट शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज़ महल की याद में बनवाया था।



ताजमहल का दक्षिणी दृश्य

ताजमहल प्रत्येक वर्ष 20 से 40 लाख दर्शकों को आकर्षित करता है, जिसमें से 200,000 से अधिक विदेशी होते हैं। अधिकतर पर्यटक यहाँ अक्टूबर, नवंबर एवं फरवरी के महीनों में आते हैं। इस स्मारक के आसपास प्रदूषण फैलाते वाहन प्रतिबन्धित हैं। पर्यटक पार्किंग से या तो पैदल जा सकते हैं, या विद्युत चालित बस सेवा द्वारा भी जा सकते हैं। ताज महल के दक्षिण में स्थित एक छोटी बस्ती को ताजगंज कहते हैं। पहले इसे मुमताजगंज भी कहा जाता था।। यह पहले कारवां सराय एवं दैनिक आवश्यकताओं हेतु बसाया गया था। 26 प्रशंसित पर्यटन स्थलों की सूची में ताजमहल सदा ही सर्वोच्च स्थान लेता रहा है। यह सात आश्चर्यों की सूची में भी आता रहा है।

3.1.7 पुरस्कार

- ❖ शिक्षाविद् डॉ० गुलाब चौरसिया स्मृति सम्मान।
  (23 वाँ विश्व शिक्षक दिवस 5 अक्टूबर 2016)



- ❖ सहसमन्वय हिंदी भाषा में प्रशस्ति पत्र 2016



- ❖ राष्ट्रीय शैक्षिक संगोष्ठी सह कार्यशाला 2018

  (आयोजक-जिला प्रशासन एवं शिक्षा विभाग

  सूरजपुर छत्तीसगढ़)



❖ अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मेलन
(भाषा गौरव सम्मान)



3.1.8 शैक्षिक विचार

शिक्षा और भाषा के मुद्दों पर काम करने के कारण अक्सर विद्यालयों में जाना होता है। बच्चों के साथ बैठना और उनसे बातें करना भी मेरे काम में शामिल होता है। तो विद्यालयों में भ्रमण के दौरान स्पष्ट रूप से यह देखने में आया कि शिक्षण में नवाचारों के प्रयोग और बाल-केन्द्रित प्रयासों को गति देने के आग्रहों के बाद भी शिक्षकों के अध्यापन के तौर-तरीके न केवल परम्परागत शिक्षक-केन्द्रित, भय एवं दण्ड प्रधान हैं, बल्कि कक्षाओं का वातावरण बोझिल, अरुचिकर और नीरस बनाये रखने के लिए जिम्मेवार भी हैं। कुछ स्वप्रेरित शिक्षकों को छोड़कर अभी भी शिक्षकों के एक बड़े हिस्से द्वारा ऐसे कोई सकारात्मक प्रयास नहीं किए जा रहे हैं जिससे बच्चों को विद्यालय अपनी सपनीली जगह लगे। हम बच्चों को यह एहसास नहीं दिला पाये हैं कि विद्यालय वह रचनात्मक स्थान है जहाँ वे अपने सपनों की उड़ान भर सकते हैं, कल्पना को मूर्त रूप प्रदान कर सकते हैं। विद्यालय उस फलक की तरह नहीं उभर पाया जहाँ बच्चे मौलिक चिंतन को अभिव्यक्त कर सकें और विचारों का आदान-प्रदान कर सकें। कक्षा में प्रस्तुत विषय पर उनके अभिमत देने के लिए कोई जगह नहीं बन सकी है। आज भी बच्चों के दिलो-दिमाग में शिक्षक हावी हैं। विद्यालय उसे अपना-सा लगे और यह तभी सम्भव होगा जब शिक्षकों को हर बच्चा अपना-सा लगने लगे।

मलय जी के शैक्षिक विचार निम्नलिखित हैं—

- ❖ शिक्षण में किताबी सूचनाएं प्रेषित करने के बजाए बच्चों को ज्ञान निर्माण के अवसर देना।
- ❖ कक्षा और विद्यालय में बच्चों को स्वतंत्रता देना।
- ❖ बच्चों एवं शिक्षक साथियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध का निर्माण करना
- ❖ विद्यालय को बच्चों के ज्ञान निर्माण की जगह के रूप में विकसित करना।
- ❖ विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का रचनात्मक स्तर बनकर उभरे।
- ❖ कक्षाओं में डर एवं भय रहित सुरुचिपूर्ण शैक्षिक वातावरण निर्मित करना।
- ❖ तोता रटन्त प्रणाली से मुक्त कर बच्चों को उनके कल्पना और चिंतन शक्ति के अवसर को बढ़ावा देना।
- ❖ बच्चों को गल्तियां होने पर डांटने की बजाए प्यार से समझाना।
- ❖ शिक्षण परस्पर संवाद आधारित हो ना कि शिक्षक केंद्रित एक तरफा।
- ❖ परीक्षा प्रणाली लचीली और बच्चों की स्व–अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने वाली हो।

- ❖ बच्चों के घर, पड़ोस एवं परिवेश के वातावरण और विद्यालय के शैक्षिक वातावरण में सामंजस्य स्थापित करना।
- ❖ बच्चे की अपनी मातृभाषा एवं स्थानीय बोलियों को विद्यालय में महत्व देना।
- ❖ लिंग, नस्ल, रंगो एवं भाषा क्षेत्र आदि मुद्दों से मुक्त होकर एक मानव के रूप में बच्चे के निर्माण में सहायक बनना।
- ❖ बच्चे अनंत संभावनाओं एवं ऊर्जा से ओतप्रोत व्यक्तित्व हैं ऐसा मानना ना कि यह स्वीकार करना कि बच्चे खाली घड़ा है, कच्ची मिट्टी का लोंदा है,कोरी स्लेट है आदि।
- ❖ प्रत्येक बच्चे को उसके अंतर्निहित गुणों के आधार पर विकसित होने में सहयोग करना।
- ❖ विद्यालय और समुदाय के संबंध में आत्मीय हो।
- ❖ पाठ्यक्रम में स्थानीय भाषा बोली, संस्कृति, खानपान, पहनावा एवं कृषि आदि का समावेश हो।
- ❖ शैक्षिक भ्रमण बच्चों में परिवेश को निकट से देखने, अवलोकन करने,तर्क एवं अनुमान करने तथा स्वयं से संबंध स्थापित करने में मदद करता है।
- ❖ शिक्षक बच्चों को तार्किक, विवेकशील, संवेदना युक्त सहृदय वैज्ञानिक सोच समझ युक्त व्यक्ति के रूप में विकसित करने में सहयोगी बने।
- ❖ अभिभावक अपने सपनों को बच्चों पर थोपे नहीं, बल्कि उन्हें वह सब करने की स्वतंत्रता एवं अवसर उपलब्ध कराएं जो वह करना चाहते हैं।
- ❖ शिक्षा का उद्देश्य नौकरी प्राप्ति नहीं, बल्कि एक सूझ-बूझ भरा व्यक्तित्व का निर्माण करना है।
- ❖ बच्चों में पर्यावरणीय चेतना का विकास करना,अभिभावकों एवं शिक्षकों का कर्तव्य है कि सीखना एक सतत् प्रक्रिया है जिसे स्वयं करके ही संपन्न किया जा सकता है ना कि सुनकर या पढ़कर अर्थात अभिभावक एवं शिक्षकों को बच्चों के लिए ‘आओ करके सीखें' के अवसर उपलब्ध कराते हुए सहायक बन्ना।
- ❖ बच्चों में श्रम के प्रति निष्ठा का भाव उत्पन्न करना इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालय में परंपरागत कला एवं श्रम के कार्य यथा-मिट्टी के बर्तन बनाना, बांस से डलिया बनाना, जूट से दरी बनाना,बढ़ई और लोहार गिरी के काम तथा खेतों एवं कल कारखानों में काम करने वाले व्यक्तियों को विद्यालय बुलाकर बच्चों के साथ बातचीत करवाना।

चतुर्थ अध्याय

साहित्य सर्जना

4.1 प्रकाशित पुस्तकें

- 4.1.1 अनुभूति के स्वर
- 4.1.2 महकते गीत
- 4.1.3 कोरोना काल में कविता
- 4.1.4 प्रकृति के आँगन में
- 4.1.5 राष्ट्र साधना के पथिक
- 4.1.6 स्मृतियों की धूप छाँव

4.2 प्रकाशित आलेख

4.3 प्रकाशित समीक्षा

चतुर्थ अध्याय

साहित्य सर्जना

4.1 प्रकाशित पुस्तकें

साहित्य वही समृद्ध होता है जो समाज की समस्याओं और विसंगतियों को आवाज दे सके और एक साहित्यकार तभी सफल माना जाएगा जब उसकी रचनाओं में आमजन का स्वर समाहित हो। प्रमोद दीक्षित मलय एक ऐसे ही साहित्यकार हैं जिन्होंने समाज के विभिन्न रंगों को साहित्य की अलग- अलग विधाओं में न केवल स्वयं बिखेरा है बल्कि शिक्षा जगत से जुड़े समाज की समझ रखने वाले तमाम शिक्षकों को लेखन की विभिन्न विधाओं में लिखने के लिए प्रेरित कर साहित्य को समृद्ध करने वाले सैकड़ों सृजन शिल्पी खड़े किये हैं।

पेशे से शिक्षक होने के कारण आपके सम-सामयिक आलेखों में शिक्षा जगत की तमाम चुनौतियों को बड़ी बारीकी से उकेरा गया है और उनके लिए एक बेहतर समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। आप स्कूलों की सर्कस वाली और अध्यापकों की रिंग मास्टर वाली छवि से उबारकर विद्यालयों को आनन्दघर बनाने की वकालत करते हैं। आपने अपने लेख के माध्यम से शिक्षा में नवीन शोधों के साथ- साथ पुरातन परंपरा को अपनाने पर भी विशेष बल दिया है। तकनीकी के जमाने में पुस्तकों से दूर होते जा रहे समाज को पुस्तकों से जोड़ने पर बल देते हुए पुस्तक पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देने का कार्य किया है। आपका मानना है कि “पढ़ना केवल छपी सामग्री का वाचन नहीं है बल्कि शब्दों के अर्थ बोध को स्वयं में प्रकट करना है, समझ को बेहतर कर मानवता के उत्तुंग शिखर पर चढ़ना है।”

आप बालक की सहज अभिव्यक्ति के लिए मातृभाषा को सशक्त माध्यम मानते हैं। आपका मानना है, “मातृभाषा व्यक्ति के जीवन में माधुर्य एवं लालित्य का अमिय रस घोलती है । ” शिक्षा और जीवन में गीतों के महत्व को रेखांकित करते हुए– “ जीवन में गीतों को सहयात्री बना ले, सांसों का साथी बना लें तो हर राह आसान हो जाएगी, जीवन उपवन सा सौरभमय और सुवासित हो जाएगा।” आप के ऐतिहासिक लेखों ने लाला लाजपत राय, बिपिन चंद्र पाल, रानी दुर्गावती, अजीमुल्ला खां, मदन मोहन मालवीय जी, रानी दुर्गावती, मैडम भीकाजी कामा, अशफाक उल्ला खां समेत अर्ध शताधिक क्रांतिकारियों के कार्यों, कुर्बानियों और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता को विशद दृष्टि प्रदान किया है।

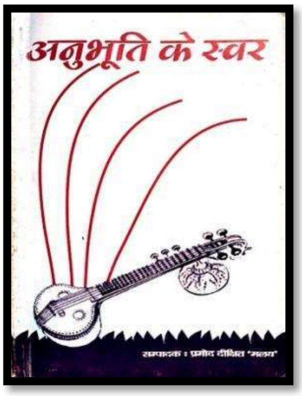
आपने शिक्षक के रूप में बच्चों का मार्गदर्शन करने के साथ ही तमाम शिक्षकों का भी मार्गदर्शन किया है और उन्हें साहित्य सर्जना की ओर उन्मुख किया है। इसी प्रयास के क्रम में आपके द्वारा 18 नवम्बर, 2012 को शैक्षिक संवाद मंच की स्थापना की गई और इस मंच के माध्यम से उत्तर प्रदेश के साहित्यिक अभिरुचि के रचनाधर्मी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को खोज कर उनके अंदर की छिपी प्रतिभा को पहचाना गया है और साहित्य की विभिन्न विधाओं में प्रशिक्षण प्रदान कर लेखन की ओर प्रवृत्त किया गया। विभिन्न शिक्षकों द्वारा लिखे और आपके द्वारा संपादित संग्रहों में पहला दिन, हाशिए पर धूप, कोरोना काल में कविता, प्रकृति के आँगन में, स्मृतियों की धूप-छांव, राष्ट्र साधना के पथिक आदि शिक्षकों की रचनाओं से सजे साझा संग्रह न केवल पाठकों के बीच सराहे गए हैं बल्कि हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में अमूल्य योगदान दिए हैं। आपके मार्गदर्शन में सौ से अधिक शिक्षक आज भी यात्रा वृत्तांत, डायरी लेखन, अनुभव आधारित लेखन और कविता लेखन कर रहे हैं और साहित्य को उत्तरोत्तर समृद्धि की ओर ले जा रहे हैं।

आपके दोहों ने प्रकृति के विभिन्न घटकों फूल, रंग, धूप, गिरि, कानन, वसुधा, बंजर, होला, फागुन, राजनीति और अपराध आदिक के गूढ़ रहस्यों को विभिन्न कलों में बांधकर पाठकों के समक्ष परोसा है। आपके प्रकृति के मानवीकरण का एक नमूना देखिए-

"सरिता तट तरुणी खड़ी, डगर बिछाए नैन ।
जोति जगी पिय मिलन की, नहीं परत अब चैन॥"
शब्दों की सुख छांव में, सदा मिले आराम।
साधक को देते रहें, सिद्ध मधुरता नाम॥

शब्द साधक सरस्वती पुत्र प्रमोद दीक्षित मलय की साहित्य साधना अनथक अविराम चलती रहे और साहित्य की विभिन्न विधाओं के कृतिरूप सुगन्धित सुमन खिलते रहेंगे। आपका साहित्य समाज को मलय जैसी शीतलता निरन्तर प्रदान करता रहेगा।

4.1.1 अनुभूति के स्वर



प्रस्तुत काव्य संकलन 'अनुभूति के स्वर में 32 रचनाकारों की रचनाधर्मिता को प्रकट होने का अवसर मिला है। 'तमसा' के तट पर करुण रस का सत्व ग्रहण कर प्रारम्भ हुई कविता की रस- यात्रा सम्राटों का प्रशस्ति गान करती कभी रणांगन में योद्धाओं के उत्साह और रक्त संचार का कारण बनी तो कहीं रथों की चरमराहट, अश्वों के टापों की गूंज, खड्ग और ढालों की खनखनाहट की सहेली भी । रणक्षेत्र से निकली नई नवेली कविता दरबारी स्वर लेकर नायक-नायिका के नख-शिख का वर्णन कर श्रृंगार रस में डूबी तो भक्ति का अवलम्बन ग्रहण कर मुक्ति की आकांक्षा करते हुए सोये समाज का जागरण कर रहस्य की परतें खोलती प्रकृति, पर्यावरण, वसुधैव कुटुम्बकम् की उदात्त भावना और दिव्य राष्ट्र प्रेम का शंखनाद कर अपनी बुनावट के छांदिक बन्धन को छोड़ मुक्त हुई कविता अपने शिल्प, कथ्य और भाव में सदा नवोदित ही होती है। यदि ऐसा न होता तो कभी अतीत में लिखी गई कविता वर्तमान में पढ़ने पर भी नवीन रसोद्रेक का सहज माध्यम नहीं बनती। कविता काल-निरपेक्ष होती है। वह चिर यौवना है। वह सर्वत्र व्याप्त है। वासन्ती आग और प्रियतमा के प्रिय राग में, कोयल की कूक और पपीहे की हूक में, झरने के जल तरंग संगीत में, वन पाँखियों की चहचहाहट और फूलों की मुस्कुराहट में, कानन-केशरी की चाल में, दिवाकर के स्वर्णिम भाल और मछुवारे के जाल में, कूड़े के ढेर और दुनियावी फेर में, बच्चों के रुदन में यत्र-तत्र सर्वत्र कविता का ही तो राज्य है।

स्थापित एवं नवोदित रचनाकारों की सशक्त लेखनी से निःसृत यह कविता कल्लोलिनी की सरस काव्यधारा सुधी पाठकों एवं समीक्षकों को अवगाहन हेतु आमंत्रित आकर्षित करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। कवि अन्तरमन में उठे भावों को साकार कर कविता का रूप देता है। उसकी एक दृष्टि होती है एक दिन होता है वह एक सतत् प्रवाह है और प्रवाह को परिवर्तित करना, बाँधना उचित या मर्यादित नहीं कहा जा सकता। इस दृष्टि से रचनाकारों के काव्य प्रवाह को छेड़ा नहीं गया, लेकिन जहाँ कहीं भी वह प्रवाह स्वयमेव बाधित हुआ है; ठहरा-सा लगा है या धारा मूल पथ को छोड़ भटक-सी गयी है, वहाँ उस प्रवाह के नैरन्तर्य को बनाये रखने के लिए उसे सुधारा, तराशा और निखारा गया। है ताकि काव्य- सुरसरि की यह धारा रसिकों के हृदय में उतर कर उन्हें काव्यानन्द की प्राप्ति करा सके। विश्वास है रचनाकार सहज मन से इसे । स्वीकार करेंगे।

गीत

टुकड़ों-टुकड़ों में धरती को अब मत बाँटो रे !

बाँट लिया घर, खेत, बाग, मत अम्बर बाँटो रे !!



गगन चूमते हैं लम्बे तरु बादल पास बुलाते।
गरज- गरज कर खूब बरसते भू की प्यास बुझाते।
वृक्ष हमारे जीवन दाता, इन्हें न काटो रे !
टुकडों टुकड़ों में धरती को..

ऊँचे उठे पहाड़ देश का स्वाभिमान गाते।
जड़ी बूटियाँ फूल फूल नग-तन महकाते।
संस्कृति के संवाहक, रक्षक, भूधर मत काटो रे
टुकड़ों टुकड़ों में धरती को..





लोगों का मन परिवर्तित, बदले हैं सभी विचार।
धन के परितः घूम रहे सब मानवीय व्यवहार।
उगी हुई विष-बेल हृदय में, उसको छाँटो रे !
टुकड़ों टुकड़ों में धरती को..

निहित स्वार्थ की दीमक हर उर में आज पली है।
और अर्थ की चकाचौंध में उलझी सुमन-कली है।
समरसता ममता से मन की, खाँई पाटो रे !
टुकड़ों-टुकड़ों में धरती को अब मत बाँटो रे !!



प्रस्तुत गीत में रचनाकार ने अपने समय के हालातों, सामाजिक एवं राजनीतिक स्थितियों पर व्यंग किया है। जहाँ स्वार्थ पूर्ति के लिए व्यक्ति मानवीय मूल्य एवं आदर्श खूँटी पर टांग रहे हो वहाँ कवि समाज को सचेत करते हुए कहता है कि सभी मानव एक हैं भले ही रंग, रूप, क्षेत्र,भाषा अलग-अलग हो। प्रस्तुत गीत सामाजिक समरसता,परिवारिक प्रेम एवं सद्भाव को बचाएँ रखने एवं बढ़ाते रहने की पैरवी करता है।

4.1.2 महकते गीत



समाज जीवन एवं लोक व्यवहार में गीत रचे-बसे हैं। गीत बेजान नहीं होते, उनमें समय का स्पन्दन होता है। किसी जीवन्त समाज के परिचायक हैं। गीत सबको पसन्द होते हैं। सुर, लय, ताल, आरोह-अवरोह और गीत बोलने की एक विशेष शैली हर व्यक्ति को अपनी ओर खींचती है। गीतों के माध्यम से किसी विषयवस्तु को सरलता से न केवल अभिव्यक्त किया जा सकता है बल्कि कहीं अधि क बोधगम्य भी बनाया जा सकता है। गीत वातावरण की नीरसता, एकरसता, ऊब और भारीपन को दूर कर सरसता, समरसता, उमंग और उत्साही परिवेश का निर्माण करते हैं। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को गीत रोचक और ऊर्जावान बना देते हैं। गीत केवल शब्दों का कोरा समुच्चय भर नहीं हैं, इनमें माटी की महक है, लोक की गमक है और सामाजिक प्रवाह का कलरव भी। ये समकालीन संस्कृति की धड़कन हैं, समाज और राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं। गीतों में अगर भौगोलिक सीमायें, नदी, तालाब, पर्वत, घाटी, जंगल, कोहरा, जाड़ा, गर्मी, वर्षा, पवन, फूल और पशु-पक्षी प्राणवान हो उठते हैं तो इतिहास भी अपने पात्रों, पुरा प्रस्तर औजारों, मुहरों-मुद्राओं, सन्धि पत्रों, युद्धों और हार-जीत के साथ प्रत्यक्ष होने को लालायित हो उठता है। इतना ही नहीं फाग होरी, चैती, बिरहा, सावनी, कजरी के साथ-साथ कहरई, कुम्हरई, धोबी, बैलही, दिवारी, उमाह आदि विभिन्न जाति समूहों के अपने-अपने गीत हैं, जिनमें उनकी जिजीविषा,पहचान, अस्मिता, गौरव बोध और सांस्कृतिक वैभव समाया है।

गीत

हम बच्चे हिन्दुस्तान के

चले बचाने धरती को हम बच्चे हिन्दुस्तान के |

बच्चे हम संसार के ।।





कल कल बहती नदियां हों, जल में पलता जीवनहो ।

और तटों पर कलरव करता, विहग वृन्द मनभावन हो ।

धरती पर पौधे रोपें हम अपनी मधु मुस्कान के ।

हम बच्चे हिन्दुस्तान के....

धरती की हरियाली को, हिम से पूरित प्याली को।

तनिक न घटने देंगे हम, ओजोन परत की जाली को ।।

सुमन बिखेरें सकल धरा पर, हम अपने श्रमदान से।

हम बच्चे हिन्दुस्तान के .....





धरती अपनी माता है, पोषण प्रेम भरा नाता है।

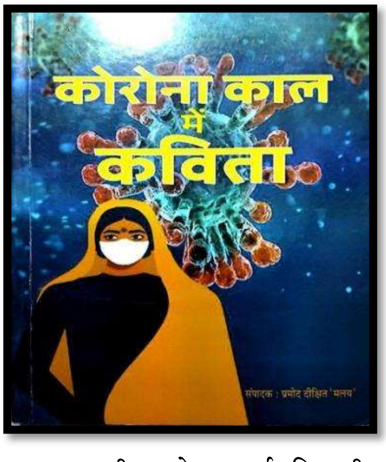
देती जल, फल, सब्जी, अन्न, धरती भाग्य विधाता है।

चलो सजायें धरती माँ को, हम अपने बलिदान से।

हम बच्चे हिन्दुस्तान के.....

कवि वर्तमान में जीते हुए भी सुन्दर भविष्य के सपने बुनता है देश और दुनिया का भविष्य बच्चे हैं, लेकिन हम बच्चों को कैसी दुनिया सौंपने जा रहे हैं जहाँ परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, आत्मीयता का अभाव और व्यक्तिवाद सर्वोपरि है कवि कविता के माध्यम से कहना चाह रहा है कि हम बच्चों के हाथों में निर्मल हरी-भरी प्रकृति,पक्षियों के कलरव से गुजाँए, मानगगन और सुवाशित धरा सौंपे यहां सामूहिकता परस्पर विश्वास एवं मानवीय मूल्य विकसित होते रहे।

4.1.3 कोरोना काल में कविता



होली के रंग अभी धुले न थे। अबीर-गुलाल की मोहक महक वातावरण में तैर रही थी। वासन्ती बयार मानव मन को उल्लासित कर रही थी। फाग के राग बस ओंठ पर बसे ही थे। फसलें पक कर खलिहान से होते हुए कृषकों के घरों में पहुँचने की प्रतीक्षा में थीं और लोकजीवन आनन्दोत्सव में नाच रहा था। वृक्षों की कलियाँ आँखें खोल मधुमय संसार को देखने की लालसा में थीं और सुवासित सुमन मलय समीर में अपनी सुगंध घोल हर द्वार-गली में बाँट रहे थे। विद्यालयों में बच्चे वार्षिक परीक्षाओं की तैयारी मैं जुटे-खोये थे कि तभी एक दिन अचानक एक फरमान आया कि सभी स्कूल, कालेज, दफ्तर और तमाम सार्वजनिक कार्यालय, बाजार, सिनेमा हॉल, मॉल आदि सीमित कालावधि के लिए बंद किये जाते हैं। उल्लेख था कि एक अज्ञात वायरस कलुष कोरोना कोविड-19 दुनिया को भयाक्रांत करने निकल पड़ा है और भारत ने एहतियातन सुरक्षा सावधानी बरतते हुए सार्वजनिक जीवन यापन के केन्द्रों पर एक प्रकार की तालाबंदी घोषित कर दी है। पूरा देश घरों में दुबक गया। परिवहन के साधन ट्रेन एवं बसों के चक्के ठहर गये। कल-कारखानों की मशीनों की घरघराहट थम गयी और स्कूलों का कलरव हो गया। आफिस का काम घरों से होने लगा। बच्चों को यथासम्भव ऑनलाईन पढ़ाई से जोड़ा गया। बाजार बंद हो गये, जीवन निर्वाह के लिए जरूरी भोजन सामग्री, दूध, फल, सब्जी, किराना आदि कुछ निश्चित सीमित समय के लिए खोले गये और होम डिलेवरी की गयी। मंदिर,

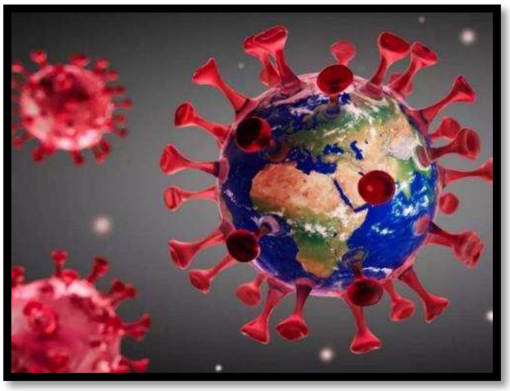
मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च के द्वार बंद कर दिये गये। मॉल, होटल, रिसार्ट सायं-सायं करने लगे। केवल अस्पताल एवं मेडिकल स्टोर ही पूर्ववत् खुले रहे। यह कोरोना की पहली एवं दूसरी लहर का असर था। देश की अर्थव्यवस्था को तगड़ा झटका लगा।

समाज – जीवन में कोरोना के दो प्रभाव हमें दिखायी दिये। एक बुरा और दूसरा अच्छा। दोनों की चर्चा करते हुए आगे बढ़ूँगा। बुरे प्रभाव का पक्ष देखें तो हजारो लोग असमय काल कवलित हुए। कल-कारखाने बंद होने से लाखों मजदूर अपनी खोलियों में कैद रह गये। बेकार बैठे कब तक खाते, मुफ्त में कौन खिलाता। कुछ सप्ताह कारखानें खुलने की उम्मीद में काटे और जमा पूँजी खाते रहे। पर जब कारखाने शुरू होने के कोई संकेत न मिले, तो समूहों में अपने गाँव घर की राह पकड़ी। यात्रा के साधन तो थे नहीं तो मजबूरी में पैदल चल पड़े। साथ में औरतें, बच्चे और सिर पर गृहस्थी का बोझ। न कुछ खाने को न कुछ पीने को। डर के कारण रास्ते में भी न किसी न ठहरने दिया न खाना-पानी पूछा पर कुछ स्वयंसेवी संस्थाओं एवं मानवतावादी लोगों ने यथासम्भव भोजन परोसा, पानी दिया, पैरों में चप्पल पहनाये। लोगों के पैरो में छाले पड़ गये, सूजन आ गयी पर चलते रहना मजबूरी थी तो चलते रहे। किसी ने सड़क मार्ग चुना तो किसी ने रेल की पटरी को साथी बनाया। पटरी पर चलेते-चलते थके तो पटरी को तकिया बना बेसुध सो गये। किसी मालवाहक गाड़ी से जीते-जागते कुछ इंसान लाशों और क्षत-विक्षत दुकड़ों में कब बदल गये, पता ही न चला। पर वहाँ भी करीब में रोटियाँ ही बिखरी मिलीं। गाँव पहुँचे तो घर में घुसने न दिया गया। कोविड होम्स, स्कूल या किसी जानवर बाड़े में 14 दिन क्वारंटाइन रहना पड़ा। दूर से ही खाने की थाली खिसका दी जाती। पर अपने घर-परिवार के पास पहुँच पाने का आत्मिक सुख अन्दर से ताकत भर रहा था। अस्पताल खुले थे, पर मरीज के लिए बेड न थे। तीमारदार मरीज को लिए एक शहर से दूसरे शहर घूमते रहे। न बेड मिला, आक्सीजन न मिली, मिला तो बस 6 गज का कफन। कहीं आक्सीजन और रेमडिसिविर इंजेक्शन की कालाबाजारी भी हुई। अस्पतालों में मरीज मरते रहे, सील पैक होकर शमशान पहुँचते रहे और बाहर आँसू बहते रहे। रोगी वाहनों ने अनाप-शनाप पैसे वसूले। शव को परिजनों को छूने की अनुमति न थी। बस दूर से निहारते रहते। न कोई मुखाग्नि दे सका, न फूल चुने जा सके, न अस्थियाँ गंगा जल का स्पर्श पा सकीं।

सुखद प्रभाव भी कम न थे, लॉकडाउन लगने से सभी लोग घरों में ठहर गये। जिन लोगों के पास परिवार के साथ बैठने, खाने-पीने, संवाद का समय नहीं था, अब उनके पास समय-समय ही था। कुछ दिन तो अच्छे से गुजरे फिर समय काटना मुश्किल हो गया। क्या करें, बाहर जा नहीं सकते तो घरों में कुछ खेल बने, बच्चे बूढ़े सब साथ खेल खेल रहे हैं, खुशी बाँट रहे हैं। शतरंज, कौड़ी, लूडो, घर-घर खेले जाने लगे। बूढ़ों का बचपन लौट आया, परिवार में प्यार की बरसात होने लगी। रसोई से नये स्वादिष्ट व्यंजनों की खुशबू बहने लगी। दिन की शुरुआत योग, हवन-पूजन से हुई तो शाम को समापन रामचरित मानस एवं गीता के पाठ से। जिन बच्चों को बिना बाजार जाये चैन नहीं पड़ता था, वो घर पर ही रुक गये। पिज्जा, बर्गर, मंचूरियन, कोल्ड ड्रिंक्स आदि फास्ट फूड की आदी युवा पीढ़ी को दाल-रोटी, कढ़ी-चावल भाने लगी। मन आरती, भजन, नमाज में सहभागी होने लगे। रिश्तों की गरमाहट को समझा और मायने भी । वाहनों के रुक जाने से नभ धुआँ से मुक्त हुआ। कालिमायुक्त आकाश स्वच्छ सफेद दिखने लगा। रात मनोहर तारों से भरी खिलखिलाती नजर आने लगी। हिमालय की चोटियाँ चंडीगढ़ और अमृतसर से दिखने लगीं। सड़कों पर चहल-पहल बंद होने से जंगली जानवर भयमुक्त हो नगरों एवं राजपथ पर विचरण करने लगे। नदियों का जल निर्मल एवं स्वच्छ हो गया। धरती का ताप भी यकायक कुछ घट गया। प्रकृति मुस्का ‘‘लगी। कानन महकने लगे, छतों पर अनदेखे-अनचीन्हे पंछी दिखे, खग कुल के कलरव से मानव मन को सुख मिला।

कोरोना संग युद्ध में

कोरोना के कहर से बचा है न देश कोई,
त्राहिमाम करे जनता घरों में बंद है।
कल-कारखानों में ताले पड़े सभी जगह,
देश के विकास की चाल बहुत मंद है ।
चाट, समोसा, पिज्जा दही बड़े हैं पीछे छूटे,
भोजन में दाल-भात, रोटी, खीरा कंद है।
घर में ताने मिलें, बाहर पुलिस डंडे,
बेचारा पति कहाँ जाये, मन में द्वंद्व है।





कोरोना संग युद्ध में, खड़े प्रबुद्ध सभी,
दलगत नीति से दूर रहना चाहिए।
अफवाहों की नदी में बहे नहीं कहीं कोई,
जीवन सादा बेकसूर रहना चाहिए।
कोरोना से बचाव में डटे हैं दिन रात जो,
वीरों का सम्मान जरूर करना चाहिए।
हो जायेंगे मुक्त हम कोरोना से एक दिन,
दिलो में प्यार भरपूर बहना चाहिए।

कोरोना से मुक्ति मिले

तन-मन गंध गुलाब चाहिए। ।
उर वंदन आदाब चाहिए।
तमस भरे जीवन पथ पर अब,
नव ज्योति आफताब चाहिए ।।



आप सभी का साथ चाहिए।

किरीट सुशोभित माथ चाहिए।

निकलेंगे संकट से लड़कर,

मृदु नेह सबल हाथ चाहिए ॥



नयन पले नित ख्वाब चाहिए।

निर्मल नव तालाब चाहिए।

कोरोना से मुक्ति मिले अब,

स्वस्थ रहें, न असबाब चाहिए ॥



न करोना विकराल चाहिए।

भय, विनाश न बवाल चाहिए।

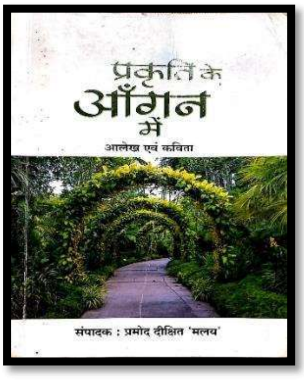
जीवन हो सुमधुर करुणामय,

चंदन, खुशी गुलाल चाहिए ॥



प्रस्तुत गीत में रचनाकार का शुदृढ़ विश्वास एवं संकल्प व्यक्त हुआ है। कोरोना जैसे महामारी के दौरान भी वह निराश,हताश और भयभीत नहीं है बल्कि आशा और विश्वास के साथ संकट से जूझने की जीजीसा दृष्टव्य है। भविष्य सुमधुर सुखमय होगा और मानवता पुनः नवल रचनात्मक निर्माण कर सकेगी ऐसा विश्वास प्रत्येक व्यक्ति में दिखाई देता है।

4.1.4 प्रकृति के आँगन में आलेख एवं कविता



काल चक्र हमेशा की तरह अपने नियत पथ पर अपनी निश्चित गति एवं लय के साथ बढ़ रहा था, पर उसके होने का सद्प्रभाव लोक जीवन में छाप छोड़ पाने में असरहीन था। मकर संक्रान्ति, होली, लोहड़ी, पोंगल, वैशाखी आदिक लोक जीवन में मनाये जाने वाले पर्व एवं त्योहार कब आये और कब चले गये, पता ही न चला क्योंकि कोरोना के कहर से भयाक्रान्त समाज जीवन डर-भय के घेरे में कैद घरों में दुबका-ठिठका, सहमा-सहमा आभाहीन हो बस जी रहा था। लोक में जीवन का कहीं कोई स्पंदन नहीं, कोई उत्साह उल्लास नहीं, कलरव-क्रीडा के पल ठहर गये, खुशियाँ तो जैसे बहुत दूर किसी पहाड़ की गुफा में सिमट कर बैठ गयी हों, ऊर्जा के स्रोत शुष्क हो नीरस हो गये। वातावरण में बस एक ही आहट थी, यमराज के पदचापों की प्रतिध्वनि जो तमाम घरों से बाहर आ रहे रुदन और शोक से व्यंजित हो रही थी। सड़कें, गलियाँ सुनसान थीं और वाहनों के पहिए थम गये थे मानों वर्षों की थकान मिटा रहे हों। कल-कारखानों की मशीनें उदासी की चादर ओढ़ निद्रालीन थीं। श्मशान घाटों पर भीड़ थी पर वे शव थे, ऐसे शव जो अस्पतालों से सीधे प्लास्टिक सीट में लपेटकर लाये गये थे। शव धधक रहे थे और दूर खड़े परिजनों के हृदय भी। इन दग्ध हृदयों में अपनों का सान्निध्य हमेशा के लिए छूट जाने का असीम दुःख-दर्द एवं पीड़ा समाई हुई थी।

वस्तुतः कोरोना संकट की काली चादर ने सम्पूर्ण विश्व को ढक लिया था।मानव जाति एक बड़े संकट के साये में जीने को अभिशप्त हो गयी थी। चारों ओर से मृत्यु के समाचार आ रहे थे। अस्पताल जाने वाले रोगियों में यदा-कदा ही कोई स्वस्थ होकर घर लौटा हो अन्यथा प्लास्टिक सीट में लपेटा गया शव ही लौटा जिसे न खोलने-देखने की अनुमति थी, न घर ले जाने की। सीधे अंतिम संस्कार किये जा रहे थे। न कंधा देने वाले कोई न ही अग्नि देने वाले। सगे-सम्बन्धी दूर खड़े बस लपटें देखने को विवश थे। हर हृदय में एक डर-भय पसरा था, कौन कब छूट जाये, किसी को पता न था। न कोई किसी को सहारा देने वाला था न कोई ढाढ़स बँधाने वाला।

ऐसे दुर्दिन के समय सामान्य जन में सकारात्मकता, निर्भयता, साहस, विवेक, धैर्य, संयम एवं जिजीविषा का संचार करने हेतु रचनाधर्मी शिक्षक-शिक्षिकाओं के स्वैच्छिक मैत्री समूह 'शैक्षिक संवाद मंच' ने 10 मई से 5 जून, 2021 तक वातावरण लोक शुद्धिकरण अभियान हाथ में लेकर ग्यारह सूत्रीय कार्य योजना तैयार की थी जो इस प्रकार है –

योग, प्राणायाम एवं ध्यान साधना करना। घर में लगे पौधों की देखभाल करना। पुस्तकों का अध्ययन एवं चिंतन-मनन करना। अपने अनुभवों को लिपिबद्ध करना । गोघृत, कपूर, लौंग, लोबान, तिल, अक्षत, गिलोय, गुड़, शर्करा आदि पदार्थों का आम, पीपल, शमी एवं गाय के गोबर से निर्मित उपलों की प्रज्ज्वलित अग्नि में औषधियुक्त हवन करना। नीम की सूखी पत्ती जलाकर पूरे घर में धूम्र प्रवाहित करना तथा मच्छर भगाने वाले रसायनों से दूरी बनाना। शुद्ध सात्विक भोजन, ताली बजाकर कीर्तन, गोघृत का दीप जलाकर शंखध्वनि करना। परिवार, परिजन एवं परिचितों से नियमित मैत्रीपूर्ण सकारात्मक संवाद करना। उक्त कार्यक्रमों के नियमित संपादन से सभी साथियों ने स्वयं में मानसिक शांति, आत्मबल, सकारात्मकता, संकट से जूझने की शक्ति में वृद्धि, आत्मिक ऊर्जा का उन्नयन, धैर्य, विवेक, संयम एवं अक्रोध की स्थिति प्राप्त करने सम्बंधी इत्यादिक अनुभव व्यक्त किये। उक्त कार्य कोरोना की चिकित्सा न थे पर कोरोना जनित भय पर विजय प्राप्त करने के सावधानी भरे सहज बचाव पथ अवश्य थे।

मत रोको गंगा की धारा



मत रोको गंगा की धारा, अविरल बहने दो।

उर की सारी पीड़ा-खुशियाँ, कल-कल कहने दो।



केवल नदी नहीं है गंगा, अपनी थाती है।

युग-युग से पुरखों की पढ़ती आई पाती है।

घाटों में इतिहास सुरक्षित, हलचल रहने दो।

संस्कृति की संवाहक गंगा, जीवन राग भरे।

सृजन-प्रलय के तटबंध बीच, बहती आग भरे।

सुरसरि है शुभ श्वास हमारी, कलरव करने दो।।





पोषण-मुक्ति प्रदाता गंगा, जन विश्वास लिए।

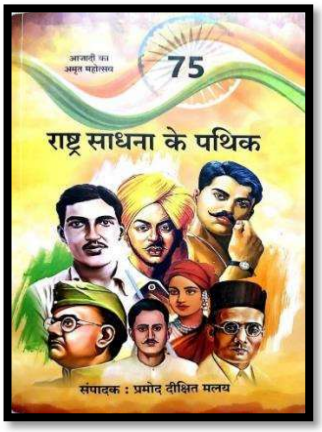
उर भरती है उत्साह प्रबल, नव आकाश लिए।

वक्षस्थल पर वार मशीनी, अब मत सहने दो।

प्रस्तुत गीत में कवि ने तथाकथित विकास के नाम पर पर्यावरण के विनाश एवं प्रकृति शोषण के विरुद्ध गंगा नदी को प्रतीक मानकर समाज एवं सत्ता को चेताया है। गंगा केवल नदी नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति सभ्यता एवं इतिहास का आधार है। गंगा को बाँधना इस देश के युगो-युगो से आ रहे सांस्कृतिक प्रवाह को बाँध देना है।

4.1.5 राष्ट्र साधना के पथिक

अशफाक उल्ला खां : भारत माता का सुवासित पुष्प



स्वाधीनता संग्राम की कालावधि में भारत माता की पावन रज में लोट-लोट कर बड़े हुए युवकों ने माँ की आराधना में निज जीवन के सुवासित पुष्प चढ़ाये हैं। हँसते हुए फाँसी के फंदो को चूम कर स्वयं गले में धारण कर कंठहार बना लिया तो वहीं कालचक्र की छाती पर निज वीरता की गाथा भी अपने रुधिर से अंकित कर दी। माँ भारती को पावन साँसों का अर्घ्य प्रदान किया। इन वीरों में ही एक ऐसा नर-नाहर महनीय व्यक्तित्व है जिसे जिसे 27 वर्ष की उम्र में फाँसी सजा हुई थी। वह थे माँ भारती के अमर पुत्र एवं काकोरी का महानायक अशफाक उल्ला खां जिसे सभी क्रान्तिकारी स्नेह से 'कुँवर जी' कहा करते थे।

अशफाक का जन्म 22 अक्टूबर, 1900 को उत्तर प्रदेश के शाहजहापुर रेलवे स्टेशन के नजदीक एक जमींदार परिवार में हुआ था। पिता मो0 शफीक उल्ला खां और माता मजहूरुनिशा बेगम शिशु के जन्म पर फूले न समाये थे। अशफाक अपने भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। इन्हें घर में सभी प्यार से 'अच्छू' बुलाते थे। बचपन से ही खेलने, तैरने, घुड़सवारी करने, बंदूक से निशाना साधने और शिकार करने का शौक था। मजबूत ऊँची कद-काठी और बड़ी आँखों वाले सुन्दर गौरवर्णी आकर्षक व्यक्तित्व के धनी अशफाक रामप्रसाद बिस्मिल की ही भाँति उर्दू के अच्छे शायर थे। साथ ही हिन्दी और अंग्रेजी में भी कविताएँ और लेख लिखते थे। वह हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। एक बार शाहजहाँपुर के आर्य समाज मंदिर में रामप्रसाद बिस्मिल के साथ बैठे क्रान्तिकारी दल के बारे में गहन चर्चा कर रहे थे कि तभी मंदिर को नष्ट एवं अपवित्र करने की मंशा से आये दंगाईयों पर अशफाक ने अपनी पिस्तौल तान

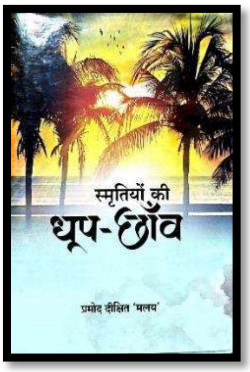


कर कहा था कि यदि कोई भी आगे बढ़ा और एक भी ईंट का नुकसान हुआ तो लाशें बिछा दूंगा। अशफाक का यह रौद्र रूप देख दंगाई उल्टे पाँव भाग खड़े हुए। अशफाक का परिवार बहुत पढ़ा लिखा नहीं था जबकि ननिहाल पक्ष के लोग उच्च शिक्षित और महत्वपूर्ण नौकरियों में थे। ननिहाल के लोगों ने 1857 की पहली स्वतंत्रता की लड़ाई में साथ नहीं दिया था तो लोगों ने गुस्से में उनकी कोठी में आग लगा दी थी जो आज भी 'जली कोठी' नाम से क्षेत्र में प्रसिद्ध है। वर्ष 1920 में अपने बड़े भाई रियासत उल्ला खां के सहपाठी मित्र रामप्रसाद बिस्मिल के सम्पर्क में आने के बाद अशफाक के मन में भी अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना भर गई और वह अंग्रेजों को देश से भगाने के लिए युवाओं को जोड़ने लगे थे। इसी बीच बंगाल के क्रान्तिकारियों से भी सम्पर्क बना और एक संगठन बनाने का निर्णय लिया गया। विदेश में रह रहे लाला हरदयाल भी बिस्मिल से सम्पर्क साधे हुए थे और संगठन बनाकर उसका संविधान लिखने का निर्देश दे रहे थे। इसी बीच अशफाक कांग्रेस दल में अपने लोगों की सहभागिता चाहते थे। इसलिए 1920 के अहमदाबाद अधिवेशन में बिस्मिल और अन्य साथियों के साथ अशफाक शामिल हुए। लौटकर भी सम्पर्क बना रहा और 1922 के गया अधिवेशन में भी जाना हुआ। लेकिन गांधी जी द्वारा बिना किसी से पूछे असहयोग आंदोलन वापस लेने से युवाओं का मन खराब हुआ और वहाँ से लौटने के बाद अपना एक दल बनाने की बात हुई। और तब 1924 में बंगाल से आये क्रान्तिकारियों के सहयोग से 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' अस्तित्व में आई। 1 जनवरी, 1925 को 'दि 'रिवोल्यूशनरी' नाम से अंग्रेजी में चार पत्रे का एक विचार पत्र निकाला गया जो एक प्रकार से दल का घोषणा पत्र ही था। जिसमें प्रत्येक पन्ने पर ऊपर लिखा हुआ था, "चाहे छोटा हो या बड़ा, गरीब हो या अमीर, प्रत्येक को मुफ्त न्याय और समान अधिकार मिलेगा।" इस पत्रक को पूरे देश के प्रमुख शहरों और सार्वजनिक स्थानो पर चिपकाया गया। ताकि अधिक से अधिक जनता पढ़ सके। दल के काम को बढ़ाने के लिए धन की आवश्यकता थी लेकिन दल को कोई भी सेठ साहूकार चन्दा नहीं दे रहा था। संयोग से इसी बीच योगेश चन्द्र बनर्जी और शचीन्द्रनाथ सान्याल पर्चों के साथ बंगाल जाते समय पकड़ लिए गये। अब दल की पूरी जिम्मेदारी बिस्मिल और अशफाक पर आ गई। धन प्राप्ति के लिए अमीरों के यहाँ दो डकैतियाँ भी डाली गई लेकिन पर्याप्त धन नहीं मिल सका और दो आम लोगों की न चाहते हुए हत्या भी हो गई। इससे बिस्मिल का मन बहुत क्षुब्ध हुआ और आईन्दा राजनीतिक डकैती न डालने का निश्चय कर अब सरकारी खजाना लूटने की योजना बनी। बैठक में बिस्मिल ने प्रस्ताव रखा कि काकोरी से ट्रेन द्वारा जाने वाले खजाने को लूटा जाये। बैठक में उपस्थित सभी साथी सहमत थे लेकिन अशफाक यह कहते हुए इस प्रस्ताव का जोरदार विरोध किया कि अभी हमारी ताकत अंग्रेज सरकार से सीधे लड़ने की नहीं है और खजाना लुटने के बाद पुलिस हमारे पीछे पड़ जायेगी और दल बिखर जायेगा। इस पर अशफाक को कायर और मृत्यु से डरने वाला कहा गया। अन्ततः अशफाक ने सहमति देते हुए कहा कि वह मौत से नहीं डरते और यह समय ही तय करेगा। तो योजनानुसार 26 अगस्त की शाम को '8 डाउन लखनऊ-सहारनपुर पैसेन्जर ट्रेन" में 10 क्रान्तिकारी सवार हुए। जैसे ही काकोरी से खजाना लादकर ट्रेन आगे बढ़ी तो राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी ने जंजीर खींच दी। अशफाक ने लपक कर ड्राईवर की कनपटी में माउजर धर दिया। गार्ड ने मुकाबला करने की कोशिश की लेकिन बिस्मिल ने उसे जमीन पर औंधे मुँह गिरा कर काबू में कर लिया। खजाने की तिजोरी उतारी गई लेकिन तमाम कोशिशों के बावजूद भी ताले नहीं खुले। समय जाता देख अशफाक ने अपनी माउजर मन्मथनाथ गुप्त को पकड़ा कर घन से तिजोरी तोड़ने को पिल पड़े। अशफाक के जोरदार प्रहारों से तिजोरी में एक बड़ा छेद हो गया। चाँदी के सिक्के और रुपया चादरों में समेटा गया और निकल गये। लेकिन जल्दबाजी में एक चादर छूट गई जो बाद में पुलिस की खोजबीन में क्रान्तिकारियों को पकड़ने का अहम जरिया बनी। इस घटना से अंग्रेज सरकार की बहुत किरकिरी हुई और क्रान्तिकारियों को पकड़ने के लिए ईनाम घोषित किये गये। पुलिस की जाँच एवं खुफिया खोजबीन से पूरे देश में एक साथ 26 सितम्बर, 1925 को क्रान्तिकारियों के कई ठिकानों पर छापा मारकर 40 क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार किया गया। लेकिन पुलिस तब भी अशफाक और चन्द्रशेखर आजाद को

पकड़ने में नाकाम रही। अशफाक पुलिस को चकमा देकर नेपाल चले गये। वहाँ से कानपुर आकर गणेश शंकर विद्यार्थी के प्रेस में भी रहे फिर बनारस, राजस्थान, बिहार, भोपाल होते हुए दिल्ली पहुँचे। उनकी योजना पासपोर्ट बनवाकर देश से बाहर जाने की थी। लेकिन दिल्ली में किसी मित्र के विश्वासघात के कारण खुफिया पुलिस अधिकारी इकरामुल हक द्वारा पकड़े गये। हालाँकि अदालत द्वारा काकोरी काण्ड का फैसला 6 अप्रैल, 1926 को दिया जा चुका था। लेकिन अशफाक और शचीन्द्रनाथ बख्शी के विरुद्ध फिर से पूरक केस दायर किया गया। जिसका फैसला 13 जुलाई को आया जिसमें रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी और ठाकुर रोशन सिंह को फाँसी एवं 16 अन्य को चार वर्ष से लेकर काले पानी तक की सजाएँ दी गई। अदालत के आदेश के पालन करते हुए 19 दिसम्बर, 1927 सोमवार को फैजाबाद जेल में अशफाक को फाँसी दे दी गई। स्वतंत्रता की बलि वेदी पर माँ भारती के एक और सपूत ने अपनी आहुति देकर जननी की कोख को गौरव प्रदान किया। आने वाली पीढ़ियाँ अशफाक के जीवन से प्रेरित होती रहेंगी।

प्रस्तुत आलेख में रचनाकार प्रमोद दीक्षित जी ने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में अप्रतिम योगदान देने वाले क्रांतिकारी अशफाक उल्लाखाँ के कृतित्व एवं व्यक्तित्व साधना पर तथा समकालीन अन्य क्रांतिकारियों के साथ उनके सम्बन्ध,क्रांति की योजना की रूपरेखा एवं क्रियान्वयन एवं सामाजिक समरसता तथा धार्मिक सद्भाव पर विचार रखे हैं।

4.1.6 स्मृतियों की धूप-छाँव



प्रस्तुत संकलन 'स्मृतियों की धूप-छाँव में 53 शिक्षक-शिक्षिका रचनाकारों के रोचक एवं भावपूर्ण संस्मरण सम्मिलित हैं। इन संस्मरण लेखों में जीवन के विविध क्षेत्रों से प्रेरक चरित्र अपनी ऊर्जा के साथ उपस्थित हुए हैं। रचना के फलक पर विविध रंग छिटके हुए हैं। कुछ संस्मरणों में रचनाकारों ने माँ के प्रति अपने भाव सुमन समर्पित किए हैं तो किसी ने पिता पर शब्द सुमन चढ़ाये हैं। किसी ने पालतू गाय के प्रति श्रद्धा निवेदित की है तो किसी ने कुक्कुर पर स्नेह लुटाया है। किसी ने बुलबुल, गौरैया चिड़ियों पर अपने अनुभवों को लिपिबद्ध किया है तो किसी ने यात्रा के रोचक पड़ावों के शब्द चित्र उकेरे हैं। किसी ने आगत शिशु के साथ संवाद को गति दी है तो किसी ने अपने बचपन के मोहक चित्र खींचे हैं। किसी ने अपने संघर्ष और परिवार की जीवन यात्रा का लिप्यांकन किया है तो किसी ने हाथ की लकीरों को पढ़ बताये गये भविष्यफल के विरुद्ध संकल्प शक्ति की कटार पर शान चढ़ाई है। किसी ने दादी को याद कर बचपन के अपने रूठे व्यवहार पर अब पश्चाताप के आँसू ढलकाये हैं तो किसी ने कठोर किंतु कोमल हृदय उदारमना नानी की स्मृति को सँजोया है।

माँ की मृत्यु पर



यह समय नहीं है किसी दुःख, पीड़ा,

आह का रुदन, आँसू, दाह का कसक,

संताप, शोक का वेदना, व्यथा, वियोग का।

समय है आत्मा के सभी लौकिक सम्बन्धों के त्याग का

दैहिक बंधन से मुक्ति के असीम अनंत उल्लास का

आत्मा का परमात्मा से। मिलन का, मोक्ष का।



नहीं बाँचने हैं यहाँ कोई मृत्युगीत के छन्द नीरस

माँ तुम्हारी यात्रा सुगम हो हो पन्थ सुरभित शुभ सरस

सुनो जगत! स्मरण है तुम्हें कि कारा से मुक्ति के समय

क्या कभी बजायी गयी हो शहनाईयों की मातमी धुन

या रखा गया हो सामूहिक मौन।

अम्मा! तुम उज्ज्वल प्रकाश

माँ कुछ दिवस और रहकर जाती।

कुछ तो मुझसे तुम कहकर जाती ॥



माया पट बाँच अबोले मुझसे।

प्रकृति-पुरुष रहस्य खोले मुझसे।

जीवन के कठिन पलों में तुमने,

ममता-रस अनुपम घोले मुझसे॥

निर्मल जल सा था जीवन तेरा,

क्यों बाँध गयी उर, बहकर जाती ॥

सभी पर सदा करुणा बरसाई।

समता ममता नेह निधि लुटाई।

तम-कारा में उज्ज्वल प्रकाश तुम,

दुखी मनुज मन की पीर मिटाई।

झंझावात सहे अविचल तुमने,

ताप खुशियों का भी सहकर जाती ॥



अम्मा की केवल स्मृतियाँ ही हृदय कोष में सुरक्षित हैं। अम्मा की स्मृति को सँजोने के लिए उसी वर्ष 2022 से 'श्रीमती रामबाई दीक्षित स्मृति शिक्षक एवं लेखक सम्मान' की स्थापना की है जो प्रत्येक वर्ष दो उत्कृष्ट शिक्षकों (जिनमें एक शिक्षक एवं एक शिक्षिका होंगी) एवं एक शिक्षा विषय केंद्रित पुस्तक के रचनाकार को प्रदान किया जायेगा। वर्ष 2022 का प्रथम 'श्रीमती रामबाई दीक्षित स्मृति शिक्षक सम्मान' दो शिक्षकों श्री रामकिशोर पांडेय (बाँदा) एवं आसिया फारूकी (फतेहपुर) को तथा पुस्तक पर 'श्रीमती रामबाई दीक्षित स्मृति लेखक सम्मान' हेत 'बच्चे मशीन नहीं हैं' – श्री आलोक मिश्रा (नई दिल्ली) तथा 'शिक्षा में बदलाव की चुनौतियाँ श्री दिनेश – कर्नाटक (उत्तराखंड) का चयन किया गया जो 3 एवं 4 जनवरी, 2023 को

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान चित्रकूट में आयोजित शैक्षिक संगोष्ठी एवं शिक्षक सम्मान समारोह में पूज्य पिता श्री बाबूलाल दीक्षित (सेवानिवृत्त प्राचार्य श्री मन्नूलाल संस्कृत महाविद्यालय अतर्रा, बाँदा) के कर कमलों से प्रदान किया जायेगा।

अम्मा की सीख धरोहर हैं। हम बच्चों के जीवन पथ के सघन तमस में अम्मा उज्ज्वल प्रकाश थीं और हमेशा रहेंगी। हम उनके दिखाये समाज रचना के सर्जना पथ पर बढ़ते रहेंगे।

4.2 प्रकाशित आलेख



सृजन के मधुर गीत गाता एक विद्यालय

प्रमोद दीक्षित "मलय"*

प्रस्तुत आलेख एक मृतप्राय सरकारी विद्यालय के पुनर्जीवन की कथा है, जिसमें विद्यालय की सफलता और उपलब्धियों के मनमोहक प्रेरक चित्र हैं, खुशी से झूमते बच्चों के कलरव का मधुर स्वर है, प्रबंध समिति के सदस्यों, अभिभावकों एवं समस्त ग्रामवासियों का विद्यालय के प्रति अपनेपन के भाव का प्रकटन है। यह एक शिक्षक की जीवंतता और लक्ष्य प्राप्ति के लिए किए गए अथक प्रयास का विनम्र फलक है। जिसमें उसकी खुली आँखों से देखे गए सपनों के स्वर्णिम सितारे टंके हुए हैं। साथ ही यह विद्यालय और समुदाय के संबंधों और परस्पर अवलंबन की नवीन व्याख्या है, जिससे यह संदेश पोषित हुआ है कि प्रत्येक विद्यालय समाज का अभिन्न अंग है और समाज की बेहतरी के लिए विद्यालय की सुरक्षा ज़रूरी होती है। वास्तव में यह लेख सरकारी स्कूलों के प्रति जन सामान्य के मन मस्तिष्क में उभरे इस पूर्वाग्रह और धारणा का तोड़ भी है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई नहीं होती और यहाँ पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य अंधकारमय होता है। यह लेख विद्यालय के प्रति समुदाय में न केवल खोए विश्वास की पुनर्बहाली करता है, बल्कि शिक्षक-अभिभावक संबंधों को संस्कृति वैभव एवं गरिमा प्रदान करता है।

जब हृदय में होता है अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा एवं दायित्व बोध, कदमों में होती है अनंत आसमान को नापने की शक्ति एवं सामर्थ्य, नेत्रों में होती है नवल सृजन की अग्नि, मस्तिष्क में स्पष्ट कार्य योजना और लक्ष्य प्राप्ति का स्पष्ट चित्र तो राह के कांटे भी सुमन बन उसका चरण वंदन करते हैं, सागर भी प्रणाम निवेदित कर स्वयं राह देने की विनय करता है और उसके सम्मान में झुक जाते हैं पर्वतों के उन्नत ललाट और जग अभिनंदन करते हुए कर्मवीर की उपाधि से करता है अलंकृत और यदि कोई कर्मवीर शासकीय शिक्षा क्षेत्र में अपने नवाचारी प्रयासों से अलख जगा रहा हो तो वह वास्तव में सरकारी स्कूलों के प्रति बनी उस जनछवि को तोड़ रहा होता है, जिसमें सरकारी स्कूलों में पठन-पाठन का समुचित माहौल न होने के चित्र अंकित हैं। पिछले जून माह में पूर्व माध्यमिक विद्यालय, गोठा, जिला बदायूं (उत्तर प्रदेश) जाना हुआ। चारदीवारी न होने के बावजूद एक सरकारी विद्यालय का पेड़-पौधों

प्रस्तुत आलेख एक मृतप्राय सरकारी विद्यालय के पुनर्जीवन की कथा है, जिसमें विद्यालय की सफलता और उपलब्धियों के मनमोहक प्रेरक चित्र हैं, खुशी से झूमते बच्चों के कलरव का मधुर स्वर है, प्रबंध समिति के सदस्यों, अभिभावकों एवं समस्त ग्रामवासियों का विद्यालय के प्रति अपनेपन के भाव का प्रकटन है। यह एक शिक्षक की जीवंतता और लक्ष्य प्राप्ति के लिए किए गए अथक प्रयास का विनम्र फलक है। जिसमें उसकी खुली आँखों से देखे गए सपनों के स्वर्णिम सितारे टंके हुए हैं। साथ ही यह विद्यालय और समुदाय के संबंधों और परस्पर अवलंबन की नवीन व्याख्या है, जिससे यह संदेश पोषित हुआ है कि प्रत्येक विद्यालय समाज का अभिन्न अंग है और समाज की बेहतरी के लिए विद्यालय की सुरक्षा ज़रूरी होती है। वास्तव में यह लेख सरकारी स्कूलों के प्रति जन सामान्य के मन मस्तिष्क में उभरे इस पूर्वाग्रह और धारणा का तोड़ भी है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई नहीं होती और यहाँ पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य अंधकारमय होता है। यह लेख विद्यालय के प्रति समुदाय में न केवल खोए विश्वास की पुनर्बहाली करता है, बल्कि शिक्षक-अभिभावक संबंधों को संस्कृति वैभव एवं गरिमा प्रदान करता है।

शिक्षा और भाषा के मुद्दों पर काम करने के कारण अक्सर विद्यालयों में जाना होता है। बच्चों के साथ बैठना और उनसे बातें करना भी मेरे काम में शामिल होता है। तो विद्यालयों में भ्रमण के दौरान स्पष्ट रूप से यह देखने में आया कि शिक्षण में नवाचारों के प्रयोग और बाल-केंद्रित प्रयासों को गति देने के आग्रहों के बाद भी शिक्षकों के अध्यापन के तौर-तरीके न केवल परंपरागत शिक्षक-केंद्रित, भय एवं दंड प्रधान हैं, बल्कि कक्षाओं का वातावरण बोझिल, अरुचिकर और नीरस बनाये रखने के लिए जिम्मेवार भी हैं। कुछ स्वप्रेरित शिक्षकों को छोड़कर अभी भी शिक्षकों के एक बड़े हिस्से द्वारा ऐसे कोई सकारात्मक प्रयास नहीं किए जा रहे हैं जिससे बच्चों को विद्यालय अपनी सपनीली जगह लगे। हम बच्चों को यह एहसास नहीं दिला पाये हैं कि विद्यालय वह रचनात्मक स्थान है जहाँ वे अपने सपनों की उड़ान भर सकते हैं, कल्पना को मूर्त रूप प्रदान कर सकते हैं। विद्यालय उस फलक की तरह नहीं उभर पाया जहाँ बच्चे मौलिक चिंतन को अभिव्यक्त कर सकें और विचारों का आदान-प्रदान कर सकें। कक्षा में प्रस्तुत विषय पर उनके अभिमत देने के लिए कोई जगह नहीं बन सकी है। आज भी बच्चों के दिलो-दिमाग में शिक्षक हावी हैं। विद्यालय उसे अपना-सा लगे और यह तभी संभव होगा जब शिक्षकों को हर बच्चा अपना-सा लगने लगे।



भाषा की कक्षा में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं अवसर

प्रमोद दीक्षित "मलय"*

शिक्षा और भाषा के मुद्दों पर काम करने के कारण अक्सर विद्यालयों में जाना होता है। बच्चों के साथ बैठना और उनसे बातें करना भी मेरे काम में शामिल होता है। तो विद्यालयों में भ्रमण के दौरान स्पष्ट रूप से यह देखने में आया कि शिक्षण में नवाचारों के प्रयोग और बाल-केंद्रित प्रयासों को गति देने के आग्रहों के बाद भी शिक्षकों के अध्यापन के तौर-तरीके न केवल परंपरागत शिक्षक-केंद्रित, भय एवं दंड प्रधान हैं, बल्कि कक्षाओं का वातावरण बोझिल, अरुचिकर और नीरस बनाये रखने के लिए जिम्मेवार भी हैं। कुछ स्वप्रेरित शिक्षकों को छोड़कर अभी भी शिक्षकों के एक बड़े हिस्से द्वारा ऐसे कोई सकारात्मक प्रयास नहीं किए जा रहे हैं जिससे बच्चों को विद्यालय अपनी सपनीली जगह लगे। हम बच्चों को यह एहसास नहीं दिला पाये हैं कि विद्यालय वह रचनात्मक स्थान है जहाँ वे अपने सपनों की उड़ान भर सकते हैं, कल्पना को मूर्त रूप प्रदान कर सकते हैं। विद्यालय उस फलक की तरह नहीं उभर पाया जहाँ बच्चे मौलिक चिंतन को अभिव्यक्त कर सकें और विचारों का आदान-प्रदान कर सकें। कक्षा में प्रस्तुत विषय पर उनके अभिमत देने के लिए कोई जगह नहीं बन सकी है। आज भी बच्चों के दिलो-दिमाग में शिक्षक हावी हैं। विद्यालय उसे अपना-सा लगे और यह तभी संभव होगा जब शिक्षकों को हर बच्चा अपना-सा लगने लगे।

एक प्राथमिक विद्यालय में मेरा जाना हुआ। मैं बरामदे में प्रधानाध्यापक के साथ बैठा था। वह विद्यालय के अभिलेख एवं पंजिकाएँ आदि दिखा रहे थे। निश्चित रूप से सभी पंजिकाएँ साफ-सुथरी, सुंदर लिखावट में थी। बगल के कक्ष से किसी शिक्षक के पढ़ाने की ध्वनि आ रही थी संभवतः भाषा की कक्षा थी। शिक्षक गाय पर निबंध लिखवा रहे थे। निबंध कुछ इस प्रकार था, 'गाय के चार पैर होते हैं, गाय के दो आँखें, दो कान, दो सींग होते हैं। एक लंबी पूँछ होती है। चार थन होते हैं। गाय सफेद रंग की होती है। गाय भूसा खाती है। गाय गोबर करती है। गाय हमारी माता है, आदि। फिर शिक्षक का आदेशात्मक स्वर गूँजा, 'इस निबंध को अच्छी तरह से रट लेना, कल सुनूँगा।' वह शिक्षक एक विशेष प्रकार की संतुष्टि का भाव लिए उस कक्षा से

4.3 प्रकाशित समीक्षा



स्टेजिंग एरिया : मानवीय व्यवहार, कर्तव्य एवं संवेदनाओं का दस्तावेज



जीवन के संघर्ष एवं संस्कार का राग है 'मीत बनते ही रहेंगे



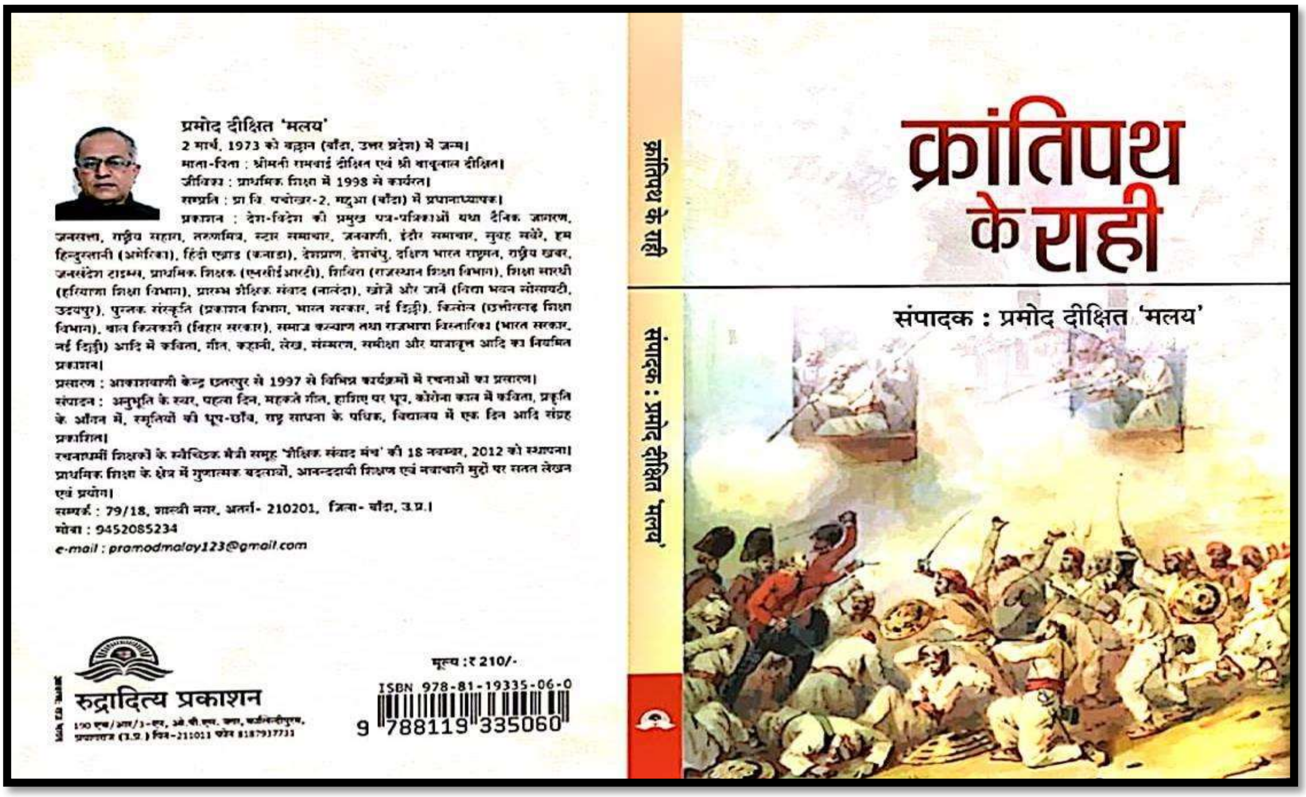
पंखुड़ियाँ: सुगंध बिखेरती रचनाओं का सुखद संसार

प्रमोद दीक्षित मलय
बाँदा
उत्तर प्रदेश



कवि गोष्ठी 'फूले हैं पलाश' में बही छंद, गीत एवं दोहों की रसधार

शैक्षिक संवाद मंच ने किया रचनाकारों का सम्मान



साझा संग्रह क्रांतिपथ के राही के आवरण का लोकार्पण

प्रखर विकास, अतर्रा (बाँदा)। रचनाधर्मी स्वप्रेरित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मैत्री समूह शैक्षिक संवाद मंच देश की स्वतंत्रता के अमृत काल के अवसर पर स्वाधीनता संग्राम में योगदान देने वाले क्रांतिकारियों के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर आधारित जीवनीपरक लेखों के संग्रह को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने हेतु योजनाबद्ध ढंग से काम कर रहा है। इस योजना में पहला संग्रह 51 क्रांतिकारियों एवं गांधीवादी राजनीतिक नायकों के जीवन पर केंद्रित 'राष्ट्र साधना के पथिक' का प्रकाशन किया जा चुका है जिसमें 1857 से 1947 तक के कालखंड को लिया गया था। इस श्रृंखला में 'क्रांतिपथ के राही' नाम से दूसरी पुस्तक शीघ्र प्रकाश्य है, जिसमें 31 क्रांतिकारियों पर जीवनीपरक लेख शामिल हैं। गत दिवस पुस्तक के आवरण का लोकार्पण रचनाकारों के वाट्सएप समूह में संपादक प्रमोद दीक्षित मलय द्वारा किया गया। रचनाकारों ने आवरण पृष्ठ को विषय से जुड़ा हुआ, प्रेरक एवं आकर्षक बता खुशी व्यक्त की। साझा संग्रह 'क्रांतिपथ के राही' के आवरण पृष्ठ का लोकार्पण



कर जानकारी देते हुए संपादक प्रमोद दीक्षित मलय ने बताया कि बेसिक शिक्षा में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं द्वारा साहित्य की जीवनी विधा पर केंद्रित लेखों का साझा संग्रह 'क्रांतिपथ के राही' का आवरण पृष्ठ गत दिवस रचनाकारों के मध्य आनलाइन माध्यम से वाट्सएप समूह में लोकार्पित किया गया। प्रकाश्य पुस्तक में 31 रचनाकार शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के ओजपूर्ण लेखों को स्थान मिला है। रचनाकारों ने तिलका मांझी, चाफेकर बन्धु, उल्लासकर दत्त, राणा बेनीमाधव, वासुदेव बलवंत फड़के, राजा राव रामबख्स सिंह, भगवतीचरण वोहरा, शचीन्द्रनाथ सान्याल, बारीन्द्र घोष, मणीन्द्रनाथ

▶ **31 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के लेख शामिल**

बनर्जी, राजा देवीबख्स सिंह, अलगू यादव, पारसनाथ राय, पव्वर राम, मुनीश्वरदत्त उपाध्याय, रानी गाइदिनल्यू, महादेव चौबे, रानी ताईबाई, मातंगिनी हाजरा, मातादीन बाल्मीकि सहित स्वतंत्रता आंदोलन में काशी की भूमिका, काकोरी कांड, स्वाधीनता संघर्ष में तवायफों की भूमिका, हापुड़ के शहीद, चौरीचौरा कांड, स्वातंत्र्य समर में मिठाईयों की दुकानों की भूमिका, क्रांतिकारियों की फांसी का साक्षी बांदा का भूरागढ़ किला, सीतापुर के दो क्रांतिकारी, भील बालिका कालीबाई एवं पृथ्वीसिंह आजाद आदि क्रांतिकारियों एवं घटनाओं पर लेखकों ने शोधपूर्ण सामग्री प्रस्तुत की है। आवरण पृष्ठ चित्रकार राज भगत ने तैयार किया है। पुस्तक का प्रकाशन रुद्रादित्य प्रकाशन, प्रयागराज द्वारा किया जा रहा है।

इस जीवनी लेख संग्रह 'क्रांतिपथ के राही' में शामिल शिक्षक-शिक्षिका रचनाकारों के नाम एवं जनपद निम्नवत हैं - दुर्गेश्वर राय एवं दीप्ति राय (गोरखपुर), प्रीति भारती (उन्नाव), डॉ. कुमुद सिंह, डॉ. श्रवण कुमार गुप्त, कुमुद, डॉ. अरविंद द्विवेदी (वाराणसी), शुभा देवी, दीक्षा मिश्रा एवं सीमा मिश्रा (फतेहपुर), शीला सिंह, रिम्पू सिंह एवं संतोष कुशवाहा (गाजीपुर), अपर्णा नायक (महोबा), अनीता मिश्रा (बलरामपुर), रश्मि तिवारी, मीरा रविकुल एवं प्रमोद दीक्षित मलय (बांदा), अंजू वर्मा (अयोध्या), शंकर कुमार रावत (बलिया), विवेक पाठक (गोण्डा), कौशर जहां सिद्दीकी (सोनभद्र), राजकुमार सिंह, पूजा चतुर्वेदी एवं सुषमा मलिक (हापुड़), डॉ. पूजा यादव एवं मृदुला वर्मा (कानपुर), अवनीश यादव (लखीमपुर), ममता देवी (सीतापुर), साधना मिश्रा (प्रतापगढ़), शिवाली जायसवाल (मेरठ) तथा विजयप्रकाश जैन (राजस्थान)। पुस्तक का विमोचन भव्य समारोह में रचनाकारों, पाठकों एवं साहित्यकारों के मध्य किया जायेगा। रचनाकारों ने 'क्रांतिपथ के राही' पुस्तक को छात्रों, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं पाठकों के लिए अत्यंत उपयोगी बताया।

प्रवासी संदेश मुंबई DIGITAL PRAVASI SANDESH
बुधवार, 2 मार्च 2022 www.pravasisandesh.news
9004746488 pravasisandesh1@gmail.com www.facebook.com/pravasisandesh1/

ज्ञान सर्जना का मुक्त प्राकृतिक मंच है शैक्षिक भ्रमण





प्रमोद दीक्षित मलय

शिक्षा और समाज को दिशा देता है प्रमोद दीक्षित का रचना कर्म



जनसंदेश टाइम्स

लखनऊ, सोमवार, 10 जनवरी 2022

दूध जलेबी गर्म समोसा मतलब मौसम जाड़े का

जनसंदेश टाइम्स ब्यूरो



गिरवा (बांदा)। बेसिक शिक्षा निदेशालय में सहायक शिक्षा निदेशक अब्दुल मुबीन की संकल्पना एवं संरक्षण में रविवार को अखिलेश पांडेय अखिल की अध्यक्षता एवं डा. राजीव राज के मुख्य आतिथ्य में परवाज का 20वां अंक आनलाइन आयोजित हुआ। प्राथमिक विद्यालय पचोखर-2 के प्रधानाध्यापक साहित्यकार प्रमोद दीक्षित मलय ने 'मौसम जाड़े का' रचना पढ़कर वाहवाही लूटी। इस बाल रचना ने श्रोताओं का मन मोह लिया। 'गोभी गाजर लाल टमाटर मौसम जाड़े का, मूली धनिया बैंगन भुर्ता मौसम जाड़े का' के माध्यम से जहां सब्जियों का वर्णन किया गया वहीं 'अलसी सरसों मीठा गन्ना, तिल्ली उड़द मसूर ज्वार बाजरा कैथा कॉफी मौसम जाड़े का' से फसलों की जानकारी दी गई। जबकि 'मटर मूंगफली सिंघाड़ा औ शाक चने का भी, दूध जलेबी गर्म समोसा मौसम जाड़े का' के जरिए जाड़े का सजीव दृश्य उपस्थित हो गया। मलय पहले भी परवाज के दो अंकों में रचनाएं पढ़ चुके हैं। सहायक शिक्षा निदेशक अब्दुल मुबीन ने कहा कि परवाज से बेसिक शिक्षक-शिक्षिकाओं की रचनात्मकता को प्रकट होने का एक मंच मिला है। सभी रचनाओं को ई-बुक में प्रकाशित किया जायेगा। संचालन कथाकार मृदुला शुक्ला ने किया। मुहम्मद अदील मंसूरी, शिवम सिंह, डा. रेणु देवी एवं जनार्दन पांडेय आदि रचनाकार शामिल रहे। सभी रचनाकारों को आनलाइन प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया।



पंचम अध्याय

प्रकाशित कविताएँ

पंचम अध्याय

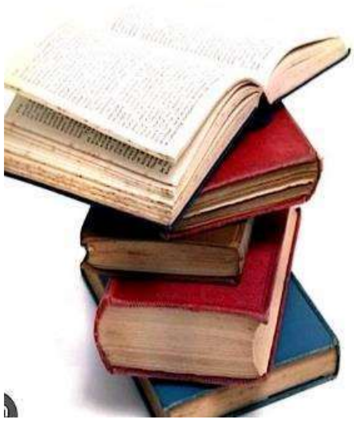
प्रकाशित कविताएँ

5.1 पुस्तक सच्ची मीत

पुस्तक मन को प्रिय सदा, पुस्तक लगती गीत।
शुष्क हृदय रस घोलती, पुस्तक मृदु नवनीत।

पुस्तक जिनके पास हो, होते नहीं निराश।
मन में धरती है भरी, मुट्ठी में आकाश ।।

पुस्तक गठरी ज्ञान की, पुस्तक सच्ची मीत।
पथ के कंटक बीनती, सदा दिलाती जीत।।





मुक्ता माणिक रत्न हैं, पुस्तक प्रिय पुखराज ।
शिखर चढ़े हैं वीर वे, साथ निभाते आज।।

पुस्तक पृष्ठों में दबी, मानव मन की पीर।
शब्द पिघल कर बह रहे, जैसे निर्मल नीर ।।

5.2 बच्चे कल हैं विश्व का



परिजन से नित सीखते, भाषा का व्यवहार।

बच्चे रचने हैं लगे, शब्दों का संसार ॥

कच्ची मिट्टी हैं नहीं, खाली घड़ा न जान।

कोरे कागज भी नहीं, बच्चे बहुत महान ॥

कला गणित अरु नीति का, रखें सहज शुभ ज्ञान।

महत्व कभी न दें बड़े, कोरा मानस मान ॥


बच्चे कल हैं विश्व का

परिजन से नित सीखते, भाषा का व्यवहार।
बच्चे रचने हैं लगे, शब्दों का संसार।।

कच्ची मिट्टी हैं नहीं, खाली घड़ा न जान।
कोरे कागज भी नहीं, बच्चे बहुत महान।।

कला गणित अरु नीति का, रखें सहज शुभ ज्ञान।
महत्व कभी न दें बड़े, कोरा मानस मान।।

नदी ताल खग कूप तरु, फसल खेत खलिहान।
घर पड़ोस सामान की, बच्चों को पहचान।।

बच्चे कल हैं विश्व का, सुंदर धरती रूप।
मान प्यार सह दीजिए, पोषण छाया धूप।।

नदी ताल खग कूप तरु, फसल खेत खलिहान।

घर पड़ोस सामान की, बच्चों को पहचान॥

बच्चे कल हैं विश्व का, सुंदर धरती रूप।

मान प्यार सह दीजिए, पोषण छाया धूप ॥

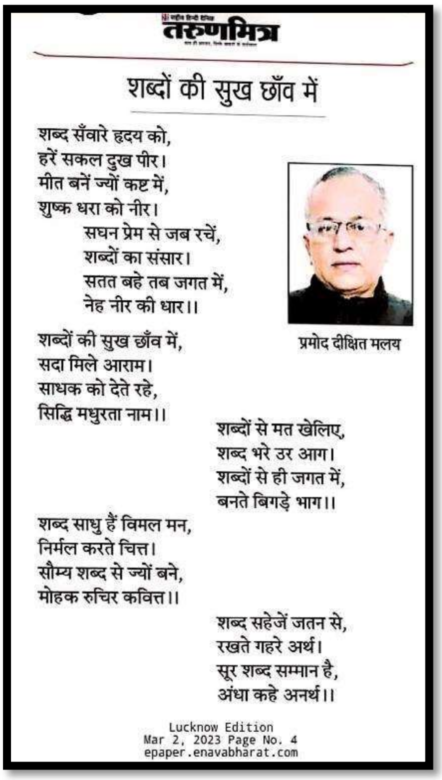
5.3 शब्दों की सुख छाँव में

शब्द सँवारे हृदय को, हरें सकल दुख पीर।
मीत बनें ज्यों कष्ट में, शुष्क धरा को नीर |

सघन प्रेम से जब रचें, शब्दों का संसार।
सतत बहे तब जगत में, नेह नीर की धार ॥

शब्दों की सुख छाँव में, सदा मिले आराम।
साधक को देते रहे, सिद्धि मधुरता नाम ॥





तरुणमित्र

शब्दों की सुख छाँव में

शब्द सँवारे हृदय को,
हरें सकल दुख पीर।
मीत बनें ज्यों कष्ट में,
शुष्क धरा को नीर।
सघन प्रेम से जब रचें,
शब्दों का संसार।
सतत बहे तब जगत में,
नेह नीर की धार।।

प्रमोद दीक्षित मलय

शब्दों की सुख छाँव में,
सदा मिले आराम।
साधक को देते रहे,
सिद्धि मधुरता नाम।।

शब्दों से मत खेलिए,
शब्द भरे उर आग।
शब्दों से ही जगत में,
बनते बिगड़े भाग।।

शब्द साधु हैं विमल मन,
निर्मल करते चित्त।
सौम्य शब्द से ज्यों बने,
मोहक रुचिर कवित्त।।

शब्द सहेजें जतन से,
रखते गहरे अर्थ।
सूर शब्द सम्मान है,
अंधा कहे अनर्थ।।

Lucknow Edition
Mar 2, 2023 Page No. 4
epaper.enavabharat.com

शब्द साधु हैं विमल मन, निर्मल करते चित्त।
सौम्य शब्द से ज्यों बने, मोहक रुचिर कवित्त ॥

शब्दों से मत खेलिए, शब्द भरे उर आग |
शब्दों से ही जगत में, बनते बिगड़े भाग ॥

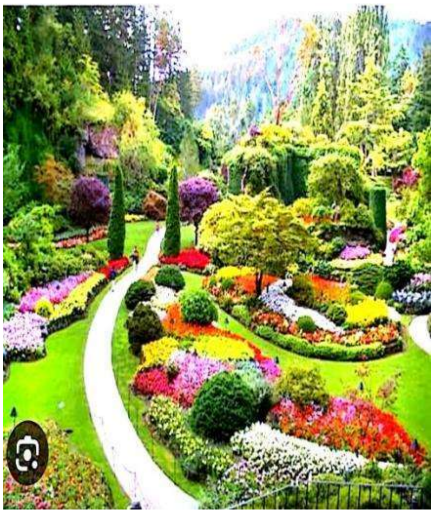
शब्द सहेजें जतन से, रखते गहरे अर्थ।
सूर शब्द सम्मान है, अंधा कहे अनर्थ।

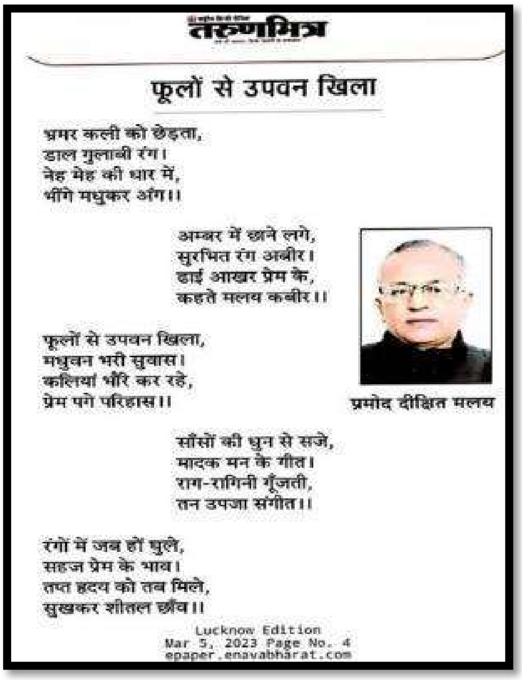
5.4 फूलों से उपवन खिला

भ्रमर कली को छेड़ता, डाल गुलाबी रंग।
नेह मेह की धार में, भींगे मधुकर अंग॥

अम्बर में छाने लगे, सुरभि रंग अबीर।
ढाई आखर प्रेम के, कहते मलय कबीर॥

फूलों से उपवन खिला, मधुवन भरी सुवास।
कलियां भर कर रहे, प्रेम पगे परिहास॥





तरुणमित्र

फूलों से उपवन खिला

भ्रमर कली को छेड़ता,
डाल गुलाबी रंग।
नेह मेह की धार में,
भींगे मधुकर अंग।।

अम्बर में छाने लगे,
सुरभित रंग अबीर।
ढाई आखर प्रेम के,
कहते मलय कबीर।।

फूलों से उपवन खिला,
मधुवन भरी सुवास।
कलियां भौंरे कर रहे,
प्रेम पगे परिहास।।

प्रमोद दीक्षित मलय

साँसों की धुन से सजे,
मादक मन के गीत।
राग-रागिनी गूँजती,
तन उपजा संगीत।।

रंगों में जब हों घुले,
सहज प्रेम के भाव।
तप्त हृदय को तब मिले,
सुखकर शीतल छाँव।।

Lucknow Edition
Mar 5, 2023 Page No. 4
epaper.enavabharat.com

साँसों की धुन से सजे, मादक मन के गीत।
राग-रागिनी गूँजती, तन उपजा संगीत॥

रंगों में जब हों घुले, सहज प्रेम के भाव|
तप्त हृदय को तब मिले, सुखकर शीतल छाँव॥

5.5 राम रमे हर श्वास में

राम जगत आधार हैं, राम सृष्टि के हेतु।

राम सकल व्यवहार में, गगन फहरता केतु ॥

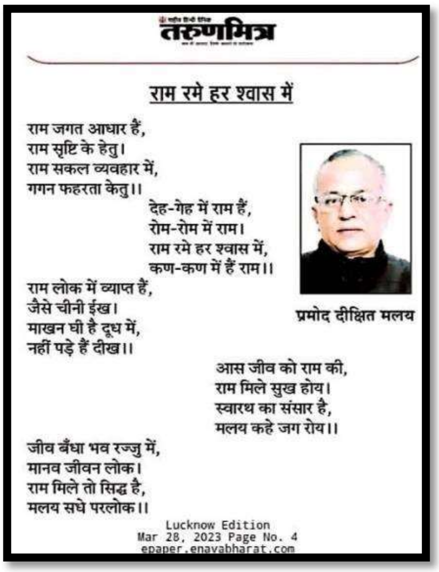
देह-गेह में राम हैं, रोम-रोम में राम।

राम रमे हर श्वास में, कण-कण में हैं राम ॥

राम लोक में व्याप्त हैं, जैसे चीनी ईख।

माखन घी है दूध में, नहीं पड़े हैं दीख ||





तरुणमित्र

राम रमे हर श्वास में

राम जगत आधार हैं,
राम सृष्टि के हेतु।
राम सकल व्यवहार में,
गगन फहरता केतु।।

देह-गेह में राम हैं,
रोम-रोम में राम।
राम रमे हर श्वास में,
कण-कण में हैं राम।।

प्रमोद दीक्षित मलय

राम लोक में व्याप्त हैं,
जैसे चीनी ईख।
माखन घी है दूध में,
नहीं पड़े हैं दीख।।

आस जीव को राम की,
राम मिले सुख होय।
स्वारथ का संसार है,
मलय कहे जग रोय।।

जीव बँधा भव रज्जु में,
मानव जीवन लोक।
राम मिले तो सिद्ध है,
मलय सधे परलोक।।

Lucknow Edition
Mar 28, 2023 Page No. 4
epaper.enavabharat.com

आस जीव को राम की, राम मिले सुख होय।

स्वारथ का संसार है, मलय कहे जग रोय ॥

जीव बँधा भव रज्जु में, मानव जीवन लोक।

राम मिले तो सिद्ध है, मलय सधे परलोक ॥

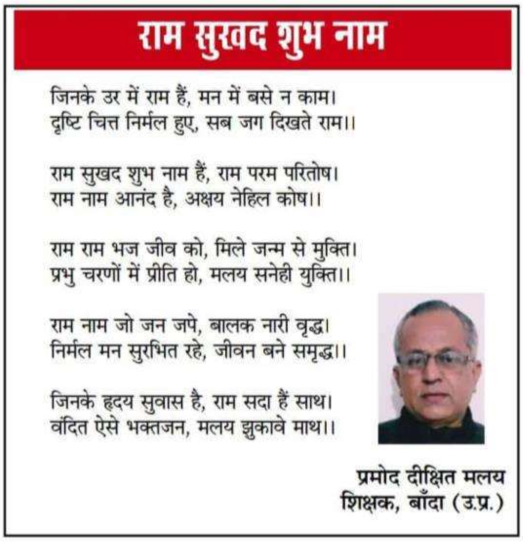
5.6 राम सुखद शुभ नाम

जिनके उर में राम हैं, मन में बसे न काम।
दृष्टि चित्त निर्मल हुए, सब जग दिखते राम ।।

राम सुखद शुभ नाम हैं, राम परम परितोष।
राम नाम आनंद है, अक्षय नेहिल कोष ।।

राम राम भज जीव को, मिले जन्म से मुक्ति ।
प्रभु चरणों में प्रीति हो, मलय सनेही युक्ति ।।





राम सुखद शुभ नाम

जिनके उर में राम हैं, मन में बसे न काम।
दृष्टि चित्त निर्मल हुए, सब जग दिखते राम।।

राम सुखद शुभ नाम हैं, राम परम परितोष।
राम नाम आनंद है, अक्षय नेहिल कोष।।

राम राम भज जीव को, मिले जन्म से मुक्ति।
प्रभु चरणों में प्रीति हो, मलय सनेही युक्ति।।

राम नाम जो जन जपे, बालक नारी वृद्ध।
निर्मल मन सुरभित रहे, जीवन बने समृद्ध।।

जिनके हृदय सुवास है, राम सदा हैं साथ।
वंदित ऐसे भक्तजन, मलय झुकावे माथ।।

प्रमोद दीक्षित मलय
शिक्षक, बाँदा (उ.प्र.)

राम नाम जो जन जपे, बालक नारी वृद्ध।
निर्मल मन सुरभित रहे, जीवन बने समृद्ध ।।

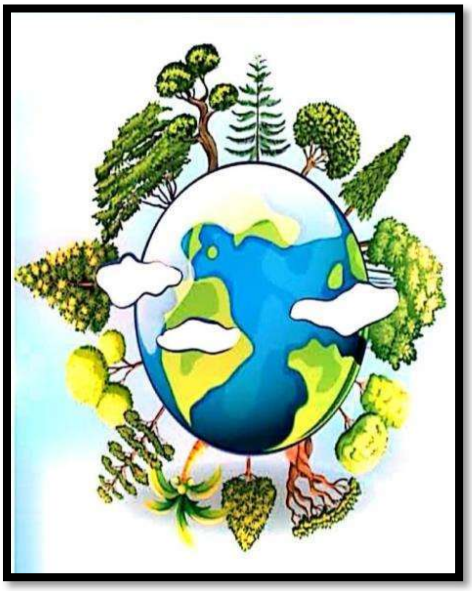
जिनके हृदय सुवास है, राम सदा हैं साथ।
वंदित ऐसे भक्तजन, मलय झुकावे माथ ।।

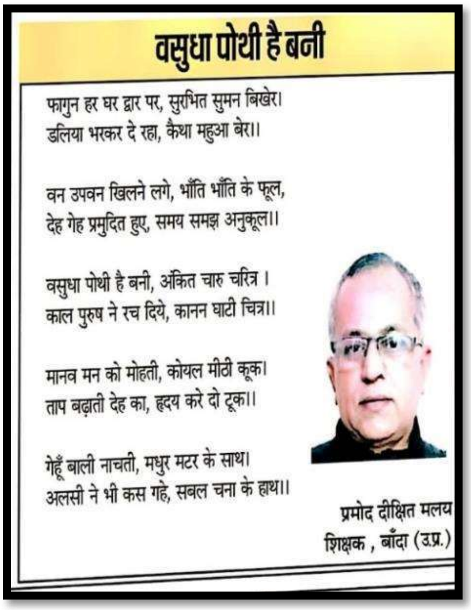
5.7 वसुधा पोथी है बनी

फागुन हर घर द्वार पर, सुरभित सुमन बिखेर।
डलिया भरकर दे रहा, कैथा महुआ बेर ॥

वन उपवन खिलने लगे, भाँति भाँति के फूल,
देह गेह प्रमुदित हुए, समय समझ अनुकूल॥

वसुधा पोथी है बनी, अंकित चारु चरित्र |
काल पुरुष ने रच दिये, कानन घाटी चित्र ॥





वसुधा पोथी है बनी

फागुन हर घर द्वार पर, सुरभित सुमन बिखेर।
डलिया भरकर दे रहा, कैथा महुआ बेर।।

वन उपवन खिलने लगे, भाँति भाँति के फूल,
देह गेह प्रमुदित हुए, समय समझ अनुकूल।।

वसुधा पोथी है बनी, अंकित चारु चरित्र ।
काल पुरुष ने रच दिये, कानन घाटी चित्र।।

मानव मन को मोहती, कोयल मीठी कूक।
ताप बढ़ाती देह का, हृदय करे दो टूक।।

गेहूँ बाली नाचती, मधुर मटर के साथ।
अलसी ने भी कस गहे, सबल चना के हाथ।।

प्रमोद दीक्षित मलय
शिक्षक , बाँदा (उ.प्र.)

मानव मन को मोहती, कोयल मीठी कूक।
ताप बढ़ाती देह का, हृदय करे दो टूक ।।

गेहूँ बाली नाचती, मधुर मटर के साथ।
अलसी ने भी कस गहे, सबल चना के हाथ ॥

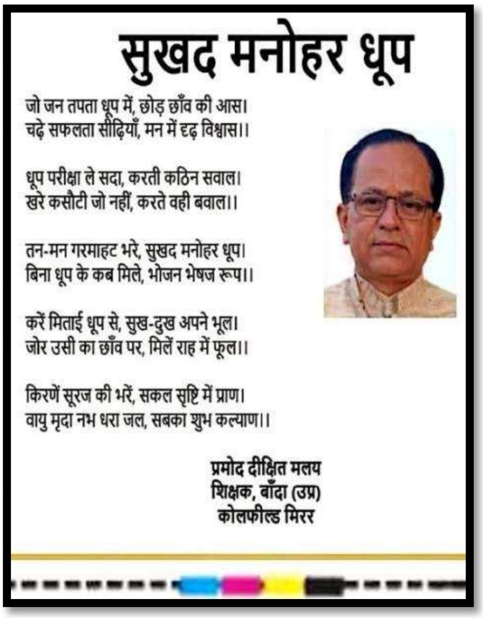
5.8 सुखद मनोहर धूप

जो जन तपता धूप में, छोड़ छाँव की आस।
चढ़े सफलता सीढ़ियाँ, मन में दृढ़ विश्वास ।।

धूप परीक्षा ले सदा, करती कठिन सवाल।
खरे कसौटी जो नहीं, करते वही बवाल।।

तन-मन गरमाहट भरे, सुखद मनोहर धूप।
बिना धूप के कब मिले, भोजन भेषज रूप।।




सुखद मनोहर धूप

जो जन तपता धूप में, छोड़ छाँव की आस।
चढ़े सफलता सीढ़ियाँ, मन में दृढ़ विश्वास।।

धूप परीक्षा ले सदा, करती कठिन सवाल।
खरे कसौटी जो नहीं, करते वही बवाल।।

तन-मन गरमाहट भरे, सुखद मनोहर धूप।
बिना धूप के कब मिले, भोजन भेषज रूप।।

करें मिताई धूप से, सुख-दुख अपने भूल।
जोर उसी का छाँव पर, मिलें राह में फूल।।

किरणें सूरज की भरें, सकल सृष्टि में प्राण।
वायु मृदा नभ धरा जल, सबका शुभ कल्याण।।

प्रमोद दीक्षित मलय
शिक्षक, बाँदा (उप्र)
कोलफील्ड मिरर

करें मिताई धूप से, सुख-दुख अपने भूल।
जोर उसी का छाँव पर, मिलें राह में फूल।।

किरणें सूरज की भरें, सकल सृष्टि में प्राण।
वायु मृदा नभ धरा जल, सबका शुभ कल्याण ।।

5.9 फसलें पीहर से चलीं



कृषक श्रमिक खुश नाचते, देख फसल अनुराग।

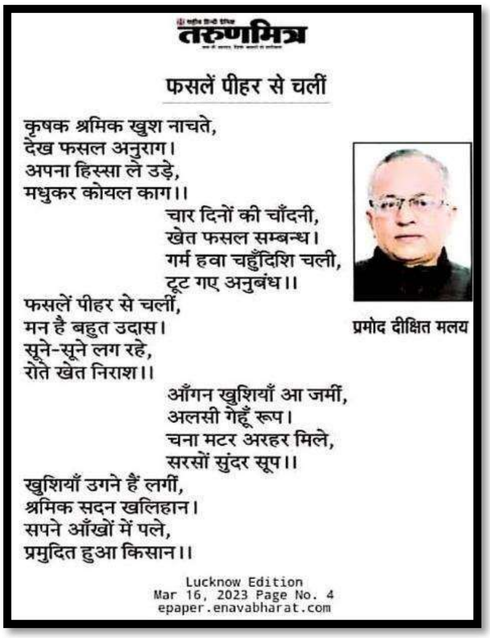
अपना हिस्सा ले उड़े, मधुकर कोयल का ||

चार दिनों की चाँदनी, खेत फसल सम्बन्ध।

गर्म हवा चहुँदिशि चली, टूट गए अनुबंध ||

फसलें पीहर से चलीं, मन है बहुत उदास।

सू-सूने लग रहे, रोते खेत निराश ||



तरुणमित्र

फसलें पीहर से चलीं

कृषक श्रमिक खुश नाचते,
देख फसल अनुराग।
अपना हिस्सा ले उड़े,
मधुकर कोयल काग।।
चार दिनों की चाँदनी,
खेत फसल सम्बन्ध।
गर्म हवा चहुँदिशि चली,
टूट गए अनुबंध।।
फसलें पीहर से चलीं,
मन है बहुत उदास।
सूने-सूने लग रहे,
रोते खेत निराश।।
आँगन खुशियाँ आ जमीं,
अलसी गेहूँ रूप।
चना मटर अरहर मिले,
सरसों सुंदर सूप।।
खुशियाँ उगने हैं लगीं,
श्रमिक सदन खलिहान।
सपने आँखों में पले,
प्रमुदित हुआ किसान।।

प्रमोद दीक्षित मलय

Lucknow Edition
Mar 16, 2023 Page No. 4
epaper.enavabharat.com

आँगन खुशियाँ आ जमीं, अलसी गेहूँ रूप।

चना मटर अरहर मिले, सरसों सुंदर सूप ||

खुशियाँ उगने हैं लगीं, श्रमिक सदन खलिहान।

सपने आँखों में पले, प्रमुदित हुआ किसान ||

5.10 धरती पोषण दे हमें

सागर निर्झर सर नदी धरती सुंदर रूय ।

रखें धरा को नम सदा झील बावली कूप ॥

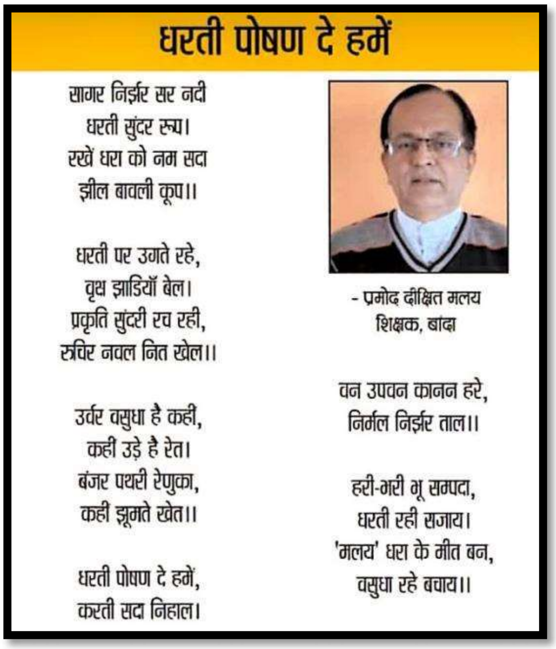


धरती पर उगते रहे, वृक्ष झाडियाँ बेल।

प्रकृति सुंदरी रच रही, रुचिर नवल नित खेल ||

उर्वर वसुधा है कहीं, कही उड़े है रे ।

बंजर पथरी रेणुका, कही झूमते खेत ||



धरती पोषण दे हमें

सागर निर्झर सर नदी
धरती सुंदर रूप।
रखें धरा को नम सदा
झील बावली कूप।।

धरती पर उगते रहे,
वृक्ष झाड़ियाँ बेल।
प्रकृति सुंदरी रच रही,
रुचिर नवल नित खेल।।

उर्वर वसुधा है कहीं,
कहीं उड़े है रेत।
बंजर पथरी रेणुका,
कहीं झूमते खेत।।

धरती पोषण दे हमें,
करती सदा निहाल।

- प्रमोद दीक्षित मलय
शिक्षक, बांदा

वन उपवन कानन हरे,
निर्मल निर्झर ताल।।

हरी-भरी भू सम्पदा,
धरती रही सजाय।
'मलय' धरा के मीत बन,
वसुधा रहे बचाय।।

धरती पोषण दे हमें, करती सदा निहाल ।

वन उपवन कानन हरे, निर्मल निर्झर ताल ||

हरी-भरी भू सम्पदा, धरती रही राजाय ।

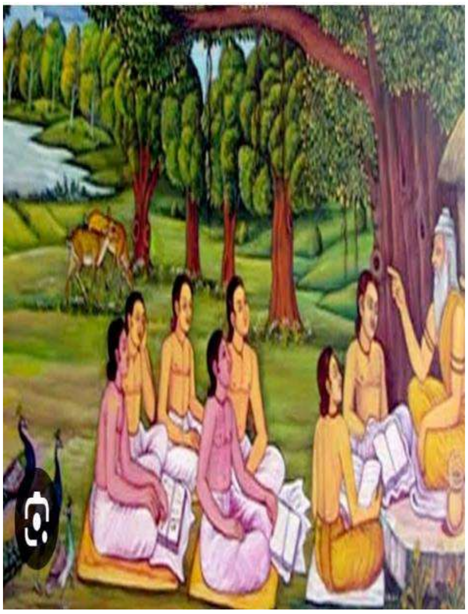
‘मलय’ धरा के मीत बन, वसुधा रहे बचाय ।।

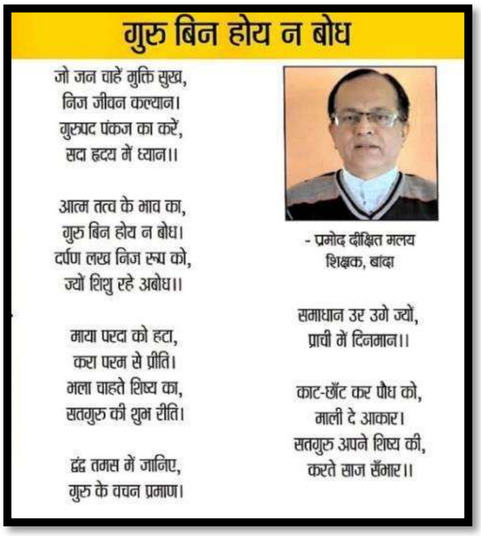
5.11 गुरु बिन होय न बोध

जो जन चाहें मुक्ति सुख, निज जीवन कल्यान।
गुरुपद पंकज का करें, सदा हृदय में ध्यान ॥

आत्म तत्व के भाव का, गुरु बिन होय न बोध |
दर्पण लख निज रूप को, ज्योंशिशु रहे अबोध ॥

माया परदा को हटा, करा परम से प्रीति।
भला चाहते शिष्य का, सतगुरु की शुभ रीति।





गुरु बिन होय न बोध

जो जन चाहें मुक्ति सुख,
निज जीवन कल्यान।
गुरुपद पंकज का करें,
सदा हृदय में ध्यान।।

आत्म तत्व के भाव का,
गुरु बिन होय न बोध।
दर्पण लख निज रूप को,
ज्यों शिशु रहे अबोध।।

माया परदा को हटा,
करा परम से प्रीति।
भला चाहते शिष्य का,
सतगुरु की शुभ रीति।

द्वंद्व तमस में जानिए,
गुरु के वचन प्रमाण।

- प्रमोद दीक्षित मलय
शिक्षक, बांदा

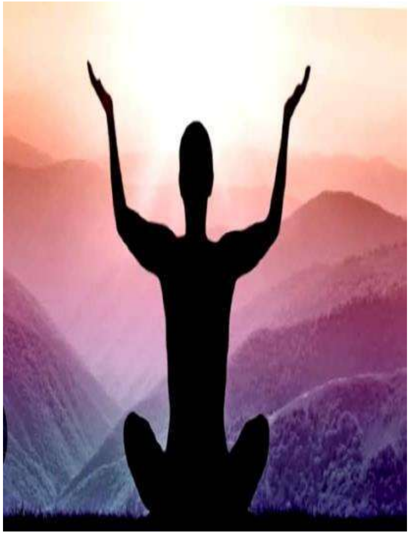
समाधान उर उगे ज्यों,
प्राची में दिनमान।।

काट-छाँट कर पौध को,
माली दे आकार।
सतगुरु अपने शिष्य की,
करते साज सँभार।।

द्वंद्व तमस में जानिए. गुरु के वचन प्रमाण।
समाधान उर उगे ज्यों, प्राची में दिनमान ||

काट-छाँट कर पौध को, माली दे आकार।
सतगुरु अपने शिष्य की, करते साज सँभार ||

5.12 गुरुवर प्रकाश पुंज हैं



कृपा सिंधु गुरु चाहते, सदा शिष्य की जीत।

गुरुवर प्रकाश पुंज हैं, गुरु हैं मृदु नवनीत॥

गुरु नौका भवसिंधु है, सहज उतारें पार|

काट सकल पट मोह के, करते कृपा अपार॥

गुरु चरणों में जो सदा, रखें सहज निज शीश।

अहम भाव से मुक्त हो, बनते सिंधु गिरीश॥



कविता

गुरुवर प्रकाश पुंज हैं

कृपा सिंधु गुरु चाहते, सदा शिष्य की जीत।
गुरुवर प्रकाश पुंज हैं, गुरु हैं मृदु नवनीत।।

गुरु नौका भव सिंधु है, सहज उतारें पार।
काट सकल पट मोह के, करते कृपा अपार।।

गुरु चरणों में जो सदा, रखें सहज निज शीश।
अहम भाव से मुक्त हो, बनते सिंधु गिरीश।।

गुरु पद पंकज से करें, मलय विमल उर नेह।
भरे रहें धन धान्य से, सुरभित सुंदर गेह।।

मातु पिता गुरु कल्पतरु, पूर्ण करें हर काम।
राह गिरे सुत शिष्य की, लेत कलाई थाम।।

प्रमोद दीक्षित मलय

(शिक्षक, बाँदा, उ.प्र.)

गुरु पद पंकज से करें, मलय विमल उर

भरे रहें धन धान्य से, सुरभित सुंदर गेह॥

मातु पिता गुरु कल्पतरु, पूर्ण करें हर काम।

राह गिरे सुत शिष्य की, लेत कलाई थाम॥

5.13 बहे मधुरता नेह रस

केवल खेलें रंग से, रहें भंग से दूर।

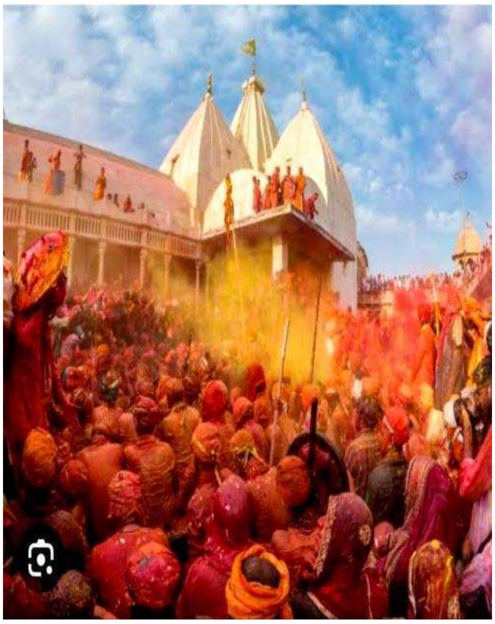
खायें गुझिया प्रेम से, खुशी मिले भरपूर॥

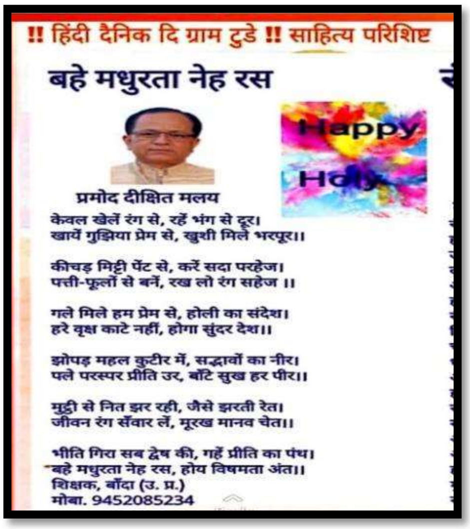
कीचड़ मिट्टी पेंट से करें सदा परहेज।

पत्ती-फूलों से बनें, रख लो रंग सहेज ॥

गले मिले हम प्रेम से होली का संदेश |

हरे वृक्ष काटे नहीं, होगा सुंदर देश ||





!! हिंदी दैनिक दि ग्राम टुडे !! साहित्य परिशिष्ट

बहे मधुरता नेह रस

प्रमोद दीक्षित मलय

केवल खेलें रंग से, रहें भंग से दूर।
खायें गुझिया प्रेम से, खुशी मिले भरपूर।।

कीचड़ मिट्टी पेंट से, करें सदा परहेज।
पत्ती-फूलों से बनें, रख लो रंग सहेज ।।

गले मिले हम प्रेम से, होली का संदेश।
हरे वृक्ष काटे नहीं, होगा सुंदर देश।।

झोपड़ महल कुटीर में, सद्भावों का नीर।
पले परस्पर प्रीति उर, बाँटे सुख हर पीर।।

मुट्ठी से नित झर रही, जैसे झरती रेत।
जीवन रंग सँवार लें, मूरख मानव चेत।।

भीति गिरा सब द्वेष की, गहें प्रीति का पंथ।
बहे मधुरता नेह रस, होय विषमता अंत।।

शिक्षक, बाँदा (उ. प्र.)
मोबा. 9452085234

झोपड़ महल कुटीर में, सद्भावों का नीर |

पले परस्पर प्रीति उर, बाँटे सुख हर पीर॥

मुट्ठी से नित झर रही, जैसे झरती रेत |

जीवन रंग संवार लें, मूरख मानव चेत॥

-

भीति गिरा सब द्वेष की, गहें प्रीति का पंथ |

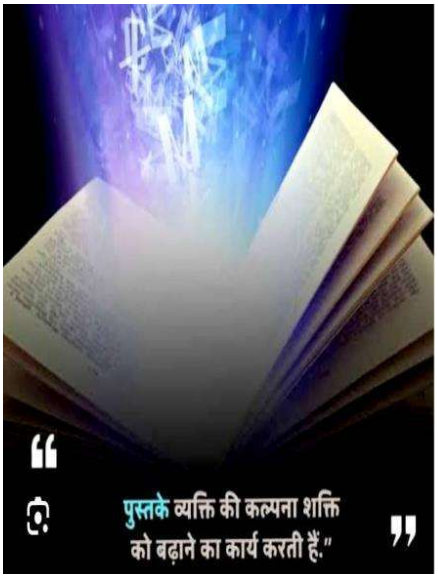
"बहे मधुरता नेह रस, होय विषमता अंत ॥

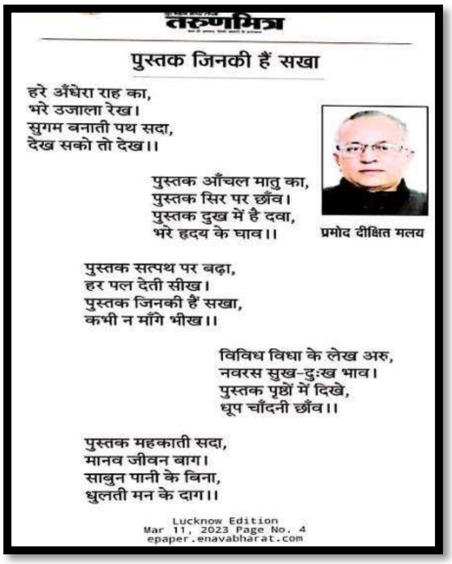
5.14 पुस्तक जिनकी हैं सखा

हरे अँधेरा राह का, भरे उजाला रेख |
सुगम बनाती पथ सदा, देख सको तो देख॥

पुस्तक आँचल मातु का, पुस्तक सिर पर छाँव ।
पुस्तक दुख में है दवा, भरे हृदय के घाव ॥

पुस्तक सत्पथ पर बढ़ा, हर पल देती सीख ।
पुस्तक जिनकी हैं सखा, कभी न माँगे भीख ||





तरुणमित्र

पुस्तक जिनकी हैं सखा

हरे अँधेरा राह का,
भरे उजाला रेख।
सुगम बनाती पथ सदा,
देख सको तो देख।।

पुस्तक आँचल मातु का,
पुस्तक सिर पर छाँव।
पुस्तक दुख में है दवा,
भरे हृदय के घाव।।

प्रमोद दीक्षित मलय

पुस्तक सत्पथ पर बढ़ा,
हर पल देती सीख।
पुस्तक जिनकी हैं सखा,
कभी न माँगे भीख।।

विविध विधा के लेख अरु,
नवरस सुख-दुःख भाव।
पुस्तक पृष्ठों में दिखे,
धूप चाँदनी छाँव।।

पुस्तक महकाती सदा,
मानव जीवन बाग।
साबुन पानी के बिना,
धुलती मन के दाग।।

Lucknow Edition
Mar 11, 2023 Page No. 4
epaper.enavabharat.com

विविध विधा के लेख अरु, नवरस सुख-दुःख भाव ।
पुस्तक पृष्ठों में दिखे, धूप चाँदनी छाँव ॥

पुस्तक महकाती सदा, मानव जीवन बाग |
साबुन पानी के बिना, धुलती मन के दाग ॥

5.15 राजनीति की शरण में

राजनीति अपराध का, चोली दामन साथ।
गंगा मैली कर रहे, कितने कलुषित हाथ ।।

राजनीति की शरण में, निर्भय है अपराध ।
अपराधी हैं घूमते, छल मंसूबे साध ।।

अपराधों ने कस गही, राजनीति की डोर |
कैसे आये देश में, लोकतंत्र की भोर ।।



अपराधी की जीत में, सदा हारता सत्य ।
कुर्सी की चाहत बड़ी, करता कुत्सित कृत्य ।

अपराधी को जब मिले, राजनीति का हस्त ।
लोक पंगु हो जूझता, बेदम पीड़ित पस्त ।।

उगे नहीं सद्भाव के, पंकज पौधे पात।
राजनीति है कर रही, समरसता पर घात ।।



राजनीति की शरण में

राजनीति अपराध का, चोली दामन साथ।
गंगा मैली कर रहे, कितने कलुषित हाथ।।

राजनीति की शरण में, निर्भय है अपराध।
अपराधी हैं घूमते, छल मंसूबे साध।।

अपराधों ने कस गही, राजनीति की डोर।
कैसे आये देश में, लोकतंत्र की भोर।।

अपराधी की जीत में, सदा हारता सत्य।
कुर्सी की चाहत बड़ी, करता कुत्सित कृत्य।

अपराधी को जब मिले, राजनीति का हस्त।
लोक पंगु हो जूझता, बेदम पीड़ित पस्त।।

उगे नहीं सद्भाव के, पंकज पौधे पात।
राजनीति है कर रही, समरसता पर घात।।

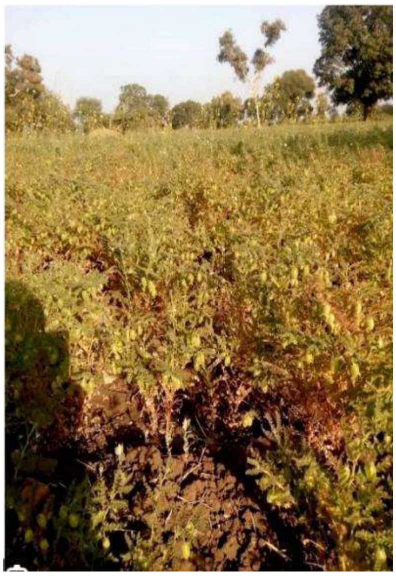
प्रमोद दीक्षित मलय
शिक्षक, बाँदा (उ.प्र.)
कोलफील्ड मिरर

5.16 होला महके खेत में

होला महके खेत में, सोंधी लगे मिठास।
छाछ दही सह पीजिए, गन्ने का रस खास ।।

होला भुनता मेंड़ पर, महक उठे आकाश।
मिर्चा बुकनू रायता, रखो हमेशा पास।।

गेहूँ बाली भूँज कर, खाओ गुड के साथ।
क्षुधा शांत कर तृप्ति दे, प्रमुदित दीनानाथ ।।





होला महके खेत में

होला महके खेत में, सोंधी लगे मिठास।
छाछ दही सह पीजिए, गन्ने का रस खास।।

होला भुनता मेंड़ पर, महक उठे आकाश।
मिर्चा बुकनू रायता, रखो हमेशा पास।।

गेहूँ बाली भूँज कर, खाओ गुड के साथ।
क्षुधा शांत कर तृप्ति दे, प्रमुदित दीनानाथ।।

चना भूँज कर खाइए, ताल खेत नद तीर।।
होला हर्षित है करे, झोंपड़ महल कुटीर।

हरे चना को पीस कर, बने कचौड़ी चाट।
'मलय' निमोना स्वाद प्रिय, रहे अँगुलियाँ चाट।।

प्रमोद दीक्षित मलय
शिक्षक, बाँदा (उ.प्र.)
कोलफील्ड मिरर

चना भूँज कर खाइए, ताल खेत नद तीर।
होला हर्षित है करे, झोंपड़ महल कुटीर ।।

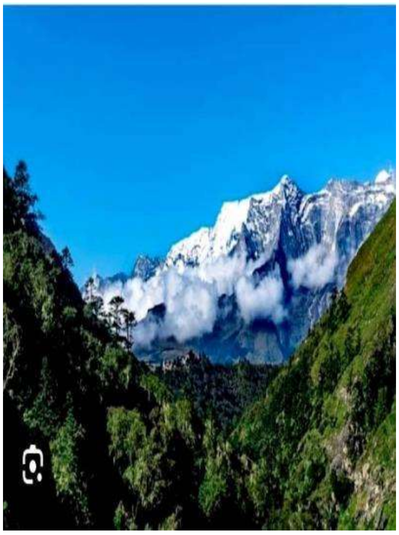
हरे चना को पीस कर, बने कचौड़ी चाट।
'मलय निमोना स्वाद प्रिय, रहे अँगुलियाँ चाट ।।

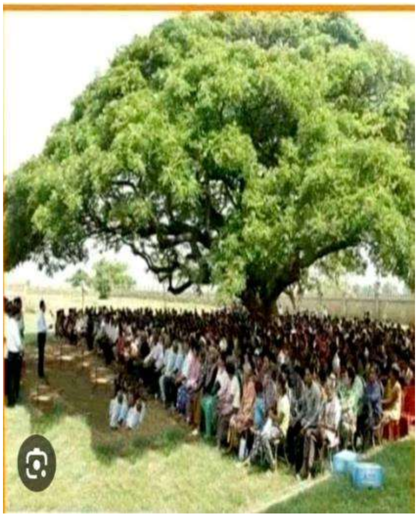
5.17 मलय पवन सुख बाँटता

हृदय विमल रसधार में, घुलते रंग अनेक।
जिनके उर कालिख जमी, चढ़े रंग नहि एक।

जो जन परहित में लगे, तन-मन रहे पवित्र।
फैले जग में यश सदा, ज्यों गुलाब का इत्र॥

वृक्ष खिलायें फूल फल, नदी पिलाती नीर।
मलय पवन सुख बाँटता, हरता सबकी पीर॥





छाँव सदा सुखकर लगे, मिले छाँव में चैन।
छाँव बिना तड़पत रहे, तप्त हृदय बेचैन॥

पौधे परम दयालु हैं, सदा करें उपकार।
बिठा छाँव सुख शांति में, करते नित सत्कार॥

5.18 बच्चे श्वेत कपास

कपट नहीं है हृदय में, नहीं किसी से बैर।
बच्चे समता साधते, क्या अपने क्या गैर ॥

गिरि कानन में ज्यों खिले, मोहक मृदुल पलाश।
जग उपवन में हैं उगे, बच्चे श्वेत कपास ॥

बच्चे कलरव जब करें, उपजे जग संगीत।
अम्बर से नित ज्यों झरे, बारिश बूँदें गीत।।





पल-पल में हैं रूठते, पल में करते मेल।
बच्चे गागर मधु भरी, देते प्रेम उड़ेल ॥

बच्चे शीतल चाँदनी, बच्चे कच्ची धूप।
बच्चे नेह गुलाब जल, बच्चे मोहक रूप ॥

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

6.2 शैक्षिक निहितार्थ

6.3 अध्ययन के सुझाव

6.4 भावी शोध हेतु सुझाव

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा अपने लघु शोध प्रबन्ध प्रमोद दीक्षित ‘मलय’जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान विषयक सघन। एवं सम्यक शोधोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत हैं —

- ❖ मलय जी का व्यक्तित्व बहुआयामी है, उनकी जितनी पहुँच साहित्यिक रचनाकारों में है उतना ही शैक्षिक क्षेत्र में हस्तक्षेप रखते हैं।
- ❖ मलय जी साहित्य रचना केवल आप सन्तुष्टि के लिए नहीं, अपितु समाज जीवन के हाशिएँ पर अवस्थित आमजन के स्वर को महत्वपूर्ण मानते हुए उनकी पैरवी करते दिखाई देते हैं।
- ❖ मलय जी की दृष्टि में शक्ति कविता नहीं है जिसमें आमजन की पक्षधर हो और उनके जीवन के नैन्दिन संघर्ष एवं उपलब्धियों को स्थान दिया गया।
- ❖ मलय जी एक साहित्यकार के रूप में साहित्य की विभिन्न विधाओं में सतत लेखन कर साहित्य भण्डार में वृद्धि कर रहे हैं।
- ❖ मलय जी न केवल गीत, दोहा, कुंडलिया, घनाक्षरी आदि छन्दों में मन के भाव व्यक्त कर रहे हैं बल्कि छन्दयुक्त कविता में भी महत्वपूर्ण दखल रखते हैं।
- ❖ इसके अलावा बाल कहानी संस्मरण लेख जीवनी यात्रा वृतांत जैसे विधाओं में भी रुचि पूर्ण लेखन किया है।
- ❖ अगर सफलता की सर्वश्रेष्ठ ऊंचाइयों पर पहुंचना है तो व्यक्ति को अपना लक्ष्य निर्धारित कर पूर्ण मेहनत लगन से कार्य करते रहना चाहिए लगन फिल्म को एक न एक दिन सफलता जरूर मिलती है।
- ❖ महापुरुषों का जीवन जन सामान्य के लिए अनुकरणीय बन जाता है महापुरुषों का जीवन वह उनका व्यक्तित्व तथा उनके सभी कृत्य असामान्य होते हैं जो कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों का सामना करके ऊंचे उठते हैं वह श्रद्धास्पद बन जाते हैं। ऐसे ही महापुरुष समुचित मार्गदर्शन कर सकते हैं उन्हीं महापुरुषों में से एक हैं प्रमोद दीक्षित मलय जी जिन्होंने अपना संपूर्ण व्यक्तित्व एक स्वस्थ शिक्षित और सांस्कृतिक समाज के सर्जन हेतु समर्पित कर दिया है।
- ❖ प्रमोद दीक्षित मलाई जी ने अपने जीवन में यह अनुरोध किया है कि हम पश्चात के अंधानुकरण में अपनी सांस्कृतिक विरासत को बुलाते जा रहे हैं जो कालांतर में हमें गरिमा रहित कर देगी वह ऐसे भारत की संकल्पना करते हैं कि जहां शिक्षा एवं संस्कृति द्वारा ऐसे समाज का निर्माण किया जाए जो भारत की अन्य संस्कृति एवं आध्यात्मिक शक्ति को ज्ञान विज्ञान की नवीन तम खोजों से संतुष्ट कर भारत को पुनः विश्व गुरु का दर्जा दिला सके प्रमोद दीक्षित मलाई जी इसी संकल्पना को पूरा करने में प्रयासरत हैं।
- ❖ प्रमोद दीक्षित मलाई जी का मानना है कि गुरुकुल में शिक्षकों आचार्यों का कर्तव्य है कि बच्चे को ऐसी प्रेरणा सुसंस्कार सद्प्रशिक्षण एवं सीख दे ताकि वह समाज एवं स्वयं के लिए तथा राष्ट्र एवं विश्व के लिए सुंदर गुलशन का निर्माण कर सकें।

- ❖ शिक्षकों को चाहिए कि वे बिना भेदभाव के अपने शिष्यों को उन्नति प्रगति उसके अंतः में छिपे दोस्त दुर्गुणों का विरेचन कर और गुणों का समावेश करें।
- ❖ विद्यार्थी को अपने कर्म के बल पर जीवन का निर्माण करना चाहिए विद्यार्थी को विनम्र अनुशासित नियम वक्त और सक्रिय रहना चाहिए।
- ❖ शिक्षा में व्यक्ति को महत्वपूर्ण इकाई माना है क्योंकि अगर व्यक्ति शिक्षित चरित्र और गुण वाला होगा तो समाज भी शिक्षित होगा।
- ❖ समन्वय शिक्षा अर्थात प्राचीन भारतीय संस्कृति और आधुनिकता के साथ विद्यार्थियों को शिक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं।
- ❖ समाज के अनाथ बेसहारा बच्चों को जिनका कोई नहीं है उनको निशुल्क शिक्षा देकर मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जा रहा है।
- ❖ विद्यालयों में सर्वांगीण विकास परक शिक्षा का संचालन किया है तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुसार शिक्षा दी है।
- ❖ विद्यार्थियों को चरित्रवान होना अति आवश्यक है तथा इस बात पर बल दिया कि पुस्तकीय शिक्षा उपयोगी है लेकिन विद्यार्थियों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें चरित्र का निर्माण हो मानसिक शक्ति में वृद्धि हो बुद्धि का विस्तार हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो।

6.2 शैक्षिक निहितार्थ

शोधकर्ता द्वारा अपने लघु शोध प्रबन्ध प्रमोद दीक्षित 'मलय' जी के शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान का सम्यक प्रकार

अध्ययन कर शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित निकल कर सामने आए—

- 'मलय' जी के शैक्षिक योगदान को विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके शैक्षिक लेखों से समझा जा सकता है।
- 'मलय' जी शिक्षा को नौकरी प्राप्ति का साधन नहीं, अपितु व्यक्ति संस्कार का एक माध्यम मानते हैं।
- 'मलय' जी की दृष्टि में शिक्षा बच्चों में निहित परिवेशीय समझ और स्वनिर्मित ज्ञान को प्रकाशित करने की एक प्रक्रिया है।
- वह विद्यालय को जड़ता से मुक्त कर आनन्द घर के रूप में बदलने के प्रबल पक्षधर हैं।
- वह शिक्षा को सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता अखंडता का सबल सूत्र मानते हैं।
- एक शिक्षक केवल पाठ्यपुस्तक नहीं पढ़ाता,अपितु वह बच्चों को पढ़ता है। अर्थात बच्चों के मन को पढ़कर विषयवस्तु की प्रस्तुती करता है।
- विद्यालय बच्चों के लिए उनकी कल्पना की अभिव्यक्ति की अपनी स्वतंत्र जगह के रूप में विकसित हो। जहां वे अपने कल्पनाओं को साकार कर सकें।
- वह विद्यालय को ज्ञान निर्माण का महत्वपूर्ण स्थान मानते हैं, न कि सूचनाओं के सम्प्रेषण की जगह।
- 'मलय' जी की दृष्टि में विद्यालय एक सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्थान हैं इसलिए समुदाय और विद्यालय को एक धरातल पर बैठकर विचार करना आवश्यक है।

- वह शैक्षिक भ्रमण को बच्चों के सम्यक विकास का एक महत्वपूर्ण कारक मानते हैं इससे बच्चे न केवल अपने परिवेश, समाज, संस्कृति और प्रकृति को निकट से देख तथा समझ पाते हैं साथ ही उनके प्रति आत्मीयता का भाव विकसित होता है।
- वह शिक्षा के द्वारा सामाजिक न्याय, विश्वास, भाईचारा की स्थापना करते हुए मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों के साथ जीवन निर्वाह की पैरवी करते दिखाई देते हैं।
- वह शिक्षा को कौशल विकास की कड़ी के रूप में देखते हैं जहाँ पारम्परिक कार्यो यथा मिट्टी के बर्तन बनाना, जूट से बोरे चटाई बनाना, बाँस से डलिया बनाने के साथ ही वर्तमान माँग के अनुसार उनको यथा आवश्यक बेहतर करते हुए बच्चों को प्रशिक्षित करना।
- शिक्षा के द्वारा पर्यावरण संरक्षण, जल प्रबन्धन एवं लैंगिक भेदभाव के विरुद्ध एक साझीय समझ विकसित करना।
- आत्मीयता के साथ-साथ अपने प्राचीन संस्कृति, कला, उत्सव आदि को समझने एवं संरक्षण करते हुए व्यवहार में लाना। इसके लिए वह विद्यालयों में ऐसे आयोजनों को करने के पक्षधर हैं।
- शिक्षकों को अपने सांस्कृतिक, अध्यात्मिक एवं आधुनिक शिक्षण पद्धति के ज्ञान को पुस्तकों, पत्र- पत्रिकाओं, वेद, पुराणों, इंटरनेट आदि से नवीन करते रहना चाहिए।

6.3 अध्ययन के सुझाव

प्रस्तुत लघु शोध में प्रमोद दीक्षित मलय के शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन के पश्चात पाया, कि किसी भी शोध कार्य का यह लक्ष्य होना चाहिए, कि उसके द्वारा अपेक्षित सुधार हो।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं–

- विद्यालयों में शिक्षकों को विषय के ज्ञान के साथ-साथ प्राचीन भारतीय संस्कृति का भी ज्ञान होना चाहिए।
- शिक्षकों को अपने सांस्कृतिक, अध्यात्मिक एवं आधुनिक शिक्षण पद्धति के ज्ञान को पुस्तकों पत्र-पत्रिकाओं, वेद, पुराणों, इंटरनेट आदि से नवीन करते रहना चाहिए।
- शिक्षकों को समय-समय पर अंशकालीन या अल्पकालीन प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक एवं अध्यात्मिक प्रोजेक्ट वर्क में भाग लेना चाहिए।
- सप्ताह में कम से कम दो बार भारतीय संस्कृति एवं अध्यात्म से जुड़े विषयों पर विचार विमर्श करना चाहिए।
- विद्यालयों में बच्चों को भारतीय संस्कृति और नैतिकता से जुड़े प्रोजेक्ट कार्य देने चाहिए जिससे बच्चे अपनी संस्कृति के बारे में समझ सकेंगे।
- विद्यालयों को वर्तमान शैक्षिक वातावरण में पाश्चात्य अंधानुकरण को देखते हुए भारतीय संस्कृति और अध्यात्म के महत्व को समझाना चाहिए तथा आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ इसके प्रति जागरूकता बढ़ानी चाहिए।
- अंत में हम कह सकते हैं कि समाज के सभी वर्गों के लिए शिक्षा की उचित व्यवस्था होनी चाहिए एवं शिक्षा को संस्कृति से जुड़ा होना चाहिए धार्मिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा ही ज्ञान का आदि स्रोत है और ज्ञान ही शक्ति और समृद्धि का मूल आधार है। जिस देश में सांस्कृतिक शिक्षा का अभाव है उस देश का शासन पंगु होता है और उसका अस्तित्व हमेशा खतरे में रहता है।

6.4 शैक्षिक उपादेयता

किसी भी शैक्षिक शोध में उपादेयता अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत लघु शोध प्रमोद दीक्षित 'मलय' जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान है, जिसके अन्तर्गत लेखक 'मलय' जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया गया जिससे शिक्षक, विद्यार्थी एवं जनसामान्य को इनसे प्रेरणा प्राप्त कर अपनी रूचि के अनुसार जीवन में ऐसे पर्याप्त श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए, जिससे यह जगत हमें भी सदा याद रखें।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में लेखक प्रमोद दीक्षित 'मलय' जी की प्रकाशित रचनाओं का अध्ययन किया गया है। दिनेश शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है, जो हम सभी के साथ अनुस्यूत हैं। इनकी पुस्तकों का अध्ययन कर शिक्षक, विद्यार्थी एवं जन सामान्य भारतीय संस्कृति के महत्व को समझ सकेंगे तथा उनसे प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकेंगे।

6.5 भावी शोध हेतु सुझाव

शोधकर्ता द्वारा पूर्ण किए गए लघु शोध-प्रबन्ध प्रमोद दीक्षित 'मलय' जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान मैं कवि प्रमोद दीक्षित जी की प्रकाशित रचनाओं का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के दौरान कुछ नवीन अनुभवों तथा विचारों की अनुभूति की गई, जिन्हें शोधकर्ता आगामी शोध हेतु सुझाव के रूप में भविष्य के शोधार्थियों की सहायता हेतु प्रस्तुत करता है यह आगामी शोध हेतु सुझाव निम्नलिखित हैं–

- ❖ भावी शोध में मलय जी की कविताओं में निहित मूल्यों का अध्ययन किया जा सकता है।
- ❖ भावी शोध में बुन्देलखण्ड के अन्य कवियों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- ❖ भावी शोध में कवि मलय जी के साथ अन्य कवियों की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- ❖ प्रस्तुत अध्ययन हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि मलय जी की शिक्षा तथा साहित्य के क्षेत्र में योगदान पर आधारित है, भावी शोध में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषा के कवियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट

(अ) हिन्दी के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

(ब) समाचार पत्रों में प्रमोद दीक्षित मलय

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सिंह, सरिता (2013)। *माध्यमिक स्तर पर अन्तर्मुखी-बहिर्मुखी छात्र-छात्राओं की दुश्चिन्ता स्तर व नैतिक मूल्यों का अध्ययन* पी- एच.डी. शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी| http://hdl.handle.net/10603/225815

पाण्डेय, राजीव (2011)| *वर्तमान प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में सहज-मार्ग द्वारा प्रतिपादित मूल्य-आधारित आध्यात्मिक शिक्षा का योगदान।* पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध, डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद| http://hdl.handle.net/10603/241493

सिंह, मनोज कुमार (2010)| *प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में गिज्जुभाई एवं आचार्य राममूर्ति के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन*| पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर| http://hdl.handle.net/10603/178597

पाण्डेय, कल्पना (2005)| *जिद्दू कृष्णमूर्ति के दार्शनिक चिन्तन के शैक्षिक निहितार्थ का आलोचनात्मक अध्ययन।* पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। http://hdl.handle.net/10603/11941

सिंह, अखिलेश (2002)| *उ०प्र० के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कतिपय व्यक्तित्व चरों (बुद्धि तथा चिन्ता) का उनके कक्षा-शिक्षण व्यवहार से सम्बन्ध।* पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर। http://hdl.handle.net/10603/179107

सिंह, राजेश (2008)| *बौद्ध दर्शन में शिक्षा की स्थिति, विस्तार एवं वर्तमान में प्रासंगिता।* पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। http://hdl.handle.net/10603/10747

चारण, प्रेम कंवर (2012-15)| *राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति, कार्य संतोष एवं मनोबल का अध्ययन।* शिक्षा वाचस्पति (शिक्षा), श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुन्झुनू। http://hdl.handle.net/10603/54563 b

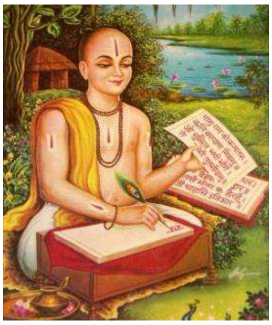
सिद्धिकी, सफीक अहमद (2002)। *सर सैय्यद अहमद खाँ का भारतीय शिक्षा के विकास में योगदान।* पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध,छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर| http://hdl.handle.net/10603/260371

अरुणा, *शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन तथा प्रशिक्षण के दौरान अभिप्रेरणा का प्रभाव।* शिक्षा वाचस्पति (शिक्षा), श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुन्झुनू। http://hdl.handle.net/10603/54199

परिशिष्ट—अ

हिन्दी के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

दलपति विजय— खुमानरासो



नरपति नाल्ह— वीसलदेव रासो

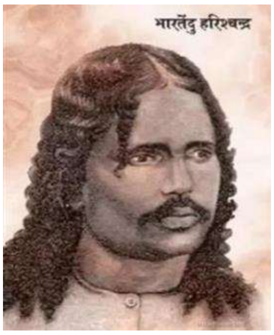
जगनिक— परमालरासो

सारंगधर— हम्मीर रासो

चंदबरदाई— पृथ्वीराज रासो

तुलसीदास— रामचरितमानस, विनय पत्रिका, कवितावली, दोहावली, जानकी मंगल

कबीरदास— रमैनी, सबद, साखी



सूरदास— सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर सारावली

जायसी— पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम

बिहारी— बिहारी सतसई

पद्माकर— पद्मभारण, हितोपदेश, राम रसायन, जगत विनोद

मतिराम— ललितललाम, चंद्रसार, रसराज साहित्यकार

चिंतामणि— कविकुल, कल्पतरु, काव्य विवेक

भूषण— शिवावावनी, शिवराजभूषण छत्रशाल दशक

केशवदास— रामचंद्रिका, कविप्रिया रसिकप्रिया, विज्ञानगीता

रहीम— रहीम सतसई, रहीम रत्नावली, श्रृंगार सतसई, रास पंचाध्यायी, बरवे नायिका

मीराबाई— रागगोविन्द, गीतगोविन्द , नरसीजी का मेहरा, राग सोरठ के पद

घनानंद— सुजान सागर, प्रेम पत्रिका, प्रेम सरोवर, वियोग बोलि, इश्कता

भारतेन्दु हरिश्चंद— प्रेमफुलवारी, प्रेम प्रलाप, श्रृंगार लहरी

रामनरेश त्रिपाठी— पथिक, मिलन, स्वपन , मानसी, ग्राम्य गीत

श्रीधर पाठक— कश्मीर सुषमा, भारत गीत, हेमंत, मनोविनोद, स्वर्गीय, वीणा

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध जी— प्रियप्रवास, वैदेही वनवास, चोखे चौपदे रस कलश

मैथिलीशरण गुप्त— साकेत, यशोधरा भारत भारती, सिद्धराज, द्वापर, पंचवटी

जयशंकर प्रसाद— कामायनी, झरना , आँसू, लहर, कामना, कल्याणी , स्कंदगुप्त, विशाख

सुमित्रानंदन पन्त— कला और बूढा चाँद, पल्लव, गुंजन, लोकायतन, चिदंबरा, उत्तरा

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला— परिमल तुलसीदास, अनामिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला

महादेवी वर्मा— निहार, रश्मि, नीरजा दीपशिखा, यामा, पथ से साथी

सुभद्राकुमारी चौहान— मुकुल, त्रिधारा , विखरे मोती, सीधे सादे चित्र, मिलन स्वपन

रामधारी सिंह दिनकर– कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, रेणुका, बापू, रसवंती

माखनलाल चतुर्वेदी— हिमकिरीटिनी, माता, युगचरण, समर्पण, हिमतरंगिनी

भवानीप्रसाद मिश्र— गीत परोश, खुशबु के शिलालेख

अज्ञेय— आगन के पार द्वार, हरी घास पर क्षण भर बावरा अहेरी, त्रिशंकु, अरे , यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली , चिंता, पूर्वा

हरिवंश राय बच्चन— मधुशाला, मधुबाला, निशा निमंत्रण, क्या भूलूँ क्या याद करूँ , मधु कलश, बुद्ध का नाचघर, बंगाल का काल

रामकुमार वर्मा— संकेत, एकलव्य उत्तरायण, निशीथ, आकाश गंगा, चित्तौड़ की चिता

धर्मवीर भारती— अँधा युग, कनुप्रिया गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना— काठ की घंटियां बांस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएं, कुआनो नदी, जंगल का दर्द, खूंटियों पर टंगे लोग, क्या कह कर पुकारूं, पागल कुत्तों का मसीहा (लघु उपन्यास), सोया हुआ जल (लघु उपन्यास)

केदारनाथ सिंह— अभी बिल्कुल अभी जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, बाघ, अकाल में सारस, उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ, तालस्ताय और साइकिल, सृष्टि पर पहरा

कुँवर नारायण— चक्रव्यूह, अपने सामने कोई दूसरा नहीं, आत्मजयी, इन दिनों

उदय प्रकाश— सुनो कारीगर, अबूतर कबूतर, रात में हारमोनियम, एक भाषा हुआ करती है, कवि ने कहा, दरियायी घोड़ा, तिरिछ, दत्तात्रेय के दुख, पॉलगोमरा का स्कूटर, अरेबा परेबा

परिशिष्ट—ब

समाचार-पत्रों में प्रमोद दीक्षित 'मलय'























प्रमोद दीक्षित 'मलय' जी के शैक्षिक एवं साहित्यिक विचारों का अध्ययन



कोई बाहरी कारक आपको कभी प्रेरित नहीं कर सकता। प्रेरणा सदैव भीतर से आती है और यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप जिस क्षेत्र में काम करते हैं, उसके साथ आपका तालमेल कैसा है।

ISBN 978-93-341-3008-9
9 789334 130089